@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
सोमवार, 13 अक्टूबर 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 334 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

खेती पर चर्चा : पीएम मोदी ने किसानों से की खास बातचीत

दिए कई अहम सुझाव

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में आयोजित विशेष कृषि कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों से आए किसानों से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की और उनसे बातचीत की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाएं भी उपस्थित थीं, जिन्होंने कृषि से जुड़ी अपनी उपलब्धियां और अनुभव साझा किए। पीएम मोदी ने किसानों से कृषि उत्पादन, नई तकनीकों और फसल विविधता के महत्व के बारे में चर्चा की। उन्होंने किसानों को खेती के आधुनिक तरीकों को अपनाने और उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रधानमंत्री ने किसानों को आय बढ़ाने और अपनी कृषि गतिविधियों को अधिक लाभकारी बनाने के कई सुझाव दिए। उन्होंने

फसलों की गुणवत्ता सुधारने, उचित बीज और तकनीक के उपयोग से बेहतर पैदावार प्राप्त करने पर जोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने मत्स्य उद्योग और अन्य कृषि-आधारित उद्योगों में भी किसानों को निवेश और नवाचार करने की सलाह दी, ताकि उनकी आय में सुधार हो और वे आत्मनिर्भर बन सकें। किसानों ने इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी का धन्यवाद किया और केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की सराहना की, जिनसे उन्हें कृषि कार्यों में प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुआ। पीएम मोदी ने किसानों को खेती में गुणवत्ता, उत्पादन और नवाचार पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि किसानों को निर्यातोन्मुखी फसलें उगानी चाहिए, जिससे वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़े और भारत के कृषि निर्यात को बढ़ावा मिले। उन्होंने प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का उदाहरण देते हुए कहा कि ये योजनाएं किसानों को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी आय बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

प्रधानमंत्री ने खेतों की मिट्टी की गुणवत्ता और फसल उत्पादन के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने किसानों से कहा कि सतत खेती और आधुनिक कृषि तकनीकों का पालन करने से न केवल उत्पादन बढ़ेगा।

फिटनेस और खेल दिल्लीवालों की जीवनशैली का हिस्सा बन गए हैं: मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता

कौमी पत्रिका
नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 12 अक्टूबर। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कल सुबह वेदांता हाफ मैराथन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और कहा कि फिटनेस और खेल अब दिल्लीवासियों की जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। मुख्यमंत्री ने इस मैराथन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी पर खुशी जाहिर करते हुए इसे समाज में बढ़ती जागरूकता और समान अवसरों की दिशा में एक सकारात्मक संकेत बताया। मुख्यमंत्री ने मंच से सभी प्रतिभागियों का अभिवादन किया और हाथ हिलाकर उनका उत्साहवर्धन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली के लिए कल की सुबह अत्यंत ऊर्जा और उत्साह से भरी रही। इस हाफ मैराथन में युवाओं और विशेषकर महिलाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी देखकर गर्व की अनुभूति होती है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि फिटनेस और खेल अब दिल्लीवासियों की जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। मुख्यमंत्री ने कहा

कि इस वर्ष महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो समाज में बढ़ती जागरूकता और समान अवसरों की दिशा में एक सकारात्मक संकेत है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से युवाओं में दृढ़ निश्चय, अनुशासन, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता जैसी गुणों का विकास होता है। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फिटनेस मूवमेंट की सराहना करते हुए कहा कि यह अभियान देशभर में फिटनेस और स्वास्थ्य के प्रति जनजागरूकता को नई दिशा प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार भी 'स्वस्थ दिल्ली, सशक्त दिल्ली' के संकल्प के साथ राजधानी के प्रत्येक नागरिक को स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मविश्वास से परिपूर्ण जीवन देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। यह आयोजन राजधानी दिल्ली में फिटनेस, अनुशासन और सामूहिक ऊर्जा का सशक्त प्रतीक रहा। दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री आशीष सूद सहित अनेक वरिष्ठ अधिकारी, खिलाड़ी और गणमान्यजन भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम के समापन पर मुख्यमंत्री ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को मेडल पहनाकर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

चिदंबरम के बयान पर भाजपा ने कांग्रेस को घेरा, कहा- ऑपरेशन ब्लू स्टार राजनीतिक दुस्साहस था

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम द्वारा ऑपरेशन ब्लू स्टार को 'गलत तरीका' बताने के बाद राजनीतिक माहौल गर्म हो गया। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने कांग्रेस और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी पर तीखा हमला करते हुए इस सैन्य कार्रवाई को 'राजनीतिक दुस्साहस' करार दिया है। चिदंबरम ने यह टिप्पणी हिमाचल प्रदेश के कसौली में आयोजित खुशवंत सिंह लिटरेरी फेस्टिवल 2025 के दौरान की। वे पत्रकार हरिंदर बावेजा की किताब 'दे विल शूट यू, मैडम' पर एक चर्चा का संचालन कर रहे थे। इसी चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि ऑपरेशन ब्लू स्टार एक गलत तरीका था और इंदिरा गांधी ने इस गलती की कीमत अपनी जान देकर चुकाई। चिदंबरम ने यह भी कहा कि यह निर्णय अकेले इंदिरा गांधी का नहीं था, बल्कि सेना, पुलिस, खुफिया एजेंसियों और प्रशासन का सामूहिक फैसला था। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी को पूरी तरह दोष देना सही नहीं है। चिदंबरम के इस बयान पर भाजपा ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता आरपी सिंह ने कहा कि ऑपरेशन ब्लू स्टार पूरी तरह से टाला जा सकता था और इंदिरा गांधी ने इसे 1984 के आम चुनावों में राजनीतिक लाभ के लिए किया। उन्होंने कहा कि यह कोई राष्ट्रीय आवश्यकता नहीं थी, बल्कि एक राजनीतिक दुस्साहस था। इंदिरा

गांधी ने सिख समुदाय को देश विरोधी दिखाने की कोशिश की और खुद ही उस जाल में फंस गईं। आरपी सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'मैं एक राष्ट्रवादी के तौर पर मानता हूं कि ऑपरेशन ब्लू स्टार को टाला जा सकता था। जैसा कि चिदंबरम ने कहा, ऑपरेशन ब्लैक थंडर की तरह रणनीतिक तरीका अपनाया जा सकता था, जिसमें स्वर्ण मंदिर की बिजली और पानी काटकर आतंकियों को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर किया गया था। इससे न तो दरबार साहिब और अकाल तख्त की पवित्रता भंग होती और न ही निर्दोष श्रद्धालुओं की जान जाती। आरपी सिंह ने आगे कहा कि इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक लाभ के लिए टकराव का रास्ता चुना और इसकी कीमत जान देकर चुकाई। लेकिन असली त्रासदी सिख समुदाय ने झेली। दिल्ली में 3,000 से अधिक सिखों का नरसंहार हुआ और पंजाब में 30,000 से ज्यादा लोग मारे गए। यह एक सोची-समझी राजनीतिक साजिश थी, जिसने देश की सामाजिक एकता को तोड़ दिया। दिल्ली के पूर्व मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने भी चिदंबरम के बयान पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा, यह कहना कि इंदिरा गांधी जिम्मेदार नहीं थीं, बिल्कुल गलत है। बतौर प्रधानमंत्री यह उनका पूर्णतः जागरूक निर्णय था। उन्होंने सिखों के प्रति नफरत के चलते यह कदम उठाया, जिसमें हजारों सिख मारे गए। कांग्रेस भले अब इसे गलती मान रही हो, लेकिन सिख समुदाय न कांग्रेस को भूलेगा, न इंदिरा गांधी को।

मंत्री, अधिकारियों और कर्मचारियों के सहकारी बैंकों में खुलेंगे खाते: इन्द्राज सिंह

कौमी पत्रिका
संजय कुमार

नई दिल्ली = 12 अक्टूबर। दिल्ली सरकार के सहकारिता मंत्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह ने कहा कि दिल्ली में सहकारिता आंदोलन को नई ऊर्जा और दिशा दी जाएगी। उन्होंने यह घोषणा की कि सहकारिता विभाग के मंत्री से लेकर सभी अधिकारी एवं कर्मचारी अपने खाते सहकारी बैंकों में खुलवाएँगे, ताकि सहकारी बैंकों के प्रति विश्वास और सहभागिता का मजबूत उदाहरण स्थापित हो सके। उन्होंने अगले महीने सहकारिता सप्ताह से जु? आयोजनों की जानकारी भी दी। रविन्द्र इन्द्राज, रविवार को दिल्ली नागरिक सहकारी बैंक की वार्षिक आम सभा में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने बैंक के अध्यक्ष, निदेशक मंडल और सदस्यों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि सहकारिता केवल आर्थिक ढांचा नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सहभागिता का जीवन मंत्र है। इसके जरिये दिल्ली सरकार माननीय गृह मंत्री अमित शाह और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में अंत्योदय का

लक्ष्य हासिल कर आत्मनिर्भर भारत और विकसित दिल्ली निर्माण का संकल्प पूरा करेगी। सहकारिता मंत्री ने कहा कि पिछले कुछ महीनों में उन्होंने दिल्ली के 12 प्रमुख सहकारी बैंकों के अध्यक्षों एवं निदेशकों के साथ विस्तृत बैठकें की हैं। इन बैठकों में उपभोक्ताओं को मिलने वाली सुविधाओं और आवश्यक सुधार जैसे विषयों पर चर्चा हुई है। उन्होंने कहा कि अब सहकारी बैंकों की नई शाखाएँ दिल्ली के विभिन्न इलाकों में खोली जाएँगी, ताकि आम नागरिकों को स्थानीय स्तर पर बेहतर वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध हों। विशेष रूप से ग्रामीण और पुनर्वास कॉलोनियों में शाखा विस्तार को प्राथमिकता दी जाएगी। रविन्द्र इन्द्राज ने कहा कि 14 से 20 नवम्बर तक सहकारिता सप्ताह मनाया जाएगा।

शेष पृष्ठ 3 पर

भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर बीएसएफ ने 2.82 करोड़ रुपए के सोने के साथ तस्कर को पकड़ा

एजेंसी

कोलकाता। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) ने भारत-बांग्लादेश सीमा पर सोने की तस्करी के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के पास से 2.82 करोड़ रुपए कीमत के 20 सोने के बिस्किट मिले, जिन्हें जब्त कर लिया गया। यह जानकारी बीएसएफ अधिकारियों ने रविवार को दी। बीएसएफ ने एक बयान में कहा, 'पश्चिम बंगाल में भारत-बांग्लादेश अंतरराष्ट्रीय सीमा पर होरंदीपुर सीमा चौकी पर तैनात बीएसएफ की दक्षिण बंगाल फ्रंटियर की 32वीं बटालियन के जवानों ने एक भारतीय तस्कर को गिरफ्तार किया।÷ सटीक और विश्वसनीय खुफिया जानकारी के आधार पर जवानों ने कुल 2332.66 ग्राम वजन के बिस्किट बरामद किए। शनिवार रात होरंदीपुर सीमा चौकी पर तैनात 32वीं बटालियन के जवानों को गोपनीय सूत्रों से विश्वसनीय सूचना मिली कि

भारत-बांग्लादेश सीमा के पास मुस्लिमपारा गांव का एक व्यक्ति बांग्लादेश से लाए गए सोने की तस्करी करने की योजना बना रहा है।

सूचना मिलते ही ड्यूटी पर तैनात अधिकारियों को अतिरिक्त सतर्कता बरतने के लिए कहा गया और तस्कर को रंगेहाथों पकड़ने के लिए संदिग्ध स्थान पर घात लगाकर छापा मारा गया।अधिकारियों ने बताया कि रविवार सुबह करीब 6 बजे पहले से तैयार दल ने एक संदिग्ध व्यक्ति को बांस के घने झुरमुट के पीछे घूमते देखा। इसके बाद उसे घेर कर पकड़ लिया गया। उसकी तलाशी लेने पर एक प्लास्टिक का पैकेट बरामद हुआ, जिसे खोलने पर सोने के 20 बिस्किट मिले। तस्कर को मौके पर ही हिरासत में ले लिया गया और आगे की पूछताछ के लिए होरंदीपुर सीमा चौकी लाया गया। जब्त किए गए सोने के बिस्कुट और गिरफ्तार संदिग्ध को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए संबंधित अधिकारियों को सौंप दिया गया।

बीएसएफ दक्षिण बंगाल फ्रंटियर के जनसंपर्क अधिकारी ने सीमावर्ती क्षेत्रों के निवासियों से अपील की है कि वे सोने की तस्करी से संबंधित कोई भी जानकारी बल के 'सीमा साथी' हेल्पलाइन नंबर 14419 पर संपर्क कर दें या 9903472227 पर व्हाट्सऐप के माध्यम से संदेश या वॉयस नोट भेजें। अधिकारियों ने यह भी बताया कि विश्वसनीय जानकारी देने पर उचित पुरस्कार दिए जाएंगे और सूचना देने वाले की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

'अंतिम सांस तक प्रधानमंत्री मोदी के साथ रहूंगा'

सीट शेयरिंग पर बोले जीतन राम मांझी

एजेंसी

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव में सीट बंटवारे को लेकर अभी भी ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है। पटना में शुरू एनडीए और इंडिया महागठबंधन की बैठकें अब दिल्ली में शिफ्ट हो चुकी हैं, लेकिन अभी तक सीट शेयरिंग को लेकर घोषणा नहीं हो सकी है। इस बीच, सहयोगी दलों की नाराजगी को लेकर चर्चा खूब हुई। एनडीए में हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के प्रमुख और केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी की सीटों को लेकर नाराजगी की बात सामने आई थी। इस बीच मांझी दिल्ली से पटना लौट रहे हैं।

इस दौरान उन्होंने दावा किया कि बिहार में बहार होगी, नीतीश संग मोदी की सरकार होगी। केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर नाराजगी की चर्चा पर विराम लगाते हुए लिखा, 'अभी मैं पटना निकल रहा हूं। वैसे एक बात बता दूं, मैंने पहले भी कहा था और आज फिर से कह रहा हूं, मैं जीतन राम मांझी अपने अंतिम सांस तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ रहूंगा। बिहार में बहार होगी, नीतीश

संग मोदी की सरकार होगी।' केंद्रीय मंत्री के इस पोस्ट के बाद यह साफ हो गया है कि वे एनडीए से नाराज नहीं हैं। बिहार विधानसभा चुनाव का पहला चरण 6 नवंबर को और दूसरा चरण 11 नवंबर को होगा। मतगणना 14 नवंबर को होगी। इस चुनाव में मुख्य मुकाबला भाजपा और जनता दल (यूनाइटेड) (जदयू) के नेतृत्व वाले एनडीए और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के तेजस्वी यादव के नेतृत्व वाले महागठबंधन के बीच माना जा रहा है। महागठबंधन एनडीए का नेतृत्व कर रहे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को सत्ता से बेदखल करने की कोशिश कर रहा है। हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा एनडीए में शामिल है। हालांकि, बिहार की चुनावी जंग में प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने भी राज्य की सभी 243 सीटों पर दावा ठोक दिया है।

अफगानिस्तान शांति चाहता है, पाकिस्तान नहीं माना तो अन्य विकल्प मौजूद : विदेश मंत्री मुत्ताकी

एजेंसी

नई दिल्ली। अफगानिस्तान-पाकिस्तान सीमा पर बढ़ती तनातनी के बीच अफगान विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने कहा है कि अफगानिस्तान शांति चाहता है, लेकिन अपने सीमाई और राष्ट्रीय हित की रक्षा से समझौता नहीं करेगा। क़तर और सऊदी अरब की मध्यस्थता पर अफगान पक्ष ने फिलहाल संघर्ष विराम किया है, परन्तु यदि पाकिस्तान शांति नहीं चाहेगा, तो अफगानिस्तान के पास अन्य विकल्प भी मौजूद हैं।

अफगानिस्तान के विदेश मंत्री मुत्ताकी ने आज दूसरी बार अफगान दूतावास में प्रेस वार्ता की। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विषयों पर पत्रकारों के सवालों का जवाब दिया और पिछली पत्रकार वार्ता में महिला पत्रकारों को नहीं बुलाए जाने के मुद्दे पर सफाई भी दी। इस पत्रकार वार्ता में आज आगे की पंक्तियों में महिला पत्रकार मौजूद रही। अमीर खान मुत्ताकी ने पाकिस्तान के साथ तनाव को लेकर कहा कि वहां के लोग और अधिकांश राजनेता अफगानिस्तान से अच्छे

संबंध चाहते हैं, परंतु कुछ तत्व माहौल बिगाड़ने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2,400 किमी लंबी दुर्गम ड्यूरंड रेखा को बल प्रयोग से कोई नहीं नियंत्रित कर सका—न चंगेज़, न ब्रिटिश, न अमेरिकी। मुत्ताकी ने स्पष्ट किया कि पाकिस्तान में जारी संघर्ष उसका आंतरिक मामला है और अफगानिस्तान को इसके लिए दोष देना अनुचित है। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के सवाल पर उन्होंने कहा कि अफगानिस्तान में उसकी कोई मौजूदगी नहीं है। जो लोग वहां हैं, वे पाकिस्तान के विस्थापित शरणार्थी हैं। उन्होंने चार घंटे की सीमित जवाबी कार्रवाई की पुष्टि करते हुए कहा कि अफगान सेना ने लक्ष्य प्राप्त किए और किसी नागरिक को हानि नहीं पहुंचाई। क़तर व सऊदी अरब के आग्रह पर संघर्ष फिलहाल रोका गया है। मुत्ताकी ने कहा कि अफगानिस्तान अपने सीमाई और राष्ट्रीय सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी स्वयं निभाता है। किसी भी खतरे की स्थिति में जनता और सरकार एकजुट होकर देश की रक्षा करते हैं। उन्होंने बताया कि अफगान शासन इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों के अधिकार सुरक्षित हैं। तालिबान शासन ने अपने विरोधियों को माफ किया है, ताकि देश में स्थायी शांति सी हो सके। 'खून से खून नहीं मिटाया जा सकता,' कहते हुए उन्होंने बताया कि वह स्वयं काबुल में बिना सुरक्षा के मोटरसाइकिल चलाते हैं।

अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी ने भारत यात्रा के दौरान विदेश मंत्री एस. जयशंकर के साथ मुलाकात में व्यापार, अर्थव्यवस्था और विकास परियोजनाओं पर विस्तृत चर्चा की।

महिला पत्रकारों को प्रेस कॉन्फ्रेंस में आमंत्रित नहीं किए जाने पर अफगान विदेश मंत्री ने दी सफाई

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी ने दो दिनों के भीतर दोबारा प्रेस कॉन्फ्रेंस की।आज की प्रेस वार्ता में उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिला पत्रकारों को आमंत्रित न किए जाने के उठे विवाद पर सफाई दी है। उन्होंने कहा कि यह निर्णय किसी जानबूझकर किए गए बहिष्कार के चलते नहीं था, बल्कि जल्दबाजी में दी गई सूचना और सीमित प्रतिभागियों की सूची के कारण ऐसा हुआ। मुत्ताकी ने आज दिल्ली में एक बार फिर अफगान दूतावास में पत्रकार वार्ता की, जिसमें महिला पत्रकार भी मौजूद रही। उनके अनुसार यह तकनीकी मामला था और आयोजकों ने केवल कुछ चुने हुए पत्रकारों को आमंत्रित किया था। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इसमें किसी प्रकार का भेदभाव शामिल नहीं था। एक अन्य प्रश्न के उत्तर में महिलाओं के अधिकारों पर मुत्ताकी ने कहा कि तालिबान सरकार ने महिलाओं की शिक्षा को धार्मिक रूप से 'हराम' नहीं घोषित किया है। उन्होंने बताया कि अफगानिस्तान में वर्तमान में एक करोड़ छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनमें लगभग 28 लाख लड़कियां शामिल हैं।

राजस्थान विद्यापीठ में दो दिवसीय 47 वें अखिल भारतीय लेखांकन सम्मेलन के महाकुंभ का हुआ आगाज

एजेंसी

उदयपुर। लेखा शिक्षा और अनुसंधान एक-दूसरे के पूरक हैं। अनुसंधान के माध्यम से प्राप्त नवीन तथ्यों और ज्ञान को शिक्षा में समाहित करने से शैक्षिक गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि शिक्षा संस्थान केवल ज्ञान के केंद्र नहीं, बल्कि वे ऐसे संस्कार मंदिर हैं, जहाँ भावी पीढ़ी में कर्तव्यनिष्ठा, पारदर्शिता और मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया जाता है। ये विचार रविवार को भारतीय लेखांकन परिषद उदयपुर शाखा एवं राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय ऑल इंडिया अकाउंटिंग कॉन्फ्रेंस एंड इंटरनेशनल सेमिनार के शुभारंभ के अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल महामहिम हरिभाऊ किसनराव बागडे ने मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। महामहिम ने कहा कि समय की ऑडिट करना भी आवश्यक है समय का सर्वोत्तम उपयोग ही जीवन की सफलता का आधार बनता है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे अपने शब्दों और वाणी को अपनी सबसे बड़ी संपत्ति समझें, क्योंकि उनका प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक होता है।

फर्जी पासपोर्ट से भरी उड़ान, यूएई से डिपोर्ट होकर भारत में फंसा, धोखाधड़ी में गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। ब्लैक लिस्ट किए जाने के सात साल बाद एक व्यक्ति दूसरे नाम से पासपोर्ट बनवाकर यूएई पहुंच गया। एयरपोर्ट पर तकनीकी जांच के जरिए फर्जीवाड़े का खुलासा हो गया। यूएई एयरपोर्ट के अधिकारियों ने उसे तुरंत भारत निर्वासित कर दिया। आईजीआई एयरपोर्ट पहुंचने पर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस ने फर्जीवाड़ा का मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस आरोपी यात्री से पूछताछ कर फर्जीवाड़े में शामिल आरोपियों की पहचान करने में जुटी है। सात अक्तूबर की देर रात पंजाब के जालंधर का रहने वाला सतनाम नाम का व्यक्ति यूएई से आईजीआई एयरपोर्ट पहुंचा। उसके पास पासपोर्ट था। दस्तावेजों की जांच में पता चला कि यूएई में ब्लैकलिस्ट होने की वजह से उसे वहां प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई। लेकिन उसके पासपोर्ट की जांच में पता चला कि उसने इससे पहले यूएई की यात्रा नहीं की थी। शक होने पर इमिग्रेशन अधिकारियों ने यात्री से पूछताछ की। सतनाम ने खुलासा किया कि उसका असली नाम नसतार है। उसने नसतार नाम से पासपोर्ट बनाकर यूएई गया था, लेकिन अवधि से अधिक वहां रुकने की वजह से उसे पकड़ लिया गया और बाद में ब्लैकलिस्ट कर दिया गया।

उत्तराखंड में पड़ने लगी गुलाबी ठंड, लोगों से सेहत के प्रति सजग रहने की अपील

-दिन और रात के तापमान में 13 डिग्री से ज्यादा की गिरावट

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में सुबह-शाम कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी है। दिन और रात के तापमान में 13 डिग्री से ज्यादा का अंतर आ गया है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने लोगों से सेहत के प्रति सजग रहने की अपील की है। मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक ने बताया कि प्रदेशभर में मौसम शुष्क रहने के आसार हैं। आगामी एक सप्ताह तक प्रदेशभर में धूप खिली रहेगी। वरिष्ठ फिजिशियन के मुताबिक दिन में मौसम गर्म और रात, सुबह एवं शाम को ठंड होने से सेहत पर असर पड़ता है। जब ठंड हो तो एहतियात बरतें। पंखा चलाने को लेकर एहतियात बरतें। गुलाबी ठंड एक मौसमीय घटना है जो उत्तर भारत, खासकर उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और पहाड़ी इलाकों में पड़ती है। इसका असर मुख्य रूप से दिसंबर-जनवरी में दिखता है। गुलाबी ठंड में अत्यधिक ठंडी रातें और सुबह के समय का असामान्य तापमान रहता है। इसे इसलिए 'गुलाबी' कहा जाता है क्योंकि सुबह के समय सूरज की पहली किरणों में घास, खेत और पेड़ गुलाबी-लाल रंग में दिखाई देते हैं।

मुंबई एयरपोर्ट पर 12.58 करोड़ का सोना पकड़ाया, कर्मचारियों समेत 13 गिरफ्तार

मुंबई (एजेंसी)। राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआई) ने मुंबई एयरपोर्ट पर 12.58 करोड़ रुपए मूल्य का सोना जब्त किया है और इस संबंध में 13 लोगों को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि 'ऑपरेशन गोल्डन स्वीप' के तहत डीआरआई की मुंबई जोनल इकाई ने सोने की तस्करी के गिरोह का पर्दाफाश किया है। मीडिया रिपोर्ट में अधिकारियों के हवाले से बताया कि इस मामले में हवाई अड्डा कर्मचारियों समेत 13 लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार लोगों में दो बांग्लादेशी और छह श्रीलंकाई नागरिक हैं। कुल 10.5 किलोग्राम सोना जब्त किया गया है, जिसकी कीमत करीब 12.58 करोड़ रुपए है। अधिकारियों ने बताया कि मुंबई पहुंचने पर, संबंधित ट्रांजिट यात्री तस्करी का सोना अंतरराष्ट्रीय प्रस्थान क्षेत्र में मौजूद एयरपोर्ट के कर्मचारियों को सौंप देते थे। उन्होंने कहा कि इसके बाद कर्मचारी सोने को हवाई अड्डा परिसर से बाहर ले जाकर बाहरी लोगों को सौंप देते थे।

दिल्ली को 'भारत की कौशल राजधानी' बनाने सरकार की प्रतिबद्धता : मंत्री सूद

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय (डीएसईयू) के स्थापना दिवस पर दिल्ली को 'भारत की कौशल राजधानी' बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। गृह, उच्च शिक्षा और प्रशिक्षण एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री की भी जिम्मेदारी संभालने वाले सूद ने कहा कि डीएसईयू की पहुंच और प्रभाव को दिल्ली से बाहर तक ले जाना सरकार का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि मैं यहां केवल एक मंत्री के रूप में ही नहीं बल्कि कौशल विकास के जरिए हो रहे परिवर्तन में एक भागीदार के रूप में भी हूं। शासन का मतलब पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक सेवाएं पहुंचाना है। सूद ने डीएसईयू को शिक्षा, रोजगार और उद्यमिता के एक साथ आगे बढ़ने वाले कौशल भारत दृष्टिकोण का जीवंत उदाहरण बताया। उन्होंने विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों से लंबित मुद्दों को समयबद्ध तरीके से हल करने के लिए समिति का गठन करने की घोषणा की। शिक्षा सुधारों पर सरकार के दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए मंत्री सूद ने कहा कि पीएम मोदी के मार्गदर्शन और दिल्ली सीएम रेखा गुप्ता के नेतृत्व में दिल्ली सरकार 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के सिद्धांत पर काम कर रही है। डीएसईयू के कुलपति अशोक कुमार नागावत ने कहा कि डीएसईयू भारत का पहला विश्वविद्यालय है जिसने एनईपी को पूरी तरह लागू किया है।

केरल फिर देश का रोल मॉडल : अत्यंत गरीबी खत्म करने वाला दक्षिण एशिया का पहला राज्य

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल राज्य एक बार फिर अपनी मजबूत सरकारी और सामाजिक भागीदारी के दम पर देश के लिए रोल मॉडल बनने जा रहा है। राज्य ने आधिकारिक तौर पर अपने यहाँ से अत्यंत गरीबी (Extreme Poverty) खत्म करने की घोषणा कर दी है, जिसकी औपचारिक घोषणा 1 नवंबर को होगी। ऐसा करने वाला केरल देश का ही नहीं, बल्कि दक्षिण एशिया का पहला राज्य होगा। मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के मुताबिक, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार जिनकी आय ?158.10 प्रति दिन से कम है, वे अत्यंत गरीबी की श्रेणी में आते हैं। केरल ने इससे आगे बढ़कर भोजन, आय, स्वास्थ्य और आवास को आधार बनाया और इस पहल को मानवीय गरिमा नाम दिया। केरल में स्वर्णम्मा जैसी 1.03 लाख लोग हैं, जो अत्यंत गरीबी में जीवन गुजार रहे थे, जिनकी जिंदगी अब बदल गई है।

घुसपैठ पर कांग्रेस का शाह से बड़ा सवाल, पिछले 11 साल से क्या कर रहे थे?

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के घुसपैठ संबंधी बयान पर कांग्रेस ने तीखा पलटवार किया है। पार्टी ने आरोप लगाया कि अमित शाह आगामी विधानसभा चुनावों से पहले मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने के लिए दुष्प्रचार की राजनीति कर रहे हैं।

दरअसल, अमित शाह ने शनिवार को एक कार्यक्रम में कहा था कि कुछ राजनीतिक दल घुसपैठियों को वोट बैंक के रूप में देखते हैं। और सवाल किया था कि गुजरात और राजस्थान की सीमाओं पर घुसपैठ क्यों नहीं होती? शाह ने यह भी दावा किया था कि भारत में मुस्लिम आबादी में 24.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि हिंदू आबादी में 4.5 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। उन्होंने इस असंतुलन का कारण पाकिस्तान और बांग्लादेश से हो रही अवैध घुसपैठ को बताया था।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर पोस्ट कर गृह मंत्री पर तीखा हमला किया। उन्होंने लिखा, सहकारिता मंत्री ने 10 अक्टूबर को हिंदू-मुस्लिम विवाद को हवा देने और चुनावों से पहले मतदाताओं का ध्रुवीकरण करने की कोशिश की। खेड़ा ने आरोप लगाया कि शाह ने मुसलमानों की बढ़ती आबादी का हवाला देकर यह संकेत दिया कि भारत में व्यापक मुस्लिम घुसपैठ हो रही है। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा, अगर मुस्लिम आबादी घुसपैठ के कारण बढ़ी है, जैसा कि गृह मंत्री दावा कर रहे हैं, तो वे पिछले 11 सालों से क्या कर रहे थे? खेड़ा ने कहा कि शाह को जल्द ही यह एहसास हो गया कि वह गृह मंत्री भी हैं, और इसलिए उन्होंने अपना बयान सोशल मीडिया से हटा लिया।

कांग्रेस नेता ने आंकड़े पेश करते हुए कहा कि 2005 से 2013 के बीच यूपीए सरकारों ने 88,792 बांग्लादेशी नागरिकों को निर्वासित किया था, जबकि भाजपा शासन में 11 वर्षों में यह संख्या 10,000 से भी कम रही। उन्होंने तंज कसा, ÷खाली बर्तन ज्यादा खड़कते हैं।÷ वहीं, कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने भी शाह पर निशाना साधते हुए कहा कि अमित शाह वेपन ऑफ मास डिसइनफॉरमेशन (दुष्प्रचार का व्यापक हथियार) और वेपन ऑफ इंटिमिडेटरी मास पोलराइजेशन (धमकी आधारित जनध्रुवीकरण का हथियार) का इस्तेमाल कर रहे हैं। कांग्रेस का कहना है कि अमित शाह के ऐसे बयान देश में साम्प्रदायिक तनाव को बढ़ाने का काम करते हैं, जबकि गृह मंत्री का दायित्व शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखना है।

कसौली चिदंबरम बोले- ऑपरेशन ब्लू स्टार एक गलत कदम था, इंदिरा गांधी ने जान देकर चुकाई कीमत

कसौली (एजेंसी)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम ने एक कार्यक्रम में कहा, कि 1984 में स्वर्ण मंदिर में सैन्य कार्रवाई यानी 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' गलत कदम था और तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकाई। चिदंबरम हिमाचल प्रदेश के कसौली में आयोजित खुशवंत सिंह साहित्य महोत्सव में हिस्सा लेने पहुंचे थे।

कार्यक्रम में चिदंबरम हरिंदर बावेजा की किताब ÷दे विल शूट यू, मैडम÷ पर चर्चा कर रहे थे। उन्होंने कहा, मैं किसी फौजी अफसर का अनादर नहीं कर रहा, लेकिन स्वर्ण मंदिर को वापस पाने का तरीका गलत था। कुछ साल बाद हमने बिना सेना के सही तरीका अपनाया। ब्लू स्टार गलत रास्ता था और श्रीमती गांधी ने इस गलती की कीमत अपनी जान देकर चुकाई। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह फैसला अकेले इंदिरा गांधी का नहीं था, बल्कि सेना, पुलिस, गुप्तचर एजेंसियों और सिविल सेवा के संयुक्त निर्णय का परिणाम था। उन्होंने कहा, इसका सारा दोष केवल इंदिरा गांधी पर डालना अनुचित है। क्या आप ऐसा करेंगे? यह सवाल उन्होंने कार्यक्रम के दौरान लेखिका हरिंदर बावेजा से पूछा।

वर्तमान पंजाब की स्थिति पर बोलते हुए चिदंबरम ने कहा कि खालिस्तान आंदोलन अब लगभग समाप्त हो चुका है, और राज्य की वास्तविक समस्या आर्थिक संकट और बेरोजगारी है। उन्होंने कहा, कि पंजाब की मेरी यात्राओं से स्पष्ट है कि अलगाव की मांग व्यावहारिक रूप से खत्म हो गई है। अब सबसे बड़ी चिंता आर्थिक स्थिति की है, और यही कारण है कि सबसे अधिक अवैध प्रवासी पंजाब से हैं।

तालिबानी विदेश मंत्री की भारत यात्रा को लेकर ओवैसी ने कहा, भारत को काबुल से पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित करने चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी की भारत यात्रा के बीच एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने तालिबान को लेकर बड़ा बयान दिया है। ओवैसी ने कहा, कि भारत को तालिबान सरकार के साथ सिर्फ बातचीत तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित करने चाहिए, ताकि देश के सुरक्षा और रणनीतिक हित सुरक्षित रह सकें।

सांसद ओवैसी ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा, कि उन्होंने 2016 में संसद में अपने भाषण के दौरान ही यह भविष्यवाणी की थी कि अफगानिस्तान में एक दिन फिर से तालिबान की वापसी होगी। ओवैसी के अनुसार, उन्होंने उस समय ही भारत सरकार को तालिबान से संवाद शुरू करने की सलाह दी थी, लेकिन तब भाजपा नेताओं ने उनकी बात का विरोध किया था। सांसद ओवैसी ने कहा, मैंने 2016 में संसद में कहा था कि तालिबानी आएंगे, उनसे बात करो। आज उनके विदेश मंत्री भारत में हैं और पाकिस्तान की वायुसेना वहां बमबारी कर रही है। यह समय भारत के लिए अपनी नीति पर पुनर्विचार करने का है। हमें अफगानिस्तान के साथ पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित करने चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भारत की अफगानिस्तान में मौजूदगी उसके भू-राजनीतिक और सुरक्षा हितों के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सांसद ओवैसी ने इसी बीच ईरान के चाबहार बंदरगाह के महत्व पर भी जोर देते हुए कहा, कि भारत इस बंदरगाह के माध्यम से अफगानिस्तान तक व्यापारिक और रणनीतिक मार्ग मजबूत कर सकता है। इससे न केवल चीन और पाकिस्तान के प्रभाव को संतुलित किया जा सकेगा, बल्कि मध्य एशिया में भारत की स्थिति भी सशक्त होगी।

ऑपरेशन सिंदूर में किया गया धर्म युद्ध के सिद्धांतों का पालन, आर्मी चीफ ने दी पाकिस्तान को दो टूक चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने ऑपरेशन सिंदूर को लेकर स्पष्ट शब्दों में कहा, कि भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान धर्म युद्ध के सिद्धांतों का पालन किया। उन्होंने बताया कि सेना ने इस अभियान में केवल आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया, जबकि आम नागरिकों और सामान्य सैन्य प्रतिष्ठानों पर किसी भी तरह का हमला नहीं किया गया।

सेना प्रमुख जनरल द्विवेदी ने यह बयान हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले के चैल स्थित राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल के शताब्दी समारोह में दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय सशस्त्र बल अनुशासन, नैतिकता और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। सेना का लक्ष्य केवल आतंकवाद का खात्मा है, न कि किसी देश या नागरिक को नुकसान पहुंचाना। आर्मी चीफ ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमने धर्म युद्ध के सिद्धांतों का पालन किया। हमने केवल आतंकवादियों के ठिकानों पर प्रहार किया, जबकि पाकिस्तान में नागरिक या सैन्य अड्डे पूरी तरह सुरक्षित रहे। उन्होंने बताया कि 22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारतीय सेना ने 6 मई को ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया था। इस अभियान में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में मौजूद आतंकवादी ठिकानों को सटीक निशाना बनाया गया। हालांकि पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई की कोशिश की, लेकिन भारतीय सेना की रणनीति और ताकत के आगे वह टिक नहीं सका।

जनरल द्विवेदी ने यह भी कहा कि इस अभियान ने न केवल आतंक के नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया, बल्कि पाकिस्तान को यह स्पष्ट संदेश भी दिया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने में सक्षम है। समारोह के दौरान आर्मी चीफ ने चैल मिलिट्री स्कूल की उपलब्धियों की सराहना की और छात्रों से देश सेवा के मूल्यों को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह संस्थान वर्षों से देश को बेहतरीन सैन्य अधिकारी और नेतृत्वकर्ता प्रदान कर रहा है।

पाक के लिए जासूसी करने वाले मंगत को कोर्ट ने तीन दिन की रिमांड पर भेजा

जयपुर (एजेंसी)। पाकिस्तानी के लिए जासूसी करने पर गिरफ्तार राजस्थान के मंगत सिंह को शनिवार को एक विशेष अदालत ने तीन दिन की हिरासत में भेज दिया। विशेष लोक अभियोजक के मुताबिक आरोपी पर पाकिस्तान में बैठे आकाओं के साथ संवेदनशील रणनीतिक जानकारी साझा करने के आरोप में सरकारी गोपनीयता अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। मीडिया रिपोर्ट में अधिकारियों ने बताया कि अलवर जिले के गोविंदगढ़ निवासी मंगत सिंह ने लोगों की धार्मिक आस्था का फायदा उठाने के लिए खुद को सिद्ध पुरुष बताया था। अलवर क्षेत्र में जाने-माने मंगत सिंह ने कथित तौर पर अनुष्ठान करने के बहाने पैसे ऐंठे। अधिकारी कई महीनों से उसकी गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। निगरानी से पता चला कि वह करीब दो साल से सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तानी आईएसआई एजेंटों को जानकारी पहुंचा रहा था। सूत्रों ने बताया कि जांच में उसके मोबाइल फोन में ईशा शर्मा और ईशा बॉस नाम से सेव किए गए दो संदिग्ध नंबरों की पहचान पाकिस्तानी हैंडलरों के रूप में हुई। एक अधिकारी ने कहा कि शुरुआती जांच से पता चलता है कि मंगत सिंह ने पाकिस्तान के साथ संवेदनशील और रणनीतिक जानकारी साझा की थी। उसके वित्तीय लेनदेन के रिकॉर्ड भी मिले हैं। संभावित धन हस्तांतरणों की भी जांच की जा रही है। खुफिया सूत्रों ने पुष्टि की कि जयपुर स्थित खुफिया इकाइयों और केंद्रीय एजेंसियों ने मंगत सिंह के मोबाइल फोन का तकनीकी विश्लेषण किया, जिससे पाकिस्तान स्थित गुर्गों के साथ उसके संबंधों की पुष्टि हुई है। जासूसी गतिविधि की पुष्टि के बाद, राजस्थान की सीआईडी ??ने मामला दर्ज किया और शुक्रवार को उसे गिरफ्तार किया। अधिकारियों ने कहा कि राजस्थान की खुफिया और केंद्रीय एजेंसियां अब उसके वित्तीय लेन-देन, संपर्कों और संभावित स्थानीय नेटवर्क की जांच कर रही हैं। ऑपरेशन सिंदूर के बाद से राजस्थान की खुफिया एजेंसियों ने पाकिस्तान को सूचना भेजने के संदिग्ध जासूसी नेटवर्क पर अपनी कार्रवाई तेज कर दी है।

लालू, राबड़ी और तेजस्वी आज दिल्ली में कोर्ट में होंगे पेश, सीटों का बंटवारा टला

सीट बंटवारे की अड़चनों को कांग्रेस आलाकमान से दूर करवा सकते हैं तेजस्वी

पटना (एजेंसी)। बिहार में महागठबंधन के सीट बंटवारे की घोषणा सोमवार तक टल गई है। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव रविवार को दिल्ली पहुंचे। सोमवार को तीनों को नौकरी के बदले जमीन मामले में अदालत में पेश होना है। दिल्ली में तेजस्वी, राहुल गांधी से मिल सकते हैं। कांग्रेस के साथ समझौते में आ रही अड़चनों को तेजस्वी कांग्रेस आलाकमान के हस्तक्षेप से दूर करवा सकते हैं। कांग्रेस से अगर दिल्ली में बात फाइनल हुई तो पटना में घोषणा सिर्फ औपचारिकता रह जाएगी। तेजस्वी सोमवार को ही पटना लौट आएंगे। इसलिए सीट बंटवारे का ऐलान सोमवार शाम या मंगलवार तक हो सकता है।

बता दें महागठबंधन में पहले चरण की वैसी सीटें, जिन पर दो दलों का परस्पर दावा नहीं है और जिनके उम्मीदवार तय हैं, वहां अनौपचारिक रूप से उम्मीदवारों को सिंबल लेकर नामांकन की तैयारियां करने को कहा है। सूत्रों का कहना है कि राजद ने करीब चार दर्जन ऐसे उम्मीदवारों को पटना में जरूरी पेपर के साथ बुलाया है और सिंबल ले जाकर ऐलान का इंतजार करने को कहा है। सीपीएम ने भी अपने दोनों मौजूदा विधायकों को नामांकन की हरी झंडी दे दी है।

गठबंधन में मुकेश सहनी ने टूट के संकेत दिए हैं और अगर वह निकलते हैं तो बचे हुए दलों के लिए सीटों की व्यवस्था तेजस्वी और कांग्रेस आसानी से कर लेंगे। सूत्रों के मुताबिक सीपीआई और सीपीएम को छोड़ सभी दलों को 2020 के मुकाबले कम सीटों पर लड़ना है। मुकेश सहनी और कांग्रेस के साथ तेजस्वी की बातचीत नहीं टूटती है तो राजद को 138 सीटें लड़ना है जो 2020 के मुकाबले 6 कम है। कांग्रेस को भी 70 के बदले 57 सीटों से ही संतोष करना पड़ सकता है।

स्ट्राइक रेट के आधार पर ज्यादा सीट मांग रही सीपीआई-एमएल को भी 2020 के मुकाबले 18 सीट मिल सकती है। मुकेश सहनी को 16 सीट दी जा सकती है। सीएम या डिप्टी सीएम फेस घोषित करने पर महागठबंधन में सहमति नहीं है क्योंकि कांग्रेस ऐसा नहीं चाहती है।

चुनाव आयोग ने शुरू की तैयारी-पूरे देश में चरणबद्ध तरीके से लागू होगा वोटर वेरिफिकेशन

-2026 में पश्चिम बंगाल सहित पांच राज्यों में होगा एसआईआर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग देश में चरणबद्ध तरीके से मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का काम शुरू कर सकता है। आयोग के अधिकारियों ने बताया कि एसआईआर प्रक्रिया की शुरुआत उन राज्यों से हो सकती है, जहां अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। आयोग उन राज्यों में मतदाता सूची संशोधन अभियान नहीं चलाएगा जहां स्थानीय निकाय चुनाव होने हैं या हो रहे हैं। चुनाव आयोग का कहना है कि चुनाव मशीनरी, निकाय चुनाव में व्यस्त है और इसके चलते वे एसआईआर पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएंगे।

गौरतलब है कि असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में साल 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन पांच राज्यों के अलावा पहले चरण में कुछ अन्य राज्यों में भी एसआईआर की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। बिहार में एसआईआर का काम पूरा हो गया है, जहां 30 सितंबर को लगभग 7.42 करोड़ नामों वाली अंतिम सूची प्रकाशित की गई थी। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने सोमवार को कहा कि सभी राज्यों में मतदाता सूचियों का गहन पुनरीक्षण शुरू करने का काम चल रहा है और इसे शुरू करने पर अंतिम फैसला चुनाव आयोग द्वारा लिया जाएगा।

राज्य निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश

अधिकारियों के अनुसार, चुनाव आयोग के शीर्ष अधिकारियों ने इस महीने की शुरुआत में एक सम्मेलन में राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारियों (सीईओ) से अगले 10 से 15 दिनों में एसआईआर शुरू करने के लिए तैयार रहने को कहा था। मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने राज्यों की मतदाता सूचियों को

अंतिम एसआईआर के बाद प्रकाशित रखें। दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी की वेबसाइट पर 2008 की मतदाता सूची है, जब राष्ट्रीय राजधानी में अंतिम बार गहन पुनरीक्षण हुआ था। उत्तराखंड में, अंतिम एसआईआर 2006 में हुआ था, और उस वर्ष की मतदाता सूची अब राज्य मुख्य निर्वाचन अधिकारी की वेबसाइट पर है। अधिकांश राज्यों में मतदाता सूची की अंतिम एसआईआर 2002 और 2004 के बीच थी। एसआईआर का प्राथमिक उद्देश्य अवैध मतदाताओं के जन्म स्थान की जांच करके उन्हें मतदाता सूची से बाहर निकालना है।

मप्र में 20 से ज्यादा बच्चों की जान लेने वाले कोल्ड्रिफ कफ सिरप पर पश्चिम बंगाल में प्रतिबंध

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल केमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स एसोसिएशन (बीसीडीए) ने राज्यभर के दवा विक्रेताओं को इस सिरप की बिक्री और खरीद तत्काल प्रभाव से बंद करने का निर्देश दिया है। ये वही कोल्ड्रिफ कप सिरप है जिसे बच्चों की जान का दुश्मन माना जा रहा है। मध्य प्रदेश में गुरुवार को तीन और बच्चों की मौत के बाद मरने वालों की कुल संख्या 20 पर पहुंच गई है। पांच बच्चे अब भी नागपुर में जिंदगी और मौत के बीच जंग लड़ रहे हैं। जिसके बाद अब एहतियात बरतते हुए पश्चिम बंगाल में भी इस दवा की बिक्री और खरीद पर बैन लगा दिया गया है।

बंगाल राज्य औषधि नियंत्रण बोर्ड ने इन रसायनों की खरीद केवल अनुमोदित विक्रेताओं से करने और प्रमाणित प्रयोगशालाओं में जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश दिया है। तमिलनाडु स्थित कंपनी द्वारा निर्मित इस सिरप से जुड़ी मौतों के बाद कई राज्यों में दहशत फैल गई है। जांच में पाया गया है कि सिरप में प्रोपिलीन ग्लाइकॉल, ग्लिसरीन और सोर्बिटॉल जैसे रसायन हैं, जिनकी गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। बीसीडीए के सचिव पृथ्वी बसु ने बताया कि जिस बैच को मध्यप्रदेश की घटना से जोड़ा जा रहा है, वह पश्चिम बंगाल में नहीं पहुंचा है, लेकिन एहतियातन सभी दवा विक्रेताओं को इस ब्रांड की बिक्री रोकने को कहा गया है। उन्होंने कहा कि 11 अक्तूबर को दवा विक्रेताओं के साथ बैठक बुलाई गई है, जिसमें इस सलाह को सख्ती से लागू करने पर चर्चा होगी।

इससे पहले अरुणाचल प्रदेश सरकार ने कोल्ड्रिफ कफ सिरप की बिक्री व उपयोग पर रोक लगा दी। अरुणाचल प्रदेश औषधि नियंत्रण ने श्रीसन फार्मास्युटिकल से निर्मित कोल्ड्रिफ कफ सिरप की बिक्री, वितरण और भंडारण पर प्रतिबंध लगाने संबंधी परामर्श जारी किया है। तेलंगाना के औषधि नियंत्रण प्रशासन ने भी दो कफ सिरप रीलाइफ और रेस्पीफ्रेश टीआर के खिलाफ सार्वजनिक चेतावनी - उपयोग बंद करने का नोटिस जारी किया। इन दोनों सिरप में एक जहरीले पदार्थ की मिलावट पाई गई है। औषधि निरीक्षकों ने पाया कि इस घटिया केमिकल से कई दवाएं तैयार की गईं। जांच टीम ने पाया कि कंपनी के पास उस समय प्रोपलीन ग्लायकॉल का कोई स्टॉक नहीं था। कंपनी के पास रसायन खरीद का कोई चालान भी नहीं था। इससे शक और गहरा गया कि कंपनी ने केमिकल को तेजी से खत्म कर दस्तावेज छिपाने की कोशिश की।

लखनऊ से अयोध्या के लिए शुरू हुई डबल डेकर बस सुविधा, डीलक्स सुविधाओं के साथ बस इतना है किराया

अयोध्या। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार की मंशा के अनुरूप अयोध्या को डबल डेकर बस की सौगात मिल गई है। अब लखनऊ से अयोध्या नियमित रूप से इसका संचालन शुरू हो गया है। लखनऊ से चलकर डबल डेकर बस अयोध्या पहुंची, सबसे पहले डबल डेकर बस के चालक और परिचालक ने रामलला और हनुमंत लला का दर्शन पूजन कर

आशीर्वाद लिया। परिचालक अनिल यादव ने बताया कि यह बस पूरी तरह से वातानुकूलित है। गर्मी में शीतल हवा और ठंडी में गर्म हवा मिलेगी। इसमें 64 यात्री सवार हो सकते हैं। लखनऊ से अयोध्या तक इसका किराया 243 रुपए है। सुविधाओं की बात करें तो बस में डीलक्स सीटें लगी हुई हैं। पूरी तरह से ये बस ऑटोमेटिक है। जब तक बस का गेट बंद नहीं होगा तब तक बस स्टार्ट नहीं होगी। दरअसल परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने अयोध्या पहुंचकर बयान दिया था कि नवरात्र में डबल डेकर बस जो कि लंदन की बनी हुई है और इसकी कीमत तीन करोड़ रुपये है वह संचालित हो जाएगी। नवरात्र में बस का ट्रायल हो गया था और अब नियमित रूप से इसका संचालन भी शुरू हो गया है।

पहला प्लान फेल, दूसरे में किया मर्डर, गर्भवती बेगम ने प्रेमी संग मिल पति को मार डाला

कौमी पत्रिका

गाजियाबाद। गाजियाबाद के डासना में रहने वाले आसिफ उर्फ गुल्लू की हत्या उसकी दूसरी पत्नी अरशी ने अपने प्रेमी से कराई। पांच माह पहले जेल से छूटा आसिफ पत्नी के प्रेम संबंधों में बाधक बन रहा था। आसिफ ने पत्नी और उसके प्रेमी को रोंगाथ घर में पकड़ा था। ऐसे में अरशी ने पति की हत्या की साजिश रची। अरशी के प्रेमी रेहान और उसके साथी बिलाल ने रफीकाबाद फाटक पर सात सितंबर की रात को गोली मारकर आसिफ की हत्या कर दी थी। पुलिस ने अरशी, रेहान, बिलाल, जीशान और उवैश को गिरफ्तार कर लिया है। जबकि रेकी करने वाले गुलफाम और दानिश अभी भी पुलिस की पकड़ से बाहर हैं। एसीपी मसूरी लिपी नगायच ने बताया कि प्राची उर्फ अरशी मूल रूप से मुरादनगर की रहने वाली है। इसकी शादी हापुड़ के दीपक से वर्ष 2017 में हुई। आलीशान मकान में रहने के ख्वाब पालने वाली प्राची ने वर्ष 2022 में दीपक को छोड़ दिया और ड्रग माफिया आसिफ से दोस्ती की। धर्मांतरण कर प्राची से अरशी बनी और शादीशुदा आसिफ से निकाह रचाया। आसिफ की पहली पत्नी जूही एक बेटी सहित डासना के उस्मान नगर स्थित घर पर रहती है। जबकि आसिफ अरशी के साथ डासना के मयूर विहार स्थित किराये के मकान में रहता था। दोनों की एक तीन वर्षीय बेटी है। डेढ़ वर्ष पहले आसिफ ड्रग्स तस्करी के मामले में जेल चला गया। आसिफ का दोस्त रेहान उससे मिलने जेल पहुंचा। जहां आसिफ ने रेहान से कुछ सामान दूसरी पत्नी तक पहुंचाने के लिए कहा। रेहान सामान लेकर अरशी के पास पहुंचा तो दोनों की नजदीकियां बढ़ने लगीं। पांच माह पूर्व आसिफ जेल से छूटा तो रेहान और अरशी के प्रेम संबंधों की जानकारी हुई। अरशी गर्भवती भी है विरोध पर रेहान और आसिफ में तनातनी हो गई। अरशी ने रेहान को बताया कि वह रोजाना अपनी पहली पत्नी जूही से मिलने शाम को डासना जाता है। आरोपियों ने गुलफाम और दानिश की मदद से रेकी करवाई और सात सितंबर को रेहान और उसके साथियों ने दो गोली मारकर आसिफ की हत्या कर दी। पुलिस ने मुख्य अभियुक्त रेहान निवासी रामा चौक, थाना वेवसिटी, बिलाल निवासी डासना कॉलोनी पुरानी पैठ, जीशान निवासी डासना कॉलोनी वेव सिटी, उवैश निवासी पुरानी चुंगी जनपद हापुड़, अरसी पत्नी आसिफ निवासी भडभूजा वाली गली मयूर विहार को गिरफ्तार किया है। रेकी करने वाले गुलफाम और दानिश निवासी उस्मान कॉलोनी डासना अभी भी पुलिस की पकड़ से बाहर हैं। आरोपियों से दो तमंचे और कारतूस बरामद हुए हैं। रेहान पर चार और उवैश के खिलाफ एक मुकदमा दर्ज है। आसिफ रेहान और अरशी के अवैध संबंधों में बाधक बना था। अरशी का मोबाइल भी आसिफ ने तोड़ दिया था और घर से निकलना भी बंद कर दिया। इसके बावजूद रेहान अरशी से मिलता-जुलता रहा। एक माह पहले रेहान ने अरशी को नींद की टेबलेट दी और आसिफ को दूध में मिलाकर पिलाने को कहा। रेहान रात को आसिफ की हत्या करने के इरादे से घर आया। जहां अरशी ने बताया कि वह आसिफ को नींद की टेबलेट नहीं दे पाई। ऐसे में दोनों ने उसकी हत्या सरेराह करने की साजिश रची। रेहान ने अपने छह साथियों को आसिफ की रेकी के लिए लगाया। सात सितंबर को रेहान ने पहली और जीशान ने दूसरी व उवैश ने तीसरी गोली चलाई थी। दो गोली आसिफ के सिर पर लगीं, जिससे उसकी मौत हो गई।

जैन मंदिर के शिखर में जड़ा 40 लाख का कलश चोरी

दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के ज्योति नगर में जैन मंदिर से लगभग 40 लाख का कलश चोरी कर लिया गया। पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई। शनिवार सुबह जैसे ही स्थानीय लोगों को कलश चोरी होने की खबर मिली, मंदिर के बाहर भीड़ जुट गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस अधिकारी मंदिर कमेटी को थाने बुलाने लगे तो इस पर लोग नाराज हो गए। बाद में वहद वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि वारदात शुक्रवार रात को हुई। उस समय लोग करवाचौथ में व्यस्त थे। आरोपी ने इसका फायदा उठाया और कलश ले गया। मंदिर समिति के अध्यक्ष नीरज जैन की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपी की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। नीरज जैन ने बताया कि जैन मंदिर करीब 25 साल पुराना है। स्थानीय लोगों ने मंदिर प्रशासन के सहयोग से करीब 17 साल पहले शिखर पर सोने की परत चढ़ा हुआ कलश लगाया था। इस समय कलश की कीमत लगभग 40 लाख रुपये के आसपास है। शुक्रवार रात को मंदिर बंद कर दिया गया। इस बीच शनिवार सुबह जब मंदिर खोला गया तो वहां शिखर पर लगा कलश गायब था। सीसीटीवी कैमरों की फुटेज को खंगाला गया। फुटेज देखने पर पता चला कि देर रात करीब पौने 12 बजे मंदिर के बाहर एक व्यक्ति खड़ा था। कुछ मिनट वह मंदिर के बाहर बैठा रहा। इसके बाद आरोपी बिजली के तारों के जरिये मंदिर की छत पर पहुंच गया।

जमानत लेकर फरार हो गया था एम. फिल. डिग्रीधारी, शातिर तरीके से देता था लूट को अंजाम

दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने दिल्ली विश्वविद्यालय से एमएससी और एम.फिल. पास एक लुटेरे को गिरफ्तार किया है। आरोपी डीयू के किरोड़ीमल कॉलेज का छात्र रहा है। उसने कॉलेज से बीएससी ऑनर्स किया हुआ है। आरोपी की पहचान हरिनगर, सोहना गुरुग्राम निवासी दीप शुभम (32 वर्ष) के रूप में हुई है। वर्ष 2017 में आरोपी ने अकेले ही सीतामढ़ी बिहार में बैंक ऑफ इंडिया पर धावा बोलकर वहां से कैश लूट लिया था। लूटपाट के दौरान आरोपी ने रसायन विज्ञान का इस्तेमाल करते हुए पटाखों के साथ कोई केमिकल मिलाकर धुएं वाला बम तैयार किया। उसकी मदद से वारदात को अंजाम दिया गया। इस मामले में आरोपी को सजा हो गई थी। आरोपी जमानत लेकर दिल्ली आ गया और कभी कोर्ट का रुख नहीं किया। दिल्ली आने के बाद वर्ष 2021 में आरोपी ने अलग-अलग दो ज्वेलर को निशाना बनाकर लूटपाट की। मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। बाद में वह जमानत पर बाहर आ गया। यहां भी उसने कभी कोर्ट का रुख नहीं किया। अदालत ने इसे भगोड़ा घोषित कर रखा था। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त हर्ष इंदौरा ने बताया कि नौ अक्तूबर को उनकी टीम को सूचना मिली थी कि मॉडल टाउन इलाके में दो ज्वेलर के यहां हुई लूट के मामले में फरार बदमाश हरिनगर, गुरुग्राम आने वाला है। खबर मिलते ही फौरन एक टीम का गठन किया गया। बाद में आरोपी को दबोच लिया गया। छानबीन के दौरान पुलिस 17 सितंबर 2021 को आरोपी ने मॉडल टाउन के गुजरावाला स्थित बी-ब्लॉक में नामी ज्वेलर के यहां लूटपाट की। आरोपी पिस्टल लेकर ज्वेलर के दफ्तर में घुस गया। वहां आरोपी ने उत्तम नगर निवासी महिला कर्मचारी मनमीत गुलेरिया को बंधक बनाकर लूटपाट की। आरोपी ने वहां से 6.06 लाख रुपये लूट लिए। बाद में जाते समय आरोपी ने मनमीत व सुरक्षा गार्ड को एक जगह बंधक बनाकर उनके मोबाइल फोन भी लूट लिए। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गया। इसी तरह आरोपी ने 25 अक्तूबर 2021 को गुजरावाला टाउन में ही एक अन्य ज्वेलरी शोरूम से महिला कर्मचारी राशिका को बंधक बनाकर 70 हजार रुपये लूट लिए। बाद में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों मामलों में जमानत लेने के बाद आरोपी ने कभी अदालत का रुख नहीं किया और पुलिस से बचने के लिए सोहना, गुरुग्राम में रहने लगा। बिहार बैंक लूट के मामले में आरोपी को सजा हो गई थी। अदालत से मामले में जमानत लेकर आरोपी दिल्ली भाग आया था। बिहार के सीतामढ़ी में पैदा हुआ दीप शुभम परिवार के साथ 1990 के दशक में दिल्ली के बुराड़ी आकर बस गया। इसके पिता ने दिल्ली आकर अपना कारोबार शुरू कर दिया। भाई भी इंजीनियर बन गया। नानी के यहां रहकर आरोपी ने बिहार के नामी स्कूल से 12वीं कक्षा पास की। बाद में वह दिल्ली आ गया। दिल्ली आने के बाद उसने नॉर्थ कैंपस के मशहूर कॉलेज किरोड़ीमल में बीएससी ऑनर्स रसायन विज्ञान में 2012 में दाखिला लिया। बाद में आरोपी ने डीयू से ही एमएससी और एम.फिल. रसायन विज्ञान से कर लिया।इसके बाद उसने क्लैट का टेस्ट पास करने के बाद आंध्र प्रदेश के एक कॉलेज में एलएलबी में दाखिला ले लिया। एक साल वहां पढ़ाई करने के बाद वह वापस दिल्ली आ गया। यहां आकर इसने दोबारा किरोड़ीमल कॉलेज में एमए इंग्लिश में दाखिला ले लिया। इसके बाद आरोपी ने नोएडा के एक नामी कॉल सेंटर में नौकरी शुरू की। आरोपी की आर्थिक स्थिति खराब होने लगी। परिवार ने इसकी मदद नहीं की। इस वजह से आरोपी ने अपराध की दुनिया में कदम रख दिया। 2017 में आरोपी ने सीतामढ़ी बिहार में बैंक ऑफ इंडिया में धुएं वाला बम फेंककर वहां लूटपाट की। वहां से 3.60 लाख लूटकर आरोपी फरार हो गया। मामला चूंकि बहुत हाईलाइट हुआ। बिहार पुलिस ने आरोपी को दिल्ली के बुराड़ी से दबोच लिया। इस मामले में उसे सजा भी हो गई।

सवा छह करोड़ के पटाखों का जखीरा पकड़ा, तीन गिरफ्तार

मोदीनगर। पुलिस ने शुक्रवार को भोजपुर गांव स्थित गोल्डन ट्रेडिंग एजेंसी के दो गोदामों पर छापा मारकर 3 लाख 44 हजार किलोग्राम पटाखों का जखीरा पकड़ा है। कारोबारी समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पकड़े गए पटाखों की कीमत 6.25 करो? रुपये है। एनजीटी के प्रतिबंध के बावजूद पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पटाखों की बिक्री की जा रही थी। मोदीनगर-हापु मार्ग स्थित गांव भोजपुर में गोल्डन ट्रेडिंग एजेंसी के लगभग 15 बीघा भूमि में दो गोदाम हैं। यहां भंडारण के लिए 12 हॉल बने हुए हैं। एडीसीपी आलोक प्रियदर्शी, एसीपी मोदीनगर अमित सक्सेना और उपजिलाधिकारी मोदीनगर अजीत सिंह ने सूचना पर पुलिस फोर्स के साथ दोपहर करीब 3 बजे इन गोदामों पर छापा मारा। टीम को गोदाम पूरी क्षमता के साथ भरे मिले। जांच के दौरान यहां ग्रीन के साथ खतरनाक पटाखों का जखीरा भी मिला। गोदामों में पटाखों का जखीरा देखकर टीम सकते में आ गई। एहतियात के लिए दमकल टीम को भी मौके पर बुलाया गया। टीम ने करीब तीन घंटे तक कार्रवाई की। टीम को यहां से लगभग 3 लाख 44 हजार किलोग्राम पटाखे बरामद हुए। पुलिस के अनुसार बरामद पटाखों की कीमत करीब 6.25 करोड़ रुपये है। प्रतिबंध के बावजूद बेरोकटोक की जा रही थी बिक्री॒ दिल्ली एनसीआर में पटाखों की ब्रिकी और भं?ारण पर पूरी तरह से रोक लगा रखी है। इसके बावजूद गोल्डन ट्रेडिंग एजेंसी ने गांव भोजपुर स्थित गोदामों में भारी मात्रा में पटाखों का भंड़ारण किया था। इसके साथ ही यहां से बिक्री भी की जा रही थी। मेरठ, गाजियाबाद, नोएडा, गुरुग्राम, बुलंदशहर, हापुड़ समेत कई जिलों में पटाखों की सप्लाई हो रही थी। जानकारी के अनुसार अभी करीब सौ ट्रक पटाखे और आने थे। मगर इससे पहले ही पुलिस ने कार्रवाई कर दी। भोजपुर पुलिस की नाक के नीचे हो रही थी पटाखों की बिक्री॒ पटाखों के गोदाम भोजपुर थाने से मात्र आधा किमी दूर हैं। कई महीनों से यहां बिक्री हो रही थी। मगर भोजपुर पुलिस अनजान बनी रही। पुलिस के अनुसार 15 वर्ष से यहां पटाखों के गोदाम बने हुए हैं। इसके लाइसेंस का नवीनीकरण बीते मार्च में ही हुआ है। उपजिलाधिकारी ने बताया कि लाइसेंस नवीनीकरण के लिए स्थानीय पुलिस प्रशासन की आख्या नहीं मांगी गई। इसके बिना ही लाइसेंस का नवीनीकरण हो गया। बता दें कि इससे पूर्व भी पटाखा गोदामों पर कार्रवाई हो चुकी है। बीते वर्ष जीएसटी की टीम भी कार्रवाई कर चुकी है।

40 हजार से अधिक प्रतिभागियों के साथ दौड़ी राजधानी

दिल्ली। केंद्रीय मंत्री मनसुख मंडाविया ने वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन 2025 के 20वें संस्करण को हरी झंडी दिखाई। इस दौरान दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना, सीडीएस जनरल अनिल चौहान, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के त्रिपाठी भी मौजूद रहे। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और दिल्ली सरकार में मंत्री आशीष सूद ने वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन 2025 कार्यक्रम के प्रतिभागियों को सम्मानित किया। इस दौरान दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना ने कहा कि वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन, जो 2005 में शुरू हुई थी, अब 20 वर्ष पूरे कर चुकी है। लोगों में इसका बहुत उत्साह है, मैं तीसरी बार इसमें भाग ले रहा हूं। यहां का माहौल वाकई बहुत सुंदर है। इसमें 40,000 से अधिक लोग भाग ले रहे हैं, जिनमें 10,000 से ज्यादा महिलाएं शामिल हैं। यह एक बेहद सकारात्मक पहलू है। यह इस बात का संदेश देता है कि प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'फिट इंडिया' आह्वान के कारण आज लोग खेलों में अधिक से अधिक भाग लेना और फिट रहना चाहते हैं।

राजधानी में अनोखी जनरल गश्त, रात में विशेष पुलिस आयुक्त भी उतरे सड़कों पर

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में अनोखी जनरल गश्त(रात के समय में सभी पुलिस अधिकारियों को इलाके में उतरना) होने जा रही है। दिल्ली पुलिस में ऐसा पहली बार हो रहा है कि सब-इंस्पेक्टर(एसआई) से लेकर विशेष पुलिस आयुक्त (स्पेशल सीपी) गश्त के दौरान सड़कों पर उतरेंगे। बीती रात गश्त की जांच के लिए पुलिस आयुक्त सतीश गोलचा पहुंचे। एसआई से लेकर स्पेशल सीपी को ये भी बताया गया है कि उन्हें जनरल गश्त के दौरान क्या करना है। सभी बड़े क्राइम सीन या संगठित अपराध वाली जगहों पर पीसीआर वैन, ट्रैफिक कर्मी, गश्त करने वाली मोटरसाइकिल, इंस्पेक्टर व उनसे सीनियर पुलिस अधिकारी अब मौके पर पहुंचेंगे। जरनल गश्त नियमित अंतराल पर हुआ करेगी। दिल्ली पुलिस के विशेष पुलिस आयुक्त(अपराध) देवेश चंद्र श्रीवास्तव की ओर से नौ अक्तबूर को जारी एक आदेशानुसार जनरल गश्त 11 व 12 अक्तूबर की रात 12 बजे से तड़के 4 बजे तक होगी। एसआई से लेकर विशेष सीपी तक के जनरल गश्त के दौरान सड़कों पर उतरेंगे। आदेश के साथ एक परफोमा भी दिया गया है, जिसे जनरल गश्त को लेकर भरकर पुलिस आयुक्त कार्यालय भेजना है। आदेश में ये भी बताया गया है कि फलां रेंक के अधिकारी को कौनसी और क्या रिपोर्ट भेजनी है।

मंत्री, अधिकारियों और कर्मचारियों के सहकारी बैंकों में खुलेंगे खाते: इन्द्राज सिंह

प्रथम पृष्ठ का शेष

इस अवसर पर सहकारी संस्थाओं के माध्यम से दिल्ली में अब तक के सबसे ब? रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह सप्ताह सहकार से समृद्धि की भावना को सशक्त बनाने का प्रतीक होगा, जिसमें सभी बैंक, हाउसिंग सोसायटी, क्रेडिट यूनियन और स्वयं सहायता समूह सक्रिय भागीदारी करेंगे। रविन्द्र इन्द्राज ने कहा कि सहकारिता का अर्थ केवल संस्था चलाना नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग को अवसर देना है और यही हमारा लक्ष्य है। सहकारिता मंत्री ने बताया कि अगले वर्ष आरसीएस कार्यालय के ऐतिहासिक परिसर में शहीद भगत सिंह जी की भव्य प्रतिमा स्थापित की जाएगी। उन्होंने कहा कि सहकारिता की भावना को देशभक्ति और सेवा के आदर्शों से जोड़ना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। सहकारिता मंत्री ने कहा कि दिल्ली में नए सहकारी स्टोर्स शुरू करने की योजना है, जहाँ स्व-सहायता समूहों द्वारा बनाए गए ऑर्गेनिक उत्पाद व अन्य सामान बेचे जाएँगे। इन स्टोर्स के माध्यम से स्थानीय उत्पादकों और महिलाओं को सीधा बाजार मिलेगा, जिससे रोज़गार सृजन और आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

झपटमारी करने वाले दो घोषित बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। द्वारका जिले की जेल बेल सेल टीम ने झपटमारी करने वाले दो घोषित बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से आठ लाख रुपये कीमत की सोने की 6 चेन व अन्य गहनों के अलावा वारदात में इस्तेमाल बाइक बरामद की है। बदमाशों की पहचान जितेंद्र उर्फ पंजाबी (32) व दीपक लोहचब (32) के रूप में हुई है। जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि द्वारका नॉर्थ, मोहन गार्डन, बाबा हरिदास नगर, बिंदापुर, ककरोला, छावला और नजफगढ़ में हुई वारदातों की जांच में सीसीटीवी कैमरों की 400 से अधिक फुटेज की जांच की गई। फुटेज में हर बार बदमाशों की ही बाइक नजर आई।

हाईटेंशन लाइन की चपेट में आया युवक, गंभीर रूप से झुलसा

गुरुग्राम। तावडू। नगर में शनिवार को मकान की छत पर सफाई करने पहुंचे एक युवक के बिजली लाइन में चपेट में आने से गंभीर रूप से झुलस कर घायल होने का मामला सामने आया है। गंभीर हालत में युवक को पहले नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उसे हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया। परिजनों ने हादसे के लिए बिजली निगम पर लापरवाही का आरोप लगाया है। जानकारी के अनुसार ताव? वार्ड नंबर 10 निवासी देवेंद्र शर्मा ने शहर पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उनके मकान के ऊपर से बिजली विभाग की 11,000 वोल्ट की एचटी लाइन गुजर रही है। उन्होंने इस खतरनाक लाइन को हटाने के लिए कई बार विभाग से शिकायत की थी, लेकिन अधिकारियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। देवेंद्र शर्मा के मुताबिक, शनिवार की सुबह उनका बेटा लवकेश (28) घर की छत पर सफाई कर रहा था तभी ऊपर से गुजर रही एचटी लाइन की चपेट में आ गया। हादसे में लवकेश बुरी तरह झुलस गया और मौके पर ही बेहोश होकर गिर पड़ा। परिजनों ने आनन-फानन में उसे अस्पताल पहुंचाया।परिजनों ने इस हादसे के लिए बिजली विभाग की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराते हुए विभाग के दो वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा कि अगर समय रहते विभाग ने शिकायत पर कार्रवाई की होती तो यह हादसा नहीं होता। वहीं इस मामले को लेकर बिजली निगम के एसडीओ ब्रह्म प्रकाश ने कहा कि संबंधित मकान के ऊपर से कोई एचटी लाइन नहीं गुजर रही है। लाइन रास्ते से होकर जा रही है और वह भी काफी दूरी पर है। उन्होंने बताया कि युवक एक लोहे के पाइप को उठा रहा था,जो लाइन में भी? था। जिसके चलते उसके शरीर में करंट दौड़ गया। मामला उनके संज्ञान में है और इसकी जांच की जा रही है।

NAME CHANGE
I MOHD IRFAN S/O ABDUL SALAM R/O 2471, GALI KATRA RAJJI, BEHIND GB ROAD, DELHI-110006 HAVE CHANGED MY NAME TO IRFAN, FOR ALL FUTURE PURPOSES

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Anureet Kaur W/O Gagandeep Singh Jaggi R/O HOUSE NO-4/53, WEST PUNJABI BAGH. Punjabi Bagh S.O, West Delhi, Delhi, 110026,declare that name of mine has been wrongly written as Anureet Kaur Jaggi in my minor son namely Jasraj Singh Jaggi aged 14 years in his birth certificate no MCDOLIR - 0111-004888571.The actual name of mine is ANUREET KAUR , which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Jasveer Kaur w/o Rahul Arora r/o 33/27-28, Ground Floor Near Shyam mandir, Patel Nagar, Delhi-110008 have changed my name to Jasveer Arora Permanently.

NAME CHANGE
I, preeti singhal w/o harish kumar r/o 155, Ground Floor pocket 2 , jasola ,new friends colony, south Delhi-110025 have changed my name to preeti sehrawat Permanently.

NAME CHANGE
I, MOHD AKHALAK ALIAS AKHLAQ S/O BUNDU residing at N-95/3 T-HUTS SHAHZADA BAGH INDER LOK DELHI - 110035 have changed my name to MOHD AKHLAQ for all future purpose.

NAME CHANGE
I, REHMATULA ANSARI S/O ABDUL HAMID residing at A-12/94-A DDA FLATS INDER LOK DELHI - 110035 have changed my name to RAHAMTULLA ANSARI for all future purpose.

NAME CHANGE
I Saleem, S/o Shri Mahmood Ahmed, R/o 667 Block 3, Dakshinpuri extension Dr ambedkar nagar, Have changed my name to Saleem Ahmed For all Future purpose

NAME CHANGE
I, Ritu Chuttani alias Raman D/O Hukum Chand W/O Jai Gopal Chuttani R/O House NO-A-6/272 B, VTC: Paschim Vihar,District: West Delhi, State: Delhi, PIN Code: 110063, have changed my name and shall hereafter be known as RITU CHUTTANI.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, RISHIKESH PANDEY S/o KAPILDEV PANDEY, residing at Kh.No.528, Gali No.9, Rajiv Nagar Bhalaswa Dairy Libas Pur North West Delhi-110042 declare that name of mine and my minor son have been wrongly written as RISHIKESH PANDAY and SHIVAM PANDAY in my minor son namely SHIVAM PADEY aged 15 years in his 10th Class Educational Document. The actual name of mine and my minor son are RISHIKESH PANDEY and SHIVAM PANDEY, respectively which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
This is to inform that Smt. Rashmi has agreed to create mortgage of the described property in favour of My client Aadhar Housing Finance Limited, Delhi Laxmi Nagar Branch, after execution of sale deed in her favour. Seller(s) Namely Sh. Sumit Kumar have agreed to sell their property "Plot No. 08, Area Measuring 65 Sq. Yds., Out of Khasra No. 602M, Difence Empire, Block-L, Situated at Village Tilapta Karanwas, Pargana and Tehsil Dadri, Distt. Gautam Budh Nagar" Hence any other co-sharer(s)/or any other legal heir(s) or any previous owner(s) of the above-mentioned property or any other concerned parties (including but not limited to Banks, Financial institutions, NBFCs, HFCs, Govt. Authorities or Semi-Govt. Authorities/bodies) having any claim against or in respect of the said property or any part thereof by way of sale, exchange, mortgage (equitable or deposit of title deed otherwise) gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, Sub-lease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise, how/whosoever are hereby requested to notify the same in writing to the Undersigned with supporting documentary evidence at the address mentioned herein below within 7 days, from the date hereof, failing which the claim or claims, if any, of such person(s) shall be considered to have been waived and/or abandoned and my client AHFL shall proceed with the disbursement of loan and creation of mortgage on the above-mentioned property.
Dated : 12-10-2025
Place : Delhi
Advocate Ghanshyam Singh,
Ch. E-713 Karkardooma Courts,
Delhi-110032; Ph-8810212071

NAME CHANGE
I hitherto known as RANI alias CHAND RANI D/O JAGDESH LAL W/O JAGDISH LAL R/O 10/112 , Near Mayapuri , Subhash Nagar, Subhash Nagar , West Delhi , Delhi - 110027 have changed my name and shall hereafter be known CHAND RANI.

NAME CHANGE
I Mohmad Babar Ali S/O Kader Ali R/O House No-C-23 Chungi Number 3, Block-C, Lal Kuan, Badarpur, South Delhi, Delhi 110044.HAVE CHANGED MY NAME TO Babar Ali for all future purpose.

NAME CHANGE
I, ELATHARASU BHAVITHA Wife of No-15724243H Rank-LNK Name-DIENSH RR Presently residing at 1/15C, KUDIYANA STREET, OLIMATHI, NEEDAMANGALAM TK, THIRUVARUR DISTRICT, TAMILNADU-614404, have changed my name from ELATHARASU BHAVITHA to BHAVITHA E for all future purposes vide Affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, JEET SINGH S/O SOHAN LAL residing at H NO-49, NANGLI RAJAPUR HAZRAT NIZAMUDDIN DELHI- 110013.have changed my name to JEETMAL SINGH for all future purpose.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Jitendra Karad S/O Bhagwan Sahay Karad, residing at Plot no H-13 ,gali no 2-A , Bihari Colony, Shahdara delhi - 110032, Permanent Address-Plot No-5, Kailash Colony, Amarpali Marg West, Meenawala ,PO:Panchyawala, Jaipur, Rajasthan-302034, declare that name of my mother has been wrongly written as Chosar Karad in my 10th and 12th class educational documents. The actual name of my mother is Chosar Devi,which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, VISHAL CHAND VEDI S/O KISHAN LAL Vedi R/O 138, SUBHASH KHAND, GIRI NAGAR, KALKAJI, SOUTH DELHI, DELHI-110019, declare that name of mine has been wrongly written as VISHAL VEDI in my minor son namely KESHAV VEDI aged 13 years in his School Records. The actual name of mine is VISHAL CHAND VEDI which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Sheela Mandal W/O Manoj Kumar Dhal, R/O D-115, First Floor, Pocket -A 14, Block-D, Kalka Ji Extansion, Kalkaji, PO: Kalkaji, DIST: South Delhi, Delhi-110019, declare that name of mine has been wrongly written as Sheela in my minor daughter Akansha aged 14 years in her school records The actual name of mine is Sheela Mandal,which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, MOHAN SINGH GEHLOT S/o PREM SINGH GEHLOT Permanent R/o 138, Gram - Nandavel, M. No. 6 SE 303D, Village , Nandavel, Teshil, Dalouda, District - Mandsour, Nandwel, PO: Nandvel , DIST : Mandsour, Madhya Pradesh – 458669 and Presently Residing at: QTR 1654, 3rd Floor, Pocket 4, Type – 2, Lodhi Road Complex, Near Nehru Stadium New Delhi - 110003 have changed the name of my minor daughter namely RAJ WHERE KUNWAR aged 7 years and she shall hereafter be known as RAJ SHREE KUNWAR.

NAME CHANGE
I,Tarkeshwar Ojha S/O Ram Iqbal Ojha R/O Uprahi Mohalla, H No-251, Mahipalpur, South West Delhi, Delhi-110037, have changed the name of my minor son Priyanshu Ojha 14 years, and he shall hereafter be known as Avinash Kumar Ojha.

सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण जानकारी हेतु यह सूचित किया जाता है कि मैं, सुधिष्ट झा पुत्र प्रेम चंद झा, निवासी वीपी-54, इंदर एन्क्लेव-II, निठारी, उत्तर पश्चिम दिल्ली, दिल्ली, 110086, घोषित करता/करती हूँ कि मेरे नाबालिग पुत्र आलोक झा, उम्र 15 वर्ष, के स्कूल रिकॉर्ड में मेरी पत्नी का नाम गलती से प्रीति लिख दिया गया है। मेरी पत्नी का वास्तविक नाम संगीता है, जिसे तदनुसार संशोधित किया जाए।

NAME CHANGE
I, DEMUDAMMA mother of No-2609477A Rank-HAV Name-SATTI BABU MANDALA residing at VILL-YERRI NAIDU PALEM, PO-DOSURU, TEHSIL-ATCHUTAPURAM, DIST-ANAKAPALLI, ANDHRA PRADESH-531011, have changed my name from DEMUDAMMA to MANDALA DEMUDAMMA for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 15/08/1956 instead of my correct date of birth as 12/04/1960 Vide Affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public Delhi

NAME CHANGE
I, PAIDAYYA Father of No-2609477A Rank-HAV Name-SATTI BABU MANDALA residing at VILL-YERRI NAIDU PALEM, PO-DOSURU, TEHSIL-ATCHUTAPURAM, DIST-ANAKAPALLI, ANDHRA PRADESH-531011, have changed my name from PAIDAYYA to MANDALA PYDITALLI for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 10/06/1952 instead of my correct date of birth as 11/11/1950 Vide Affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, No-2609477A Rank-HAV Name-SATTI BABU MANDALA residing at VILL-YERRI NAIDU PALEM, PO-DOSURU, TEHSIL-ATCHUTAPURAM, DIST-ANAKAPALLI, ANDHRA PRADESH-531011, have changed my minor daughter's name from MANDALA KRISHNA GOUTHIMI to MANDALA KRISHNA GOWTHAMI for all future purposes vide affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, JATIN S/O RAJ KUMAR residing at D-34, JHILMIL COLONY, DELHI-110095. have changed my name to JATIN KUMAR for all future purposes.

फर्जी हस्ताक्षकर कर विधवा भाभी के खाते से निकाले 6.30 लाख रुपये

गाजियाबाद। कविनगर थाना क्षेत्र के विवेकानंद विहार में रहने वाली सीमा ने अपने जेठ की बेटी पर धोखाधड़ी का आरोप लगाकर मुकदमा दर्ज कराया है। पीड़िता का आरोप है कि फर्जी हस्ताक्षर कर उनके खाते से लाखों रुपये और लॉकर से उनके और सास के जेवर निकालकर ले गई है। एसीपी कविनगर सूर्यबली मौर्य ने बताया कि विवेकानंद नगर में रहने वाली सीमा के मुताबिक वह विधवा हैं और पीडब्ल्यूडी में नौकरी करती हैं। कम शिक्षित होने के चलते बैंक से रुपये निकालने और जमा करने के लिए अपने जेठ की बेटी सोनम को साथ ले जाती थी। चार दिन पूर्व वह आरडीसी स्थित बैंक में पासबुक में एंट्री कराने गई। जहां पता चला कि वर्ष 2024 से 10 सितंबर 2025 तक उनके खाते से 6.30 लाख रुपये निकाल लिए गए। जांच पड़ताल में पता चला कि लॉकर से सोनम ने सीमा और उसकी सास के लाखों रुपये के गहने भी फर्जी हस्ताक्षर करके निकाल लिए। सीमा ने सोनम को फोन कर विरोध जताया तो उसने घर आकर बात करने को कहा। इसके बाद से सोनम घर से कहीं चली गई। एसीपी ने बताया कि पीड़िता की तहरीर पर आरोपी सोनम के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है

NAME CHANGE
I, ASHTHA W/O JANARDAN R/O H.NO.-115, A-4 BLOCK SULTAN PURI, NORTH WEST DELHI-110086 have changed my name and shall hereafter be known as AASTHA for all future purposes.

NAME CHANGE
I, JANARDAN S/O RAM PHER R/O H.NO.-115, A-4 BLOCK SULTAN PURI, NORTH WEST DELHI-110086 have changed the name of my minor son AADITYA KUMAR aged 17 years and he shall hereafter be known as AADITYA KAUL.

NAME CHANGE
I, JC-334186A Rank-SUB Name-VINAYA KUMAR SINGH Presently residing at VPO-GAHMAR, TEH-ZAMANIA, DIST-GHAZIPUR, UTTAR PRADESH-232327, have changed my wife's name from RENU SINGH to KUMARI RENU SINGH for all future purposes vide Affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, JC-334186A Rank-SUB Name-VINAYA KUMAR SINGH Father of RAJBIR SINGH Presently residing at VPO-GAHMAR, TEH-ZAMANIA, DIST-GHAZIPUR, UTTAR PRADESH-232327, have changed my minor son's name from RAJBIR SINGH to RAJVIR SINGH for all future purposes vide Affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, Muzibul Rehman S/o Ali Hasan R/o B-87, F/F, Kh. No. 52/13/2, Gali No. 6, Rao Vihar, Nangloi, Delhi-110041 have changed my name to Mujeebul Rahman for all future purposes

NAME CHANGE
I, NO-15343784L Rank-HAV Name-SANJEEV KUMAR residing at VILL-BADHEDI KHURD, PO-BADHEDI MAZBATH, TEHSIL-DEOBAND, DIST-SAHARANPUR, UTTAR PRADESH-247554, have changed my wife's name from SUMAN DEVI to SUMAN RANI for all future purposes vide affidavit dated 11/10/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, Muskan D/O Gagan Ahuja W/O Neeraj Verma R/O H NO G-34, Malka Ganj Central Delhi 110007 Have changed my name to Muskan Ahuja for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Dipika Singh D/O Birendra Kumar Singh W/O Bipendra Jha R/O D3-1603, Divyansh Onyx, Jaipuria Sunrise Greens, NH-24 Opposite Manipal Hospital Shahpur Bamhera Ghaziabad UP 201002 Have changed the name of my minor son from Triyam to Triyamb Jha for all future purposes.

NAME CHANGE
I, RAHUL BAISLA S/O RAVINDER SAIN BAISLA R/O A-504, ANAND VAS, SHAKUR PUR, NORTH WEST DELHI, DELHI-110034 have changed the name of my daughter YASHIKA SAIN BAISLA aged 14 years and she shall hereafter be known as YASHIKA BAISLA.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, HARINDER PAL S/O UMA DATT R/O H.NO- 47D, Sec-04, Pushp Vihar, Saket, New Delhi -110017, declare that name of my minor son has been wrongly written as DIVYANSH PAL in my minor son namely DIVAYANSH AGGARWAL aged 13 years in his school records. The actual name of my minor son is DIVYANSH AGGARWAL, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, NEHA KUMARI W/o J.S JAIMOHAN R/o 172,Tilak khand ,Giri Nagar, kalkaji, New Delhi Distt. South East Delhi, Delhi-110019 declare that name mine has been wrongly written as NEHA MOHAN in my minor daughter namely AADHYA PILLAI, aged 14 years in his birth certificate No.MCDOLIR-0111-004858140 and school record. The actualname of mine is NEHA KUMARI which may be amended accordingly.It is certified that I have complied with other legal requirements in this connection.

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

नमो भारत ट्रेन धारूहेड़ा के बजाय बावल तक दौड़ेगी, देखें कहां-कहां होंगे स्टॉप

एजेंसी

हरियाणा. सरकार ने नमो भारत ट्रेन के पहले चरण में दिल्ली से बावल तक के रूट को मंजूरी दे दी है। पूर्व योजना के मुताबिक, दिल्ली से धारूहेड़ा तक नमो भारत ट्रेन के संचालन की मंजूरी थी। इस बदलाव से हजारों यात्रियों को लाभ पहुंचेगा। बता दें कि दिल्ली से गुरुग्राम होते हुए राजस्थान के शाहजहांपुर तक नमो भारत ट्रेन के संचालन की योजना है।हरियाणा रैपिड मेट्रो ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन (एचएमआरटीसी) ने इस बदलाव की योजना के सिलसिले में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) को पत्र लिख दिया है। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने बताया कि पहले यह योजना धारूहेड़ा तक थी। गत 18 सितंबर को आयोजित बैठक में उन्होंने इस योजना पर आपत्ति जताई थी। उन्होंने आग्रह किया था कि इस योजना के तहत बावल तक नमो भारत ट्रेन का संचालन किया जाए।

इसको लेकर उन्होंने केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल को भी पत्र लिखा था। उनसे आग्रह किया था कि नमो भारत ट्रेन का संचालन हरियाणा-राजस्थान बॉर्डर तक स्थित बावल क्षेत्र तक किया जाए। इस सिलसिले में उन्होंने मनोहर लाल को पत्र भी लिखा।राव इंद्रजीत की आपत्ति पर गत 26 सितंबर को एचएमआरटीसी के प्रबंध निदेशक डॉ. चंद्रशेखर खरे ने एनसीआरटीसी को पत्र लिखकर नमो भारत ट्रेन का संचालन धारूहेड़ा की बजाय बावल तक करने की सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान कर दी है। पत्र में कहा है कि सरकार ने विचार-विमर्श के बाद निर्णय लिया है।पत्र के मुताबिक डॉ. खरे ने कहा कि मई माह में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में लिए गए फैसले यथावत रहेंगे। सिर्फ नमो भारत ट्रेन का संचालन धारूहेड़ा की बजाय बावल समझा जाए। उन्होंने स्पष्ट किया है कि बावल से आगे किसी भी विस्तार का खर्चा हरियाणा सरकार वहन नहीं करेगी।

बावल हरियाणा का बड़ा औद्योगिक क्षेत्र

केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने कहा कि अधिकारियों ने उन्हें बताया था कि धारूहेड़ा से आगे नमो भारत के लिए यात्रियों की संख्या पर अभी अनिश्चितता है। राव ने आपत्ति जताते हुए कहा था कि धारूहेड़ा से आगे बावल हरियाणा का एक बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है।

कहां-कहां स्टेशन बनेंगे

दिल्ली के सराय काले खां, आईएनए, मुनिरका, एरो सिटी में नमो भारत ट्रेन के स्टेशन बनेगा। गुरुग्राम में साइबर सिटी, इफ्को चौक, राजीव चौक, हीरो होंडा चौक, खेड़की दौला, मानेसर, पचगांव, बिलासपुर चौक, धारूहेड़ा, रेवाड़ी और बावल में स्टेशन बनेंगे।

शर्मनाक : करंट भरी कंटीली तारों ने छीनी मां की सांसें, छाती से चिपका रोता रहा नन्हा बंदर...

एजेंसी

बहादुरगढ़ (प्रवीण कुमार धनखड़). बहादुरगढ़ शहर के सेक्टर-6 स्थित एक कोठी में लगाई गई कंटीली तारें मासूम जीवों के लिए मौत का जाल बन गई हैं। इन तारों में रात के समय करंट छोड़ा जाता है। इसी वजह से शुक्रवार की रात एक मादा बंदर की दर्दनाक मौत हो गई। इससे पहले मंगलवार को भी इसी मकान में एक बंदर की जान गई थी। चंद दिनों में दो मासूमों की मौत से जीवप्रेमी आहत हैं और उन्होंने इसे दुर्घटना के बजाय हत्या करार दिया है। पुलिस को शिकायत देकर न्याय की गुहार लगाई है।

शनिवार की सुबह यह दूसरा मामला सामने आया। इस दफा दृश्य इतना हृदयविदारक था कि मृत मादा बंदर की छाती से उसका बच्चा चिपका हुआ था। वह लगातार चीख रहा था, शायद उसे एहसास नहीं था कि उसकी मां अब कभी नहीं लौटेगी।

इस दृश्य को देखकर जीवप्रेमियों की आंखें नम हो गईं। घटना से आहत पशु प्रेमियों ने पुलिस को शिकायत दी। चूंकि मामला मूक प्राणी का है तो पुलिस ने कोई खास गंभीरता नहीं दिखाई। हालांकि बाद में पुलिस ने मकान मालिक को तारें हटवाने के निर्देश दिए, जिसके बाद उन्हें हटाने का काम शुरू भी हो गया है।

जानकारी के अनुसार, सत्ताधारी दल के कुछ नेता आरोपी परिवार के पक्ष में थाने में पैरवी करते देखे गए। वहीं, यह भी स्पष्ट नहीं हो सका है कि मृत बंदर के शव का क्या किया गया और उसका मासूम बच्चा अब कहां है। ? यह सिर्फ लापरवाही नहीं बल्कि गंभीर अपराध है। इसमें एक जीव की जान गई है और एक बच्चा अनाथ हो गया है। ऐसे में कानूनी कार्रवाई बनती है, जिनमें सजा का स्पष्ट प्रावधान है। उन्होंने कहा कि अगर थाना पुलिस ने कार्रवाई नहीं की तो वे उच्चाधिकारियों के पास जाएंगे। इस संबंध में उन्होंने एक्स पर सीएमओ हरियाणा को भी टैग कर मामले से अवगत कराया है।

बताया जा रहा है कि दोनों मामलों में बन्दरों के शवों को गायब कर दिया गया ताकि पोस्टमार्टम हो सके। वहीं, जीवप्रेमियों का कहना है कि पुलिस ने पहले वाले मामले में कार्रवाई की होती तो आज एक बच्चे के सिर से उसकी मां की ममता का साया नहीं उठता।

Y Puran Kumar के सुसाइड मामले में घिरी हरियाणा सरकार, अभी तक नहीं हुआ पोस्टमार्टम... परिवार मांगों को लेकर अड़ा

एजेंसी

चंडीगढ़. आईजी वाई पूरन कुमार के सुसाइड मामले में घिरी हरियाणा सरकार ने शनिवार को बड़ी कार्रवाई की। सुबह रोहतक के एसपी नरेंद्र बिजारनिया को हटाकर सुरेंद्र भौरिया को कार्यभार सौंप दिया। इसके बावजूद आईजी के शव का 5वें दिन भी पोस्टमार्टम नहीं हो सका। पीड़ित परिवार व दलित समाज की 31 सदस्यीय कमेटी ने साफ कहा कि डीजीपी शत्रुजीत कपूर व रोहतक के पूर्व एसपी नरेंद्र बिजारनिया को तुरंत बर्खास्त व गिरफ्तार किया जाए, उसके बाद ही पोस्टमार्टम कराया जाएगा। रविवार दोपहर 2 बजे चंडीगढ़ में महापंचायत होगी। इसमें आगामी निर्णय लिया जाएगा।

वहीं, मामले में सीएम नायब सिंह सैनी की पहली प्रतिक्रिया आई। उन्होंने कहा, यह दुखद घटना है। जब जापान में सूचना मिली, तुरंत अधिकारियों को आईजी की पत्नी के साथ वापस भेजा। सरकार पूरी जांच कराएगी। किसी व्यक्ति को कोई तंग करेगा तो चख्शा नहीं जाए?गा। परिवार के साथ अन्याय हुआ है, सरकार न्याय देने का काम करेगी। दोषी कितना भी प्रभावशाली व्यक्ति क्यों न हो, उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। वहीं, फतेहाबाद, कैथल, नारनौल, जींद, पानीपत, गुरुग्राम, रोहतक समेत कई जिलों में दलित संगठनों ने कैंडल मार्च निकाला और प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। ऐसे में माना जा रहा है कि डीजीपी को लेकर सरकार जल्द कोई निर्णय ले सकती है।

सुबह 8:30 बजे पुलिस ने सेक्टर-16 स्थित सिविल अस्पताल से वाई पूरन कुमार का शव पीजीआई के पोस्टमार्टम हाउस में पहुंचा दिया। परिजनों ने आरोप लगाया कि बिना सूचना दिए शव ले जाया गया है। तब चंडीगढ़ के डीजीपी सागर प्रीत हुड्?डा सीनियर आईएएस अमनीत पी. कुमार के सेक्टर-24 स्थित आवास पर पहुंचे। डीजीपी

ने कहा कि परिवार की मंजूरी के चिना पोस्टमार्टम नहीं होगा। पोस्टमार्टम पीजीआई में ही होना है। 5 डॉक्टरों का बोर्ड बनाया गया है। सूत्रों का कहना है कि सीएम आवास पर शुक्रवार देर रात उच्चस्तरीय बैठक हुई। शनिवार सुबह भी बैठक हुई। केंद्र सरकार तक मामला पहुंचने, आईएएस एसोसिएशन के कड़े तेवर और दलित समाज की एकजुटता से बढ़ रहे दबाव के बाद हरियाणा सरकार ने सुबह 11:50 बजे रोहतक एसपी को हटाने के आदेश जारी कर दिए। इसके बाद भी परिवार आईजी के शव का पोस्टमार्टम कराने को सहमत नहीं हुआ। पीड़ित परिवार को मनाने के लिए हरियाणा सरकार ने दोपहर 12:00 बजे मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी, सीएम के मुख्य प्रधान सचिव राजेश खुल्लर, गृह विभाग को एसीएस डॉ. सुमिता मिश्रा, एससी समाज से आने वाले कैबिनेट मंत्री कृष्ण लाल पंवार व कृष्ण बेदी को अमनीत के आवास पर भेजा। वहां 3 घंटे चली बातचीत में काई नतीजा नहीं निकला।परिवार ने साफ कहा कि जब तक डीजीपी और एसपी पर कार्रवाई नहीं होती, तब तक शव का पोस्टमार्टम नहीं कराया जाएगा। इसी दौरान कैबिनेट मंत्री अनिल विज भी पहुंचे और परिजनों को सांत्वना दी। 3 बजे सरकार का प्रतिनिधिमंडल भी वापस चला गया और सीएम को जानकारी दी। इस बीच सीएम ने पंचकूला में भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में आईजी बाई पुरन कुमार के निधन पर शोक जताया। दो मिनट का मौन रखा गया। सीएम ने कहा कि दोषी कोई कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसे बख्शा नहीं जाएगा। इस बैठक के बाद सीएम की मंत्रियों के साथ बैठक हुई। तीनों अधिकारियों व दोनों मंत्रियों को शाम 5 बजे फिर से अमनीत के आवास पर भेजा गया, लेकिन परिवार नहीं माना। शाम 7 बजे मंत्री कृष्ण पंवार व कृष्ण बेदी पीड़ित परिवार से फिर से मिलने पहुंचे। उन्होंने सरकार का संदेश परिजनों को दिया। परिजनों ने कहा कि डीजीपी व एसपी पर कार्रवाई को लेकर सरकार के फैसले की कॉपी चाहिए। 11 बजे मंत्री बिना कोई हल निकले निकल गए। सूत्रों का कहना है कि केंद्र की और से पल-पल की रिपोर्ट ली जा रही है। केंद्र के निर्देश के बाद ही एसपी को हटाया गया है। डीजीपी को लेकर भी केंद्र के निर्देश पर जल्द निर्णय लिया जा सकता है।

जिन अधिकारियों की प्लानिंग से डूब रहा गुड़गांव, वो अधिकारी दे रहे डेनमार्क को जलनिकासी की सलाह

एजेंसी

गुड़गांव, (ब्यूरो). डेनमार्क एंबेसी के प्रतिनिधिमंडल ने शुक्रवार को नगर निगम गुरुग्राम कार्यालय का दौरा किया और शहर के जल प्रबंधन तथा इंफ्रास्ट्रक्चर सुधारों पर अधिकारियों के साथ विस्तृत बैठक की। बैठक में अतिरिक्त निगमायुक्त यश जालुका ने प्रतिनिधिमंडल को गुरुग्राम की टोपोग्राफी और बरसाती पानी के प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शहर का जल निकासी ढांचा अरावली क्षेत्र से नजफगढ़ ड्रेन की ओर जाता है। अरावली क्षेत्र में चेक डेम और क्रिक्स का निर्माण किया गया है, जिससे बारिश के पानी को नियंत्रित किया जा सके।जल निकासी के लिए गुरुग्राम में तीन मास्टर ड्रेन बनाए गए हैं, जबकि चौथा ड्रेन निर्माणाधीन है और अगले 3-4 महीनों में पूरा होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त, शहर की ग्रीन बेल्ट को सड़क के स्तर से नीचे लाने की योजना पर काम चल रहा है। शहर के तालाबों को पुनर्जीवित करने की भी योजना

बनाई जा रही है, ताकि बरसाती पानी को तालाबों में स्टोर किया जा सके और जलभराव की समस्या कम हो।

नगर निगम ने भविष्य की योजनाओं में फ्लड डिटेक्शन सेंसर और अधिक जलभराव वाले क्षेत्रों में ऑटोमैटिक पंप लगाने की रूपरेखा साझा की। साथ ही, रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को बड़े बिल्डिंग और सोसायटी में लागू करने पर जोर दिया गया।

बैठक में सिवरेज ट्रीटमेंट और पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था पर भी चर्चा हुई, जिसमें शहर की पानी की गुणवत्ता और प्रबंधन को और बेहतर बनाने के उपायों पर विचार किया गया। अधिकारियों ने बताया कि ये सभी प्रयास आगामी बरसात से पहले पूरे किए जाएंगे, ताकि गुरुग्राम में जलभराव की समस्या से निपटा जा सके और शहर की जल निकासी प्रणाली अधिक प्रभावी बने। एंबेसी प्रतिनिधियों ने आने वाले दिनों में एक वर्कशॉप आयोजित करने की बात कही। बैठक में जीएमडीए के कार्यकारी अभियंता विक्रम सिंह तथा निगम के कार्यकारी अभियंता प्रदीप कुमार भी उपस्थित रहे।

केएमपी पर बड़ा हादसा: खड़े रोड रोलर से टकराई कार, कांग्रेस जिलाध्यक्ष के बेटे सहित 4 युवकों की मौत

एजेंसी

गोहाना(सुनील). हरियाणा के सोनीपत स्थित बरोदा क्षेत्र थाना में रुखी टोल प्लाजा के पास शनिवार की देर शाम तेज रफ्तार रोड रोलर से भिड़ गई। हादसे में कार सवार रोहतक के कांग्रेस जिलाध्यक्ष (ग्रामीण) के बेटे समेत चार युवकों की मौत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए।

रोहतक के कांग्रेस जिला अध्यक्ष बलवान रंगा के बेटे सोमबीर अपने तीन दोस्तों के साथ शनिवार की देर शाम जींद से लौट रहे थे। इसी दौरान जम्मू-कटरा एक्सप्रेस-वे पर रूखी टोल प्लाजा के पास रोड रोलर में कार टकरा गई।

टक्कर इतनी भयंकर थी कि सोनट गाड़ी के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गए। घटना में सोमबीर (27), उनके दोस्त अंकित (21), लोकेश (29) व दीपांकर (23) की मौत हो गई। सभी रोहतक के गांव घिलौड़ के थे। हादसे की सूचना मिलने पर चौकी भैसवान खुर्द की टीम मौके पर पहुंची।

पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त कार कब्जे में ली। हादसा कैसे हुआ। इसकी जांच की जा रही है।मरने वालों में कांग्रेस नेता का बेटा भीजानकारी के अनुसार, अंकित, लोकेश, दीपाकर, सोमबीर रोहतक जिले गांव घिलोड़ के रहने वाले है और सभी किसी काम से जींद से वापिस आ रहे थे। उसी दौरान जम्मू कटरा एक्सप्रेस पर गांव रूखी के पास बने एक्सप्रेस पर टोल के नजदीक वहां रोड बना रहे एक रोड रोलर से जबरदस्त टक्कर हो गई। जिसके बाद एक युवक की मौके पर मौत हो गई और अन्य तीन युवकों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां पर उन्हें मृत घोषित कर दिया।

हरियाणा को जल्द मिलने वाला है एक नया जिला, पूरी होने चाहिए ये शर्तें... जानिए पूरी डिटेल

एजेंसी

चंडीगढ़. हरियाणा में नए जिले बनाने की योजना पर काम चल रहा है। 1 नवंबर 2025 को हरियाणा दिवस पर सरकार 23वें जिले की घोषणा करने की तैयारी में है।

सरकार के पास 10 जिलों का प्रस्ताव विचाराधीन इनमें असंध, पटौदी, डबवाली, हांसी व गोहाना शामिल हैं। सूत्रों का कहना है कि सबसे पहले गोहाना, हांसी व डबवाली में से किसी एक को जिला बनाने की घोषणा होगी। बाकी को लेकर जनगणना के बाद फैसला लिया जाएगा।

अब तक पुनर्गठन उप-समिति को 73 प्रस्ताव मिले हैं। इनमें 10 नए जिले, 14 उपमंडल, 4 तहसील और 27 उप-तहसील बनाने के प्रस्ताव हैं। नए जिले के लिए 125 से 200 गांव, 4 लाख से अधिक आबादी और 80 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल होना जरूरी है। समिति ने बैठक कर उपमंडल, तहसील और उप-तहसील बनाने के लिए भी अलग-अलग मानदंड तय किए हैं। बैठक में लिए गए निर्णय मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी को

अनुमोदन के लिए भेजे जाएंगे।

प्रशासनिक इकाइयों के पुनर्गठन को लेकर पिछले दिनों बैठक हुई थी। इसकी अध्यक्षता कैबिनेट मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने की थी।

मंत्री ने कहा था कि सरकार जनता व जनप्रतिनिधियों की मांगों के अनुसार प्रशासनिक इकाइयों का पुनर्गठन करने को प्रतिबद्ध है।

पुनर्गठन उप-समिति की इस 5वीं बैठक में बतौर सदस्य शिक्षा मंत्री महीपाल ढांडा व कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा भी मौजूद रहे थे।

2016 में चरखी दादरी बना था 22वां जिला

1 नवंबर 1966 को हरियाणा अलग प्रदेश बना। तब 7 जिले थे। इनमें अम्बाला, जींद, हिसार, महेंद्रगढ़, गुरुग्राम, करनाल व रोहतक शामिल थे।

1972 में भिवानी व सोनीपत, 1973 में कुरुक्षेत्र, 1975 में सिरसा, 1979 में फरीदाबाद, 1989 में यमुनानगर, कैथल, रेवाड़ी, पानीपत, 1995 में पंचकूला, 1996 में फतेहाबाद, 1997 में झज्जर, 2005 में नूंह, 2008 में पलवल, 2016 में चरखी दादरी को जिला बनाया गया।

गुरुग्राम में दो शॉर्प शूटरों का एनकाउंटर, दोनों बदमाश हुए घायल... पंजाब से जुडे हैं अपराधियों के तार

एजेंसी

गुरुग्राम. रविवार सुबह पुलिस और बदमाशों में एनकाउंटर हुआ है । पुलिस ने एनकाउंटर में दो बदमाशों को धर दबोचा है । एनकाउंटर सोहना विधायक तेजपाल तंवर के गांव रामगढ के पास हुआ द्य पुलिस की सेक्टर 39 और सेक्टर 40 क्राइम ब्रांच को जानकारी मिली कि दो शार्प शूटर एरिया में घूम रहे हैं ।

सुबह करीब 2 बजे गुरुग्राम पुलिस की सेक्टर 39 सेक्टर 40 क्राइम ब्रांच को सूचना मिली कि सेक्टर 63 के पास रामगढ और मैदावास गांव के इलाके में दो शार्प शूटर घूम रहे हैं । पुलिस ने नाके बंदी की इस दौरान दो व्यक्ति आते हुए दिखाई दिए पुलिस ने उन्हें रुकने का इशारा किया तो बदमाशों ने पुलिस टीम पर फायर करना शुरु कर दिया।पुलिस टीम ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए फायर किया जिसमें दोनों बदमाशों के पैरों में गोली लगी द्य पुलिस की टीम ने दोनों बदमाशों को हिरासत में ले लिया और अस्पताल में भर्ती कराया।

पुलिस प्रवक्ता संदीप कुमार ने बताया कि दोनों बदमाश अमृतसर इलाके के रहने वाले हैं। दोनों बदमाशों ने गुरुग्राम पुलिस की टीम पर 7 राउंड फायरिंग की जबकि पुलिस की तरफ से अपने बचाव में चार राउंड फायरिंग की गई । दोनों बदमाशों की पहचान सुखनजीत उर्फ गंजा और

सुमित शर्मा के रुप में हुई है । दोनों आरोपियों के पास से पुलिस को एक एक देसी पिस्टल और दो जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं । अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद इनको गिरफ्तार किया जाएगा और पूछताछ की जाएगी।

हरियाणा में इस दिन फिर करवट लेगा मौसम, होगी झमाझम बारिश, तापमान में आएगी भारी गिरावट

एजेंसी

हरियाणा.हरियाणा में मौसम ने एकदम करवट ले ली है. पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी का असर अब मैदानी इलाकों में साफ दिखाई देने लगा है. दिन में धूप जरूर खिल रही है, लेकिन जैसे ही सूरज ढलता है, ठंडक महसूस होने लगती है. रात के तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है. जिससे सुबह और देर रात ठिठुरन बढ़ गई है. दरअसल हरियाणा में उत्तर-पश्चिमी हवाओं से तापमान में लगातार चौथे दिन भी गिरावट दर्ज की गई है.

इस कारण हिसार, महेंद्रगढ़ और फरीदाबाद में तापमान 17 डिग्री के करीब पहुंच गया है. भारत मौसम विज्ञान विभाग का कहना है कि दोपहर के समय 15 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से उत्तर-पश्चिमी हवाएं चल सकती हैं. इससे अधिकतम तापमान भी सामान्य से 1 से 2 डिग्री तक कम रह सकता है. बता दें कि हरियाणा में पश्चिमी विक्षोभ के कारण अक्टूबर के 9 दिनों में करीब 30 एमएम बारिश हो चुकी है. आमतौर पर इस दौरान 4 एमएम बारिश होती है, मगर इस बार 649 प्रतिशत अधिक बारिश हुई है. इससे पहले 2004 में पूरे अक्टूबर में 58.4 एमएम बारिश हुई थी.

बारिश के कारण हरियाणा के अधिकांश जिलों में तापमान सामान्य से नीचे चला गया है. शनिवार को भी प्रदेश में महेंद्रगढ़ की रात सबसे ठंडी रही. यहां रात का तापमान 17.1 डिग्री दर्ज किया गया है. रात के समय ठंडक महसूस होने से कूलर व एसी लोगों ने बंद कर दिए हैं. वहीं कल यानी 11 अक्टूबर को करनाल ओर पलवल जिले में अधिकतम तापमान 32.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है. आज हरियाणा में सुबह का तापमान 17एष्ट है.

यह रहेगी आने वाले दिनों की स्थिति

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, पश्चिमी विक्षोभ के आगे जाने से 14 अक्टूबर तक मौसम आमतौर पर खुश्क रहने की संभावना है. दिन के समय पड़ रही धूप व रात के समय ठंडक बढ़ने पर यह मौसम रबी की फसलों की बुआई के लिए बिल्कुल उपयुक्त समय है. इस मौसम में किसानों को सरसों, चना व गेहूं की बुआई करनी चाहिए, ताकि इन फसलों की पैदावार अच्छी हो. इसी तरह 15 अक्टूबर को ठंडी हवाएं चलने की संभावना है. यह दिन मौसम के लिहाज से आरामदायक रहेगा. तापमान 24 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा. जबकि 16 अक्टूबर को हरियाणा में फिर से बारिश की संभावना है. इस दिन तापमान में गिरावट आएगी और 25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहेगा. 17 अक्टूबर को प्रदेश के मौसम में बदलाव देखने को मिल सकता है. दिन का तापमान 28 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है और बादल छाएं रहेंगे.वही 18 अक्टूबर को हरियाणा में मौसम सामान्य रहने की उम्मीद है. तापमान 26 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा.

करवा चौथ पर पति ने पत्नी और बेटी को किया आग के हवाले, फिर...; रेवाड़ी में दिल दहला देने वाली घटना

एजेंसी

हरियाणा. गुरुग्राम से सटे हरियाणा के रेवाड़ी जिले के रामपुरा गांव में करवा चौथ की रात एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया। पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखने वाली भूखी-प्यासी पत्नी को उसके शराबी पति ने थिनर डालकर आग के हवाले कर दिया। मां को बचाने आई बेटी को भी आग के हवाले कर दिया। इसके बाद उसने खुद को भी आग लगा ली। पति-पत्नी की हालत गंभीर होने पर रोहतक रेफर कर दिया गया है।

रामपुरा गांव में रहने वाला मनोज पेंटर का काम करता है। वह शराब पीने का आदी है। उसके परिवार में पत्नी और एक बेटी है। करवा चौथ के दिन उसकी 37 वर्षीय पत्नी अनिता ने पति मनोज की लंबी आयु की कामना करते हुए व्रत रखा था। उसने पूरे परिवार के लिए खाना बनाया और चांद देखकर व्रत खोलने के लिए पति का इंतजार करने लगी।

पति मनोज रात 8:30 बजे काम से लौटा

तो वह शराब पिये हुए था। बोतल अनिता पर डालकर आग लगा दी। मां को जलता देख 16 वर्षीय बेटी प्रिया उसे बचाने आई तो उसने उसे भी आग के हवाले कर दिया। पत्नी-बेटी को जलता देखकर मनोज ने खुद को भी आग लगा ली।

पति-पत्नी की हालत गंभीर, बेटी भी झुलसी

शोर सुनकर पहुंचे पड़ोसियों ने तत्काल रामपुरा थाना पुलिस को सूचना दी। तीनों को जली हुई हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से मनोज और अनिता को रोहतक पीजीआईएमएस के लिए रेफर कर दिया गया।

NAME CHANGE

I, hitherto known as G C MALIK alias GOPI CHAND MALIK S/o AMIR CHAND MALIK R/o 1227, Sector-9, Faridabad Sector-7 Faridabad, Ballabgarh, Haryana-121006, have changed my name and shall hereafter be known as GOPI CHAND MALIK.

PUBLIC NOTICE

I, KANWAR PAL S/O JEETRAM R/O 196, Village-Karna, PO- Palwal, District-Palwal, Haryana -121102, have changed the name of my minor daughter AVNI alias SHAYISHA KHAN aged, 16 years and she shall hereafter be known as AVNI. I have only changed my minor daughter's name and not her religion.

'पूरा पंजाब IPS वाई. पूरन कुमार की पत्नी के साथ', परिवार से मिले मुख्यमंत्री भगवंत मान, बोले- क्या कोई साजिश है?

एजेंसी

हरियाणा. वरिष्ठ IPS अधिकारी वाई. पूरन कुमार की कथित आत्महत्या के मामले में हरियाणा से लेकर पंजाब तक राजनीतिक माहौल गर्मा गया है. पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने शनिवार को उनके परिवार से मुलाकात की. इस दौरान उन्होंने हरियाणा सरकार से इस मामले में इस मामले में इंसाफ सुनिश्चित करने की अपील की. वहीं इससे पहले पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने परिवार से मुलाकात की थी.

मुख्यमंत्री ने आईएएस अधिकारी अमनीत पी कुमार से मुलाकात की और उनका दुख साझा किया. मान ने कहा कि यह घटना बेहद दुखद है, इस दुख की घड़ी में पूरा पंजाब उनकी बेटी अमनीत के साथ खड़ा है. उन्होंने आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की. मान ने साथ ही, पंजाब के गवर्नर और चंडीगढ़ प्रशासक गुलाब चंद कटारिया से भी इस मामले में दखल देने की गुजारिश की.

मुख्यमंत्री बोले- क्या यह कोई साजिश है?

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने कहा कि दोनों ने अपनी जिंदगी में लोगों को इंसाफ दिलाने का काम किया, लेकिन आज उनका परिवार खुद इंसाफ मांग रहा है. मान ने पूरन के 'अंतिम नोट' का जिक्र करते हुए कहा कि उन्हें हर दिन अपमान का सामना करना पड़ता था. उन्होंने सवाल उठाया, 'क्या यह कोई साजिश है कि गरीब और सामान्य परिवारों से आने वाले लोग ऊंचे ओहदों पर पहुंचें तो उन्हें अपमानित किया जाता है?'

31 सदस्यीय समिति का गठन, गिरफ्तारी पर अड़ा परिवार

पूरन कुमार के परिवार और अनुसूचित जाति के लोगों ने 31 सदस्यीय समिति का गठन किया है. समिति का कहना है कि जब तक डीजीपी शत्रुघ्न कपूर और एसपी नरेंद्र बिजारनिया की गिरफ्तारी नहीं हो जाती, तब तक परिवार शव का पोस्टमॉर्टम नहीं कराएगा. रविवार (12 अक्टूबर) को दोपहर 2 बजे चंडीगढ़ के सेक्टर 20 स्थित गुरु रविदास गुरुद्वारे में महापंचायत होगी.

रोहतक एसपी को हटाया, डीजीपी को छुट्टी पर भेजा

हरियाणा के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी वाई. पूरन कुमार के पोस्टमॉर्टम को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है। डॉक्टर, फोरेंसिक विशेषज्ञ और एक वीडियोग्राफी टीम शनिवार दोपहर चंडीगढ़ पीजीआई के शवगृह पहुंची, लेकिन परिवार का कोई सदस्य नहीं आया.

चंडीगढ़ की एसएसपी कंवरदीप कौर ने कहा कि परिवार की सहमति के बाद ही पोस्टमॉर्टम किया जाएगा. इस बीच, रोहतक के एसपी नरेंद्र बिजारनिया को उनके पद से हटा दिया गया है. इस बीच, मुख्यमंत्री नायब सैनी ने कैबिनेट बैठक स्थगित कर मंत्रियों के साथ बैठक की, जिसमें डीजीपी शत्रुघ्न कपूर को छुट्टी पर भेजने का प्रस्ताव रखा गया.

क्या है पूरा मामला?

2001 बैच के IPS अधिकारी पूरन कुमार ने मंगलवार को चंडीगढ़ के सेक्टर 11 स्थित अपने घर में कथित तौर पर खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली थी. 52 वर्षीय कुमार ने एक 'अंतिम नोट' छोड़ा था, जिसके आधार पर यह मामला और गंभीर हो गया है.

सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों में से आठ का मार्केट कैप 1.94 लाख करोड़ बढ़ा

टीसीएस, भारती एयरटेल और रिलायंस में बढ़त, एचयूएल व एलआईसी को नुकसान

मुंबई

बीते सप्ताह शेयर बाजार में जबरदस्त तेजी देखने को मिली, जिससे सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से आठ कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1,94,148.73 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई। इस दौरान टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) सबसे बड़ी लाभ में रहने वाली कंपनी रही। सप्ताह भर में बीएसई सेंसेक्स 1,293.65 अंक की छलांग लगाकर बंद हुआ। इसी बढ़त का असर देश की प्रमुख कंपनियों के मार्केट कैप पर भी पड़ा। टीसीएस का बाजार मूल्यांकन 45,678.35 करोड़ बढ़कर 10,95,701.62 करोड़ पर पहुंच गया। इसके बाद इन्फोसिस को 28,125.29 करोड़ का लाभ हुआ, जिससे उसका मार्केट कैप 6,29,080.22 करोड़ हो गया। एचडीएफसी बैंक ने भी 25,135.62 करोड़ की बढ़त दर्ज की और उसका मूल्यांकन 15,07,025.19 करोड़ तक पहुंच गया। इसी तरह भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 25,089.27 करोड़ बढ़कर 11,05,980.35 करोड़ हो गया। अन्य लाभ में रहने वाली कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज (25,035.08 करोड़ की बढ़त), बजाज फाइनेंस (21,187.56 करोड़), भारतीय स्टेट बैंक (12,645.94 करोड़) और आईसीआईसीआई बैंक (11,251.62 करोड़) शामिल हैं। दूसरी ओर, हिंदुस्तान यूनिलीवर (एचयूएल) और भारतीय जीवन बीमा निगम की बाजार हैसियत में गिरावट दर्ज की गई। एचयूएल का मार्केट कैप 3,571.37 करोड़ घटकर 5,94,235.13 करोड़ रह गया, जबकि एलआईसी को 4,648.88 करोड़ की गिरावट के साथ 5,67,858.29 करोड़ पर संतोष करना पड़ा। रिलायंस इंडस्ट्रीज 18.70 लाख करोड़ के बाजार मूल्यांकन के साथ अब भी देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी हुई है, उसके बाद एचडीएफसी बैंक और भारती एयरटेल का स्थान है।

दिवाली पर मोमबत्ती का बिजनेस: कम निवेश में मुनाफे का सुनहरा मौका

नई दिल्ली

दिवाली की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं और बाजार रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाने लगे हैं। अगर आप इस त्योहार पर अपना बिजनेस शुरू करने का सोच रहे हैं, तो मोमबत्ती (कैण्डल) का कारोबार आपके लिए बेहतरीन अवसर साबित हो सकता है। भले ही इलेक्ट्रिक लाइट्स की बिक्री बढ़ गई है, लेकिन दिवाली पर रंग-बिरंगी मोमबत्तियों की मांग अभी भी जबर्दस्त रहती है। महज 10,000 रुपये के शुरुआती निवेश से आप कैंडल मेकिंग बिजनेस शुरू कर सकते हैं और मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। दिवाली पर घर के हर कोने को रोशन करने वाली मोमबत्तियों की मार्केट काफी बढ़ जाती है। त्योहारी सीजन में व्यापारी महज कुछ दिनों में अच्छी कमाई कर लेते हैं। कैंडल की मांग सिर्फ दिवाली तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जन्मदिन, पार्टियों और धार्मिक आयोजनों के लिए सालभर बनी रहती है। आज यह बिजनेस सिर्फ छोटी दुकानों तक सीमित नहीं है, बल्कि रिटेल, थोक और ऑनलाइन मार्केट में भी धड़ल्ले से बिक रहा है। छोटे स्तर पर इसे शुरू करने के लिए महज 10,000 से 15,000 रुपये निवेश की जरूरत होती है और आप इसे घर के किसी छोटे कोने से भी चला सकते हैं। इस बिजनेस में किसी महंगी मशीन की आवश्यकता नहीं होती। मोमबत्ती बनाने का मैटेरियल आसानी से मार्केट में उपलब्ध है। शुरुआत में आप सांचों का इस्तेमाल कर अलग-अलग डिज़ाइन की मोमबत्तियां बना सकते हैं। इसके लिए मोम, धागा, रंग और ईथर तेल की जरूरत होती है। सुगंधित मोमबत्तियां बनाने के लिए सेंट का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। इन सामग्रियों को स्थानीय बाजार या ऑनलाइन आसानी से खरीदा जा सकता है। जब बिजनेस बढ़ने लगे, तो आप ऑटोमैटिक मशीन खरीद सकते हैं। मैनुअल मशीन से प्रति घंटे 1800 मोमबत्तियां, जबकि फुली ऑटोमैटिक मशीन से प्रति मिनट 200 मोमबत्तियां तैयार की जा सकती हैं। सरकार द्वारा उपलब्ध लोन या अन्य छोटे कारोबार लोन के जरिए बिजनेस को और बढ़ाया जा सकता है।

भारत को रोल्स-रोयस बनाएगी अपना होम मार्केट

नई दिल्ली

भारत में कंपनी रोल्स-रोयस अपने वैश्विक विस्तार की तैयारी कर रही है। भारत को कंपनी अपना होम मार्केट बनाने की योजना है। यह घोषणा ऐसे समय में आई है जब भारत और ब्रिटेन अगले जेनरेशन फाइटर जेट इंजन के संयुक्त विकास पर विचार कर रहे हैं। कंपनी के सीईओ तुफान एरगिनबिलजिक ने मुंबई में कहा कि रोल्स-रोयस भारत में अपने सहयोग और साझेदारी को अगले स्तर तक ले जाना चाहती है और इसकी अत्याधुनिक तकनीक भारत की 'विकसित भारत' यात्रा में अहम योगदान देगी। भारत और ब्रिटेन के बीच नेक्स्ट-जेनरेशन फाइटर इंजन को-डेवलपमेंट प्रोग्राम पर बातचीत जारी है। अगर यह समझौता होता है, तो रोल्स-रोयस किसी भारतीय कंपनी के साथ मिलकर इस इंजन का निर्माण करेगी। कंपनी दुनिया की उन चुनिंदा संस्थाओं में है, जो फाइटर जेट इंजन डिज़ाइन और निर्माण करती हैं। यह साझेदारी भारत के रक्षा आत्मनिर्भरता मिशन को नई दिशा दे सकती है। कंपनी ने भारत में अपने ग्लोबल कैपेबिलिटी एंड इनोवेशन सेंटर का विस्तार किया है। यह सेंटर डिजिटल इंजीनियरिंग, डिजाइन और एंटरप्राइज सर्विसेज में नई तकनीक विकसित करेगा। आने वाले वर्षों में यह सेंटर रोल्स-रोयस का सबसे बड़ा ग्लोबल हब बनेगा, जो सिविल, डिफेंस और पावर सिस्टम बिजनेस को सपोर्ट करेगा। 2030 तक भारत से सप्लाई चेन सोर्सिंग दोगुना करने और स्थानीय टैलेंट डेवलपमेंट व मैन्युफैक्चरिंग क्षमताओं को मजबूत करने की योजना है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने कहा कि रोल्स-रोयस का भारत में विस्तार दोनों देशों के आर्थिक और तकनीकी संबंधों को नई ऊंचाई देगा।

एसबीआई की नई पहल: महिला कर्मचारियों की हिस्सेदारी बढ़ाने का लक्ष्य

कामकाजी महिलाओं के लिए सुविधाएं, नेतृत्व विकास और समावेशी कार्यस्थल की दिशा में ठोस कदम

देश के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने लैंगिक विविधता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति बनाई है। बैंक का उद्देश्य अगले पांच वर्षों में अपने कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी को 27 फीसदी से बढ़ाकर 30 फीसदी करना है। एसबीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि अग्रिम पंक्ति के कर्मचारियों में महिला भागीदारी पहले से ही लगभग 33 फीसदी है, लेकिन कुल कार्यबल में यह केवल 27 फीसदी है। इस अंतर को पाटने के लिए बैंक ने कई कदम उठाए हैं। बैंक की एम्पावर हर पहल के माध्यम से महिलाओं को नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है।

इसके तहत कोचिंग, मार्गदर्शन और नेतृत्व विकास सत्र आयोजित किए जाते हैं।

इसके अलावा, मातृत्व अवकाश या बीमारी के बाद लौटने वाली महिला कर्मचारियों के लिए पुनर्वास प्रशिक्षण और पारिवारिक संपर्क कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। कामकाजी माताओं को क्रेश भत्ता, गर्भवती महिलाओं को पोषण भत्ता और स्तन व गर्भाशय ग्रीवा कैंसर जांच जैसी स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। बैंक ने गर्भाशय ग्रीवा कैंसर का टीकाकरण अभियान भी शुरू किया है।

बैंक की 340 से अधिक शाखाएं केवल महिला कर्मचारियों द्वारा संचालित की जा रही हैं, जो समावेशी कार्यस्थल की दिशा में एक मजबूत संकेत है।

भारत बना दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक देश

125 जीडब्ल्यू सौर क्षमता के साथ जापान को पीछे छोड़ा

नई दिल्ली

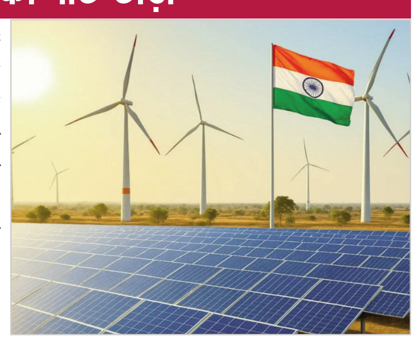

भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी के अनुसार भारत अब 125 गीगावाट (जीडब्ल्यू) स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के साथ दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक देश बन गया है। इस उपलब्धि के साथ भारत ने जापान (96 जीडब्ल्यू) को पीछे छोड़ दिया है। अगस्त 2025 के अंत तक भारत की कुल नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता 192 जीडब्ल्यू तक पहुंच गई है। इसमें सौर, पवन, बायोमास और जलविद्युत परियोजनाएं शामिल हैं। सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक यह क्षमता 500 जीडब्ल्यू तक पहुंच जाए। 2025 में भारत ने केवल अप्रैल से सितंबर के बीच 25 जीडब्ल्यू रिन्यूएबल एनर्जी क्षमता जोड़ी है। इसमें 21.7 जीडब्ल्यू सौर ऊर्जा और 3.09 जीडब्ल्यू पवन ऊर्जा शामिल है। जुलाई 2025 तक देश की कुल सौर ऊर्जा क्षमता 119.02 जीडब्ल्यू थी, जिसमें से 90.99 जीडब्ल्यू जमीन आधारित सौर संयंत्रों और 19.88 जीडब्ल्यू रूफटॉप सिस्टम से आई है। वहीं तापीय ऊर्जा की हिस्सेदारी में गिरावट दर्ज की गई है। अब देश की कुल स्थापित बिजली क्षमता 485 जीडब्ल्यू है, जिसमें तापीय (कोयला व गैस) बिजली सिर्फ 49.9 फीसदी रह गई है। 2015 में यह आंकड़ा 70 फीसदी था। यह एक ऐतिहासिक बदलाव है जो भारत के हरित ऊर्जा की ओर बढ़ते कदम को दर्शाता है। इंटरनेशनल थिंक टैंक एम्बर के अनुसार इस वर्ष की पहली छमाही में भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन में 17 टेरावाट-घंटे की वृद्धि हुई है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 25 फीसदी अधिक है। यह परिवर्तन भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ा रहा है।

भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौता बढ़ाएगा निर्यात और निवेश

नई दिल्ली भारत और ब्रिटेन के बीच वृहद आर्थिक और व्यापार समझौता (सीईटीए) पर 24 जुलाई को हस्ताक्षर हुए हैं, जो अगले साल लागू होने की संभावना है। विशेषज्ञों के अनुसार यह समझौता भारत के निर्यात को बढ़ावा देगा और ब्रिटेन से निवेश आकर्षित करेगा। एक वैश्विक पेशेवर सेवा नेटवर्क के मुताबिक कपड़ा, वाहन कलपुर्जा, जूते-चप्पल और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्र इस समझौते से लाभान्वित होंगे, क्योंकि लगभग 99 फीसदी भारतीय निर्यात के लिए शुल्क-मुक्त बाजार मिलेगा। इसके साथ ही, भारतीय आईटी, वित्तीय, स्वास्थ्य सेवा और पेशेवर सेवा प्रदाताओं के लिए ब्रिटेन के बाजार में नए अवसर खुलेंगे। यह समझौता कुशल पेशेवरों की आवाजाही को आसान बनाएगा और शिक्षा, नवोन्मेषण व अनुसंधान में सहयोग को मजबूत करेगा।

एक साल की एफडी पर 10 बैंक दे रहे आकर्षक ब्याज दरें

वरिष्ठ नागरिकों को मिल रहा अतिरिक्त लाभ

नई दिल्ली अगर आप अपनी सेविंग्स को सुरक्षित निवेश में लगाना चाहते हैं तो फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) इस समय एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है। बाजार की अनिश्चितता और शेयर बाजार की अस्थिरता को देखते हुए एफडी एक ऐसा निवेश है जो तय ब्याज दर के साथ मानसिक संतुलन भी देता है। खास बात यह है कि वर्तमान में कई बैंक एक साल की एफडी पर 7 फीसदी से लेकर 8 फीसदपी तक का आकर्षक ब्याज दे रहे हैं। डीसीबी बैंक और तमिलनाडु मर्केंटाइल बैंक सामान्य ग्राहकों को 7.25 फीसदी और वरिष्ठ नागरिकों को 7.75 फीसदी ब्याज दे रहे हैं। वहीं केनरा बैंक, कर्नाटक बैंक, आरबीएल बैंक और बैंक ऑफ इंडिया जैसे बैंक भी 7 फीसदी से 7.5 फीसदी तक का रिटर्न दे रहे हैं। विदेशी बैंक डॉयचे बैंक भी 1 साल की एफडी पर 7 फीसदी ब्याज ऑफर कर रहा है। देश के सबसे बड़े सरकारी बैंक एसबीआई सामान्य ग्राहकों को 6.80 फीसदी और वरिष्ठ नागरिकों को 7.30 फीसदी ब्याज दे रहा है। इसी तरह बैंक ऑफ बड़ौदा और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया 6.75 फीसदी से 7.25 फीसदी तक का रिटर्न दे रहे हैं।

सितंबर में टाटा मोटर्स और मारुति सुजुकी की बिक्री में वृद्धि

हुंदै और टोयोटा की बाजार हिस्सेदारी में गिरावट

नई दिल्ली सितंबर 2025 में टाटा मोटर्स और मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने अपनी खुदरा बिक्री में सालाना आधार पर बढ़ोतरी दर्ज की है। टाटा मोटर्स की बाजार हिस्सेदारी बढ़कर 13.75 फीसदी हो गई, जबकि पिछले साल यह 11.52 फीसदी थी। कंपनी ने इस महीने 32,586 वाहनों की बिक्री की। वहीं, मारुति सुजुकी ने 1,23,242 इकाइयों की खुदरा बिक्री की, जिससे उसकी बाजार हिस्सेदारी 41.17 फीसदी तक बढ़ गई। पिछले साल सितंबर में मारुति की बिक्री 1,15,530 वाहन थी। दूसरी ओर, हुंदै मोटर इंडिया की बिक्री और बाजार हिस्सेदारी दोनों में कमी आई है। इस साल सितंबर में हुंदै की बिक्री 35,812 रही, जबकि पिछले साल 38,833 वाहन बेचे गए थे। बाजार हिस्सेदारी 13.72 फीसदी से घटकर 11.96 फीसदी हो गई। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर की भी बाजार हिस्सेदारी गिरकर 6.78 फीसदी रह गई, जबकि पिछले साल यह 7.35 फीसदी थी। कंपनी की बिक्री में मामूली गिरावट देखी गई। महिंद्रा एंड महिंद्रा ने 37,659 वाहनों की बिक्री की, हालांकि उसकी बाजार हिस्सेदारी लगभग स्थिर रही। किआ इंडिया की बिक्री में मामूली वृद्धि हुई लेकिन बाजार हिस्सेदारी घटकर 6.78 फीसदी रह गई। दोपहिया क्षेत्र में हीरो मोटोकॉर्प ने बाजार हिस्सेदारी बढ़ाकर 25.10 फीसदी कर ली, जबकि होंडा मोटरसाइकिल की हिस्सेदारी घटकर 25.05 फीसदी रह गई। टीवीएस मोटर कंपनी की हिस्सेदारी भी बढ़ी। कुल मिलाकर, यात्री वाहनों की खुदरा बिक्री 6 फीसदी और दोपहिया वाहन बिक्री 6.5 फीसदी बढ़ी है।

अमेरिका-चीन तनाव, महंगाई आंकड़े और तिमाही नतीजे तय करेंगे बाजार की चाल

वैश्विक तनाव से बाजार में सतर्कता बढ़ी

- घरेलू महंगाई आंकड़ों और कंपनियों के नतीजों पर नजर
- फेडरल रिजर्व चेयरमैन के भाषण से मिल सकते हैं संकेत

मुंबई

इस सप्ताह भारतीय शेयर बाजार की दिशा कई प्रमुख कारकों पर निर्भर करेगी, जिनमें अमेरिका-चीन व्यापार तनाव, घरेलू महंगाई के आंकड़े और प्रमुख कंपनियों के तिमाही नतीजे शामिल हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि ये घटनाएं निवेशकों की धारणा को निर्णायक रूप से प्रभावित करेंगी। अमेरिका और चीन के बीच शुल्क को लेकर बढ़ते तनाव ने वैश्विक बाजारों में चिंता बढ़ा दी है। शुक्रवार को वॉल स्ट्रीट में भारी गिरावट देखी गई नैस्डैक 3.56 फीसदी, एसएंडपी 500 में 2.71 फीसदी और डॉव जोन्स में 1.90 फीसदी की गिरावट आई। इससे वैश्विक निवेशक जोखिम लेने से कतरा सकते हैं, जिसका असर भारतीय बाजारों पर भी पड़ेगा। इस बीच घरेलू मोर्चे पर निवेशकों की नजर खुदरा और थोक मुद्रास्फीति के आंकड़ों पर होगी। सरकार 13 अक्टूबर को सितंबर महीने की खुदरा मुद्रास्फीति (सीपीआई) और 14 अक्टूबर को थोक मुद्रास्फीति (डब्ल्यूपीआई) के आंकड़े जारी करेगी। इन आंकड़ों से भारतीय रिजर्व बैंक की आगामी मौद्रिक नीति का रुख स्पष्ट हो सकता है।

इसके अलावा, निवेशकों की निगाहें इंफोसिस, एचसीएल टेक, विप्रो, टेक महिंद्रा जैसी आईटी कंपनियों के तिमाही नतीजों पर टिकी होंगी। साथ ही, रिलायंस इंडस्ट्रीज और एक्सिस बैंक जैसे दिग्गजों के नतीजे भी बाजार की चाल में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

वैश्विक स्तर पर, 14 अक्टूबर को फेडरल रिजर्व चेयरमैन जेरोम पावेल का भाषण निवेशकों के लिए खास रहेगा। उनकी टिप्पणियों से ब्याज दरों और मुद्रास्फीति को लेकर फेड की रणनीति का संकेत मिल सकता है।

पिछले सप्ताह बीएसई सेंसेक्स में 1.59 फीसदी और एनएसई निफ्टी में 1.57 फीसदी की तेजी रही, लेकिन आने वाला सप्ताह अस्थिरता और सतर्कता से भरा रह सकता है। विश्लेषकों ने सलाह दी है कि निवेशक इस सप्ताह सतर्क रणनीति अपनाएं और महत्वपूर्ण घटनाक्रमों पर करीबी नजर बनाए रखें।

अरुणाचल प्रदेश सरकार ने महंगाई भत्ता तीन फीसदी बढ़ाया

नई दिल्ली अरुणाचल प्रदेश सरकार ने राज्य के सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ते (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) में तीन प्रतिशत की वृद्धि की घोषणा की है। इस वृद्धि के बाद डीए-डीआर का कुल प्रतिशत 55 फीसदी से बढ़कर 58 फीसदी हो गया है। यह वृद्धि 1 जुलाई 2025 से प्रभावी होगी। इससे पहले मई 2025 में भी डीए और डीआर को 53 फीसदी से बढ़ाकर 55 फीसदी किया गया था। यह इस साल कर्मचारियों के लिए दूसरी बार डीए और डीआर में बढ़ोतरी है। मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने बताया कि जुलाई से सितंबर 2025 तक का एरियर भी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को दिया जाएगा। साथ ही अक्टूबर के वेतन और पेंशन में संशोधित डीए-डीआर को शामिल किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने इस निर्णय को कर्मचारी कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता बताया और कहा कि इसका उद्देश्य राज्य के सरकारी कर्मचारियों और सेवानिवृत्तों को सम्मानित और समर्थ महसूस कराना है। अरुणाचल प्रदेश के इस फैसले के बाद राज्य के 75,000 से अधिक नियमित सरकारी कर्मचारी, पेंशनभोगी और एआईएस अधिकारी इस लाभ से सीधे प्रभावित होंगे। अब अरुणाचल प्रदेश के कर्मचारियों का महंगाई भत्ता केंद्र सरकार के कर्मचारियों के समान स्तर पर आ गया है।

इस सप्ताह सात कंपनियां करेंगी स्टॉक स्प्लिट

शेयरों की कीमतें कम होने से निवेश करना होगा आसान

नई दिल्ली

यह सप्ताह शेयर बाजार के निवेशकों के लिए बेहद खास रहने वाला है। इस हफ्ते निवेशकों को एक साथ तीन बड़े अवसर मिलेंगे स्टॉक स्प्लिट, बोनस शेयर और डिविडेंड। कुल 7 प्रमुख कंपनियों ने अपने शेयरों का स्टॉक स्प्लिट करने की घोषणा की है, जिससे शेयरों की कीमत कम होगी और उनमें निवेश करना आसान हो जाएगा। स्टॉक स्प्लिट करने वाली कंपनियों में गोकुल एग्रो रिसोर्सेज मिटेड, टाटा इन्वेस्टमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड, वेलक्योर ड्रग्स एंड फार्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, एबी इंफ्राबिल्ड लिमिटेड, नर्मदा मैकप्लास्ट ड्रिप इरिगेशन सिस्टम्स लिमिटेड, रोलेक्स रिंग्स लिमिटेड और सुनरक्षक इंडस्ट्रीज इंडिया लिमिटेड शामिल हैं।

इनमें से अधिकांश कंपनियों की एक्स-डेट 14 से 17 अक्टूबर के बीच है, जिससे पहले निवेश करने पर निवेशक स्टॉक स्प्लिट का लाभ उठा सकते हैं। इसके साथ ही कॉनकार्ड और वेलक्योर अपने निवेशकों को बोनस शेयर देने जा रही है। वही टीसीएस, एलेकॉन और आनंद राठी वेल्थ ने इंटरिम डिविडेंड की घोषणा की है।

विशेषज्ञों के अनुसर यह समय लंबी अवधि के निवेश के लिए अनुकूल हो सकता है, खासकर उन कंपनियों में जिनकी वित्तीय स्थिति मजबूत है।

निवेशकों को सलाह दी जाती है कि वे एक्स-डेट और रिकॉर्ड डेट का ध्यान रखते हुए योजनाबद्ध तरीके से निर्णय लें।

डीमार्ट का मुनाफा बढ़ा, 8 नए स्टोर खुले, ई-कॉमर्स में तेजी

पहली तिमाही में 685 करोड़ का जबरदस्त मुनाफा, आय भी 15.4 फीसदी उछला

नई दिल्ली डीमार्ट सुपरमार्केट और हाइपरमार्केट चेन संचालित करने वाली कंपनी एवेन्यू सुपरमार्ट्स ने वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) में अच्छा प्रदर्शन किया है। कंपनी का शुद्ध मुनाफा 3.9 फीसदी बढ़कर 684.85 करोड़ रुपए हो गया, जबकि पिछले वर्ष की इसी तिमाही में यह आंकड़ा कम था। इस दौरान कंपनी की कुल आय 15.4 फीसदी बढ़कर 16,676.30 करोड़ रुपए रही। हालांकि ऐबिटिडा (ब्याज, कर, मूल्यह्रास और परिशोधन से पहले की कमाई) 1,214 करोड़ रुपए रही, जो पिछले साल के 1,094 करोड़ रुपए से अधिक है। बावजूद इसके ऐबिटिडा मार्जिन 7.6 फीसदी से घटकर 7.3 फीसदी पर आ गया, जो परिचालन लागत में बढ़ोतरी का संकेत है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि दो साल से अधिक पुराने स्टोर्स की बिक्री में 6.8 फीसदी की वृद्धि देखी गई है। साथ ही इस तिमाही में 8 नए स्टोर खोले गए, जिससे 30 सितंबर 2025 तक डीमार्ट के कुल स्टोर्स की संख्या 432 हो गई। सरकार द्वारा हाल ही में की गई जीएसटी दरों में कटौती का लाभ भी डीमार्ट ने ग्राहकों तक पहुंचाया।

कियोसाकी की चेतावनी: अब नहीं चलेगी 60/40 निवेश रणनीति

'रिच डैड पुअर डैड' के लेखक ने शेयर-बॉन्ड आधारित पारंपरिक मॉडल को बताया फेल

नई दिल्ली फाइनेंशियल एडवाइजर और मशहूर किताब 'रिच डैड पुअर डैड' के लेखक रॉबर्ट कियोसाकी ने पारंपरिक 60/40 निवेश रणनीति को पूरी तरह खारिज कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह मॉडल 1971 में खत्म हो गया था, जब अमेरिका ने गोल्ड स्टैंडर्ड को छोड़ा और डॉलर की वैल्यू सिर्फ सरकार के भरोसे पर टिक गई। कियोसाकी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा कि अब डॉलर और अमेरिकी सरकार पर भरोसा करना मुश्किल है, क्योंकि अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा कर्जदार देश बन चुका है। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा, कौन मूर्ख होगा जो ऐसे देश के बॉन्ड खरीदेगा? कियोसाकी ने कहा कि अब समय आ गया है कि लोग बिटकॉइन, सोना और चांदी जैसे असली संपत्तियों में निवेश करें। उनके मुताबिक ये संपत्तियां मुद्रास्फीति और सरकारी छेड़छाड़ से बचाने में सक्षम हैं। वे इन्हें पीपुल्स मनी कहते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि अब बड़ी वित्तीय कंपनियां जैसे मॉर्गन स्टेनली भी 60/20/20 मॉडल को अपनाने की सिफारिश कर रही हैं, जिसमें वैकल्पिक निवेश को जगह दी जा रही है। कियोसाकी ने कहा कि मैं 30 साल पहले ही आर्थिक रूप से आज़ाद हो गया था। मुझे कभी किसी फॉर्मूले की जरूरत नहीं पड़ी। उन्होंने सलाह दी कि हर व्यक्ति को अपने हिसाब से सही निवेश रणनीति अपनानी चाहिए।

नोबेल शांति पुरस्कार की गूंज और भारतीय राजनीति का तापमान

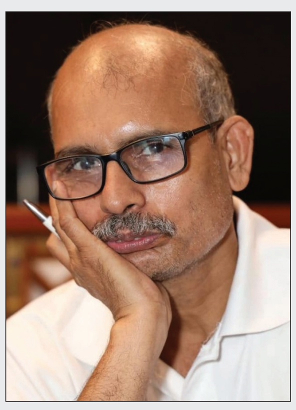

विनोद कुमार सिंह

वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को नोबेल शांति पुरस्कार 2025 सेसम्मानित किया गया,तो इसकी गूंज भारत तक पहुँची।यह सम्मान केवल किसी व्यक्ति का नहीं,बल्कि लोकतांत्रिक चेतना और अहिंसक संघर्ष की वैश्विक विजय का प्रतीक बना।राहुल गाँधी,लोकतंत्र के प्रहरी,जन विश्वास की नई किरण बन गई है।

विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की राजधानी दिल्ली की फिजाओं में कुछ ही दिन पहले धर्म और अधर्म के बीच हुए भव्य रामलीला महोत्सव की प्रतिध्वनि गूंज रही थी। मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम द्वारा अहंकारी रावण का वध कर सत्य और धर्म की विजय का संदेश देने के साथ ही विश्व राजनीति के मंच से एक ओर 'सत्य की विजय' की घोषणा हुई- तभी नोबेल शांति पुरस्कार 2025 का ऐलान।इस वर्ष यह सम्मान वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को दिया गया है।उन्होंने अपने देश में लोकतंत्र की रक्षा के लिए अहिंसक संघर्ष किया।जब सत्तावादी शासन ने संविधान और नागरिक स्वतंत्रताओं पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया,तब मचाडो ने भय और दमन के वातावरण में भी जनता की आवाज बुलंद की।यही साहस उन्हें विश्व का सम्मान दिलाने में सहायक बना। उनका यह सम्मान आज वैश्विक स्तर पर लोकतांत्रिक चेतना को नया बल प्रदान कर रहा है। मारिया मचाडो को मिला यह सम्मान केवल वेनेजुएला की जीत नहीं, बल्कि लोकतंत्र की रक्षा करने वाले हर नागरिक की विजय है। भारत में भी इस पुरस्कार की गूंज सत्ता और विपक्ष,दोनों के गलियारों में सुनाई दी।कांग्रेस प्रवक्ता सुरेन्द्र राजपूत ने मचाडो और राहुल गाँधी की तस्वीर साझा करते हुए कहा कि 'वेनेजुएला में लोकतंत्र की रक्षा करने वाली मचाडो को नोबेल मिला,भारत में संविधान की रक्षा के लिए राहुल गाँधी संघर्ष कर रहे हैं।' इस टिप्पणी ने भारतीय राजनीति में नए विमर्श को जन्म दिया।सत्ता और विपक्ष के गलियारों में यह चर्चा शुरू हो गई कि क्या भारत में लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष करना ही आज का सबसे बड़ा सम्मान नहीं है? भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में राहुल गाँधी अब केवल एक विपक्षी नेता नहीं,बल्कि लोकतांत्रिक आत्मा के रक्षक और विचार के वाहक बनकर उभरे हैं।वे बार-बार यह कहते हैं -'राजनीति मेरे लिए सत्ता का माध्यम नहीं,बल्कि सत्य और न्याय की सेवा का मार्ग है।' पिछले एक दशक में उन्होंने संसद से लेकर सड़क तक,और नागरिक मंचों से लेकर संस्थानों तक हर स्थान पर आवाज उठाई,जहाँ उन्हें लगा कि लोकतंत्र की नींव कमजोर की जा रही है।उनका स्पष्ट मानना है कि 'लोकतंत्र केवल चुनाव नहीं,बल्कि जनता और सत्ता के बीच सत्य का संवाद है।' कानूनी चुनौतियों, व्यक्तिगत हमलों और तीखी आलोचनाओं के बावजूद राहुल गांधी ने नफरत के बजाय संवाद, टकराव के बजाय प्रेम और विभाजन के बजाय एकता की राह चुनी।यही दृष्टि उन्हें आज की राजनीति में विशिष्ट बनाती है।भारत जोड़ो यात्राः संवाद और संवेदना का आंदोलन -

राहुल गांधी की 2022 में शुरू हुई, भारत जोड़ो यात्रा उनके राजनीतिक दर्शन का सशक्त उदाहरण है।यह यात्रा किसी चुनावी रणनीति से अधिक एक सामाजिक और नैतिक आंदोलन थी,जिसका उद्देश्य था भारत की विविधता को जोड़ना और विभाजन की राजनीति के बीच संवाद की संस्कृति को पुनर्जीवित करना।हजारों किलोमीटर की इस पदयात्रा में राहुल गाँधी ने आम जनता से सीधे संवाद किया- बेरोजगारी,महंगाई,सामाजिक असमानता,महिलाओं की सुरक्षा और किसानों की कठिनाइयों जैसे मुद्दों पर जनता की पीड़ा को सुना, महसूस किया और व्यक्त किया। जिस प्रकार महात्मा गाँधी ने नमक सत्याग्रह के माध्यम सेऔपनिवेशिक शासन को चुनौती दी थी,उसी तरह राहुल गांधी की यह यात्रा भी अहिंसक लोकतांत्रिक प्रतिरोध का प्रतीक बन गई। 'लोकतंत्र केवल सरकार बदलने का साधन नहीं, बल्कि दिलों और विचारों को जोड़ने की प्रक्रिया है।' उनका यह कथन लोकतंत्र की आत्मा को जीवंत करता है।गाँधीवादी विचारधारा के आधुनिक प्रतिनिधि -महात्मा गाँधी ने कहा था -'राजनीति का अर्थ है सेवा, न कि स्वार्थ।' राहुल गाँधी इस विचारधारा के आधुनिक प्रतिनिधि के रूप में देखे जा सकते हैं।उन्होंने अनेक अवसरों पर स्पष्ट कहा -'सत्ता मेरी प्राथमिकता नहीं है,मेरा कर्तव्य है संविधान और संस्थानों की रक्षा।'

संसद से अयोग्य ठहराए जाने के बाद भी उनका अडिग वक्तव्य था 'मुझे डराया नहीं जा सकता,क्योंकि मैं सत्य के साथ खड़ा हूँ।' जब कोई नेता अपने विशेषाधिकारों से अधिक अपने सिद्धांतों को प्राथमिकता देता है,तब वह केवल राजनेता नहीं, बल्कि विचार का प्रतीक बन जाता है।नोबेल शांति पुरस्कार का दर्शन और भारतीय आत्मा- नोबेल शांति पुरस्कार का दर्शन चार स्तंभों पर आधारित है- अहिंसा, सत्य, मानवाधिकार और लोकतांत्रिक स्वतंत्रता।नेल्सन मंडेला,मार्टिन लूथर किंग जूनियर,आंग सान सू की, मलाला यूसुफजई जैसे महान नेताओं ने इसी मार्ग पर चलते हुए अपने समाजों में परिवर्तन लाया।मारिया मचाडो को मिला सम्मान उसी परंपरा का विस्तार है।कांग्रेस प्रवक्ता द्वारा राहुल गांधी की तुलना इसी दृष्टि से प्रतीकात्मक है-यह दशार्ता है कि लोकतंत्र की रक्षा केवल किसी एक राष्ट्र की नहीं, बल्कि मानवता की साझा चेतना की लड़ाई है।भारत और वेनेजुएला भले ही भौगोलिक रूप से भिन्न हों,परंतु संघर्ष का सार एक ही है -जनता की आवाज को सर्वोच्च रखना।21वीं सदी का लोकतंत्र अब केवल मत पेटी तक सीमित नहीं रह गया है।

जब सत्ता असहमति से डरने लगे, तब लोकतंत्र की आत्मा संकट में पड़ जाती है। राहुल गाँधी का यह कथन आज के समय में अत्यंत सार्थक है-'असहमति देशद्रोह नहीं,बल्कि लोकतंत्र की जीवनरेखा है।' उनका कहना है कि भारत की आत्मा सहिष्णुता, प्रेम और संवाद में बसती है।उनकी राजनीति में भावनाएँ कमजोरी नहीं,बल्कि नैतिक शक्ति हैं,क्योंकि लोकतंत्र का असली अस्तित्व संवेदना और करुणा में ही बसता है।लोकतंत्र के तीन स्तंभ - त्याग,सहनशीलता और संघर्ष -लोकतंत्र को जीवित रखने के लिए तीन गुण आवश्यक हैं-त्याग, सहनशीलता और संघर्ष।भारतीय राजनीति के विश्लेषकों का मानना है कि राहुल गाँधी के राजनीतिक जीवन में ये तीनों गुण बार-बार दिखाई देते हैं।उन्होंने सत्ता की परवाह किए बिना संस्थागत अन्याय पर सवाल उठाए,आलोचनाओं के बीच भी संवाद बनाए रखा,और व्यक्तिगत हानि की कीमत पर भी लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की।ऐसे क्षणों में वे राजनीति से आगे बढ़कर एक वैचारिक प्रतीक बन जाते हैं।भारत की लोकतांत्रिक आत्मा और विश्व संदेश -यदि भारतीय संदर्भ में देखें, तो नोबेल शांति पुरस्कार की भावना भारत की आत्मा से गहराई से जुड़ी हुई है।भारत की स्वतंत्रता स्वयं एक अहिंसक संघर्ष का परिणाम थी।महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर और डॉ. भीमराव अंबेडकर ने राजनीति में मानवता, समानता और न्याय के सिद्धांतों को स्थापित किया।यह वही दृष्टि है जो नोबेल शांति पुरस्कार के दर्शन में निहित है-जहाँ व्यक्ति नहीं,विचार का सम्मान किया जाता है।आज विश्व में लोकतंत्र एक नए संकट से जूझ रहा है- बहुमत सत्ता देता है,परंतु मूल्य समाज को दिशा देते हैं।राहुल गाँधी का संघर्ष इस सिद्धांत का प्रतीक है कि राजनीति केवल जनादेश नहीं,बल्कि जनविश्वास की भी परीक्षा है।उन्होंने कहा था -'यदि हम संविधान को नहीं बचा सके, तो कोई भी बहुमत हमें नहीं बचा पाएगा।' यह चेतावनी केवल भारत के लिए नहीं,बल्कि हर उस लोकतंत्र के लिए है,जहाँ सत्ता का केंद्रीकरण बढ़ रहा है और नागरिक स्वतंत्रताएँ सिकुड़ रही हैं। लोकतंत्र की उम्मीद की नई किरण- मारिया मचाडो को मिला नोबेल पुरस्कार वेनेजुएला की जीत मात्र नहीं,बल्कि हर उस नागरिक की जीत है जो सत्य बोलने का साहस रखता है।कांग्रेस का यह कहना कि 'राहुल गाँधी भी उसी पथ पर चल रहे हैं",इस बात का संकेत है कि भारत की राजनीति में आज भी विचार और विवेक का संघर्ष जीवित है।यदि भविष्य में कभी राहुल गांधी को लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिले,तो वह केवल उनकी व्यक्तिगतउपलब्धि नहीं होगी- बल्कि भारत की लोक तांत्रिक परंपरा की वैश्विक स्वीकृति होगी।राहुल गाँधी का राजनीतिक जीवन यह सिखाता है कि लोकतंत्र केवल संस्थाओं में नहीं,बल्कि जनता के दिलों में बसता है।उनका संघर्ष सत्ता के विरुद्ध नहीं,बल्कि अन्याय, असमानता और भय की राजनीति के विरुद्ध है।यही कारण है कि- 'भारतीय राजनीति में राहुल गाँधी भी लोकतंत्र के लिए लड़ते हुए, प्रजातंत्र के प्राण और प्रहरी बनकर, वैश्विक राजनीति के पटल पर जनता की उम्मीद की किरण बन गए हैं।'

संपादकीय

सरकारी नौकरी का 'प्रण'

राजद नेता तेजस्वी यादव ने ऐसा चुनावी दांव खेला है, जो अभी तक किसी भी दल और नेता ने नहीं खेला। तेजस्वी इसे चुनावी जुमला नहीं, बल्कि ह्यप्रणह्न मान रहे हैं। उन्होंने 2020 के चुनाव की तरह इस बार भी ह्यबेरोजगारीह्न को प्रमुख मुद्दा बनाने की कोशिश की है। तब वह 17 माह तक उपमुख्यमंत्री के पद पर रहे थे। राजद के नेता और प्रवक्ता दावे करते रहे हैं कि तब तेजस्वी ने 5 लाख नौकरियां दीं। ऐसा कोई सरकारी डाटा उपलब्ध नहीं है। हालांकि करीब 1.5 लाख नौकरियां देने का ब्योरा सरकारी रिकॉर्ड में है, लेकिन तब भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही थे। उनकी पार्टी भी इन नौकरियों का ढोल बजा रही है, जो गलत नहीं है। बहरहाल अब तेजस्वी का ह्यप्रणह्न है कि बिहार में उनकी सरकार बनी, तो 20 दिन में ही एक अधिनियम पारित कराया जाएगा और उसके 20 महीने के भीतर हर घर में एक सरकारी नौकरी सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने दावा किया है कि अध्ययन किया जा चुका है। बिहार में घर-घर सरकारी नौकरी देना संभव है, लेकिन हम ऐसा नहीं मानते, क्योंकि तेजस्वी ने अध्ययन का कोई भी आधार सार्वजनिक नहीं किया है। उसके अलावा, कुछ बुनियादी और अहम सवाल भी हैं। बिहार में 2.76 करोड़ परिवार हैं। कुछ 3 या 3.50 करोड़ परिवारों की बात कर रहे हैं, लेकिन सरकारी रिकॉर्ड में 2.76 करोड़ से कुछ अधिक परिवार दर्ज हैं। माना जा सकता है कि कई परिवारों में पहले से ही सरकारी नौकरी वाले सदस्य होंगे। फिर भी मोटा अनुमान है कि कमोबेश 2 करोड़ नौकरियों का सृजन करना होगा, तभी संभावित तेजस्वी सरकार का ह्यप्रणह्न पूरा किया जा सकता है। ऐसा करना हमें तो अवास्तविक, बल्कि असंभव लगता है। दरअसल बिहार सरकार में 46 विभाग हैं, जिनमें 10 प्रशासनिक विभाग हैं। शेष कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल आदि के विभाग हैं। राज्य में करीब 14 लाख नौकरियां हैं और 4 लाख से ज्यादा नौकरियां रिक्त पड़ी हैं। बिहार में मात्र 1.57 फीसदी लोगों को ही सरकारी नौकरी नसीब है। राज्य की मात्र 4.92 फीसदी आबादी को कोई न कोई रोजगार उपलब्ध है। लिहाजा व्यापक स्तर पर लोग पलायन करते हैं। उनमें से अधिकांश बिहारी बड़े शहरों में रिक्शा, ई-ऑटो चलाते हैं और दिहाड़ीदार मजदूरी करते हैं।

चिंतन-मनन

सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख

पिछले दिनों में राष्ट्रीय रंगमंच पर जिस प्रकार का राजनीतिक चरित्र उभरकर आ रहा है, वह एक गंभीर चिंता का विषय है। ऐसा लगता है, राजनीति का अर्थ देश में सुव्यवस्था बनाए रखना नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी बनाए रखना है। राजनीतिज्ञ का अर्थ उस नीति-निपुण व्यक्तित्व से नहीं है, जो हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति, विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरी महत्व दे; किंतु उस विदूषक-विशारद व्यक्तित्व से है, जो राष्ट्र के विकास और समृद्धि को अवनति के गर्त में फेंककर भी अपनी कुर्सी को सर्वोपरि महत्व देता हो। राजनेता का अर्थ राष्ट्र को गति की दिशा में अग्रसर करने वाला नहीं, अपने दल को सत्ता की ओर अग्रसर करने वाला रह गया है। यही कारण है कि आज राष्ट्र गौण है, दल प्रमुख है। सिद्धांत गौण है, सत्ता प्रमुख है। चरित्र गौण है, कुर्सी प्रमुख है।

एक राजनेता में राष्ट्रीय चरित्र, न्याय-सिद्धांत और नेतृत्व क्षमता के गुणों की आवश्यकता नहीं, किंतु आज कुशल राजनेता वही है, जो अपने दल के लिए राष्ट्र के साथ भी विश्वासघात कर सकता हो, अपनी कुर्सी के लिए अपने दल के साथ भी विश्वासघात करने का जिसमें साहस या दुस्साहस हो। बहुत बार मन में प्रश्न उभरता है, क्या राजनीति का अपना कोई चरित्र नहीं होता अथवा सत्ता प्राप्ति के लिए राष्ट्र, समाज, दल और व्यक्ति की विश्वासपूर्ण भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना ही राजनीति का चरित्र होता है? जनता की कोमल भावनाओं का शोषण करके सत्तासीन होने के बाद क्या राजनेता का व्यक्तित्व जनता और राष्ट्र से भी बड़ा हो जाता है?

यदि ऐसा नहीं है तो आज की राजनीति क्यों अपने प्रिय पुत्रों, संबंधियों और चमचों-चाटुकारों के चप्रव्यूह में फंसकर रह गई है? राष्ट्र को स्थिर नेतृत्व प्रदान करने के नाम पर क्यों सिद्धांतहीन समझौते और स्तरहीन कलाबाजियां दिखाई जा रही हैं? संप्रदायवाद, जातिवाद, भाषावाद और प्रांतवाद को भड़का करके क्यों सत्ता की गोटियां बिठाई जा रही हैं? आज की राजनीति को देखकर मन ग्लानि और वितृष्णा से भर जाता है। आखिर यह सबकुछ कब तक चलता रहेगा?

अहोई माताः संतान के जीवन में मंगल भरने वाली शक्ति

योगेश कुमार गोयल

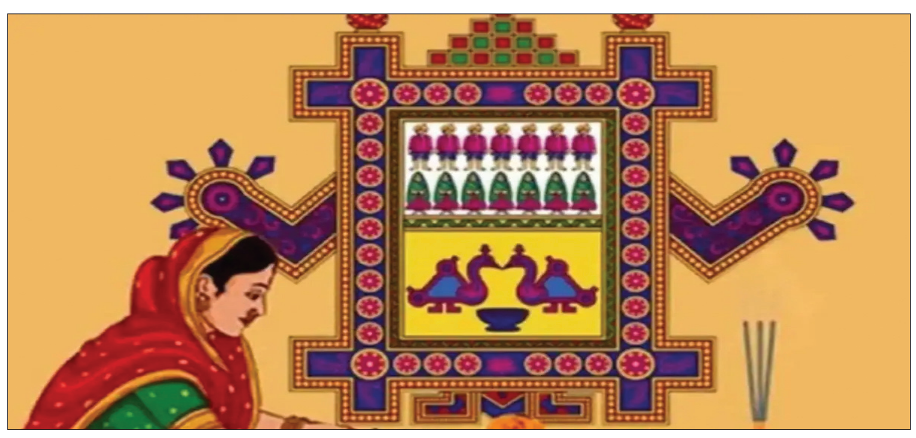

करवा चौथ के चार दिन पश्चात और दीवाली से ठीक एक सप्ताह पहले भारत में हिन्दू समुदाय में एक प्रमुख त्यौहार ह्यअहोई अष्टमीह्न मनाया जाता है, जो प्रायः वही स्त्रियां करती हैं, जिनके संतान होती है किन्तु अब यह व्रत निसंतान महिलाएं भी संतान की कामना के लिए करती हैं। ह्यअहोई अष्टमीह्न व्रत प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण अष्टमी को किया जाता है और इस वर्ष यह पर्व 13 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। स्त्रियां दिनभर व्रत रखती हैं। सायंकाल से दीवार पर आठ कोष्ठक की पुतली लिखी जाती है। उसी के पास सेई और सेई के बच्चों के चित्र भी बनाए जाते हैं। पृथ्वी पर चौक पूरकर कलश स्थापित किया जाता है। कलश पूजन के बाद दीवार पर लिखी अष्टमी का पूजन किया जाता है। फिर दूध-भात का भोग लगाकर कथा कही जाती है। आधुनिक युग में अब बहुत सी महिलाएं दीवारों पर चित्र बनाने के लिए बाजार से अहोई अष्टमी के रेडीमेड चित्र खरीदकर उन्हें पूजास्थल पर स्थापित कर उनका पूजन करती हैं। कार्तिक कृष्ण अष्टमी को महिलाएं अपनी संतान की दीर्घ आयु तथा उनके जीवन में समस्त संकटों या विध्न-बाधाओं से उनकी रक्षा के लिए यह व्रत रखती हैं। कुछ स्थानों पर इस दिन धोबी मारन लीला का भी मंचन होता है, जिसमें श्रीकृष्ण द्वारा कंस द्वारा भेजे गए धोबी का वध करते प्रदर्शन किया जाता है। अहोई माता के रूप में अपनी-अपनी पारिवारिक परम्परानुसार लोग माता पार्वती की पूजा करते हैं।

अहोई अष्टमी व्रत के संबंध में कुछ कथाएं प्रचलित हैं। ऐसी ही एक कथानुसार प्राचीन काल में किसी नगर में एक साहूकार रहता था। उसके सात लड़के थे। दीपावली से पहले साहूकार की स्त्री घर की लीपा-पोती हेतु मिट्टी लेने खदान में गई और कुदाल से मिट्टी खोदने लगी। दैव योग से उसी जगह एक सेह की मांद थी। सहसा उस स्त्री के हाथ से कुदाल सेह के बच्चे को लग गई, जिससे सेह का बच्चा तत्काल मर गया। अपने हाथ से हुई हत्या को लेकर साहूकार की पत्नी को बहुत दुख हुआ परन्तु अब क्या हो सकता था? वह पश्चाताप करती हुई शोकाकुल अपने घर लौट आई। कुछ दिनों बाद उसके बेटे का निधन हो गया। फिर अकस्मात दूसरा, तीसरा और इस प्रकार वर्ष भर में उसके सभी बेटे मर गए। महिला अत्यंत व्यथित रहने लगी। एक दिन उसने अपने आस-पड़ोस की महिलाओं को विलाप करते हुए बताया कि उसने जानबूझकर कभी कोई पाप नहीं किया। हां, एक बार खदान में मिट्टी खोदते हुए अनजाने में उससे एक सेह के बच्चे की हत्या अवश्य हुई है और तत्पश्चात मेरे सातों बेटों की मृत्यु हो गई। यह सुनकर पास-पड़ोस की वृद्ध औरतों ने साहूकार की पत्नी को दिलासा देते हुए कहा कि यह बात बताकर तुमने जो पश्चाताप किया है, उससे तुम्हारा आधा पाप नष्ट हो गया है। तुम उसी अष्टमी को भगवती माता की शरण लेकर सेह और सेह के बच्चों का चित्र बनाकर उनकी आराधना करो और क्षमा-याचना करो। ईश्वर की कृपा से तुम्हारा पाप धुल जाएगा। साहूकार की पत्नी ने वृद्ध महिलाओं की बात मानकर कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी को उपवास व पूजा-याचना की। वह हर वर्ष नियमित रूप से ऐसा करने लगी। बाद में उसे सात पुत्र रत्नों की प्राप्ति हुई। तभी से अहोई व्रत की परम्परा प्रचलित हो गई।

अहोई व्रत के संबंध में एक और कथा प्रचलित है। बहुत समय पहले झांसी के निकट एक नगर में चन्द्रभान नामक साहूकार रहता था। उसकी पत्नी चन्द्रिका बहुत सुंदर, सर्वगुण सम्पन्न, सती साध्वी, शीलवन्त, चरित्रवान तथा बुद्धिमान थी। उसके कई पुत्र-पुत्रियां थे परन्तु वे सभी बाल अवस्था में ही परलोक सिधार चुके थे। दोनो पति-पत्नी संतान न रह जाने से बहुत व्यथित रहते थे। वे दोनों प्रतिदिन मन ही मन सोचते कि हमारे मर जाने के बाद इस अपार धन-सम्पदा को कौन संभालेगा? एक बार उन दोनों ने निश्चय किया कि वनवास लेकर शेष जीवन प्रभु-भक्ति में व्यतीत करें।

यही विचार कर दोनों अपना घर-बार त्यागकर वनों की ओर चल दिए। रास्ते में जब थक जाते तो रूककर थोड़ा विश्राम कर लेते और फिर चल पड़ते। इस प्रकार धीरे-धीरे वे बद्रिका आश्रम के निकट शीतल कुण्ड जा पहुंचे। वहां पहुंचकर दोनों ने निराहार रहकर प्राण त्यागने का निश्चय कर लिया। निराहार व निर्जल रहते हुए जब उन्हें सात दिन हो गए तो आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों प्राणी अपने प्राण मत त्यागो। यह सब दुख तुम्हें तुम्हारे पूर्व पापों से भोगना पड़ा है। यदि तुम्हारी पत्नी कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली अहोई अष्टमी को अहोई माता का व्रत और पूजन करे तो अहोई देवी प्रसन्न होकर साक्षात दर्शन देंगी। तुम उनसे दीर्घायु पुत्रों का वरदान मांग लेना। व्रत के दिन तुम राधाकुण्ड में स्नान करना।

चन्द्रिका ने आकाशवाणी के बताए अनुसार विधि-विधान से अहोई अष्टमी को अहोई माता का व्रत और पूजा-अर्चना की और तत्पश्चात राधाकुण्ड में स्नान किया। जब वे स्नान इत्यादि के बाद घर पहुंचे तो उस दम्पत्ति को अहोई माता ने साक्षात दर्शन देकर वर मांगने को कहा।

साहूकार दम्पत्ति ने हाथ जोड़कर कहा, ह्यह्यहमारे बच्चे कम आयु में ही परलोक सिधार जाते हैं। आप हमें बच्चों की दीर्घायु का वरदान दें।ह्नह्न

ह्यह्यतथास्तु !ह्नह्न कहकर अहोई माता अंतर्ध्यान हो गई। कुछ समय के बाद साहूकार दम्पत्ति को दीर्घायु पुत्रों की प्राप्ति हुई और वे सुखपूर्वक अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करने लगे।

देवी पार्वती को अनहोनी को होनी बनाने वाली देवी माना गया हैं, इसलिए अहोई अष्टमी पर माता पर्वती की पूजा की जाती है और संतान की दीर्घायु एवं सुखमय जीवन की कामना की जाती है।

(लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

उपनिवेशवाद की सोच भारतीयो को कुछ नया करने में बाधक

कांतिलाल मांडोत

आरएसएस भारतीय रास्ट्रवाद का स्वयंसेवक संगठन के विजयादशमी के दिन सौ वर्ष पूर्ण होने पर देश-विदेश में राष्ट्र को समर्पित अनेक कार्यक्रम हुए और अभी भी जारी है।कई उतार चढ़ाव से गुजरने के बाद अब आरएसएस वटवृक्ष बन गया है।भारत की ज्ञान परम्परा और शिक्षा पद्धति पर चिंतन होता रहा है।दुनिया मे शायद ही किसी संगठन की इतनी आलोचना की होगी,जितनी आरएसएस की हुई है।बिना आधार के आरएसएस पर लगाए सभी आरोप कपोल कल्पित और जूठे साबित हुए।दरअसल,अपने मन मे देश के प्रति जज्बा लिए ये युवा अपना सर्वस्व अर्पण कर देशसेवा के लिए हर जंग लड़ने के लिए हर समय तैयार रहते है।नीतिमत्ता और ईमानदारी का गुण जीवन की आधारशिला है।समाज को आगे लाने के लिए हर कदम पर सहयोग मिलने से भारत एक मजबूत राष्ट्र बनता जा रहा है।रास्ट्रीय स्वयंसेवक से सरसंघचालक मोहन भागवत की सक्रियता और समर्पण भाव को देखकर हर व्यक्ति दंग रह जाता है। भाजपा के राजनैतिक वर्चस्व के इस दौर में राष्ट्रवाद की भगवा सोच भी उसी तीव्र गति से बढ़ाया गया।आज भाजपा की मजबूत नींव पर आरएसएस के शुद्ध संकल्प और अच्छी सोच का ही कारण रहा है।संघ ने शिक्षा पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन करने और भगवा विचारों में रंगने की चाह के लिए रणनीति के साथ पहल हुई थी।संघ का योगदान देश की आजादी के समय 1947 में भी भरपूर रहा है।कश्मीर पर पाकिस्तान सेना की गतिविधियों पर संघ बराबार नजर रखे हुए था।1962 में संघ के स्वयंसेवक जिस तरह सीमा पर पहुँचे, उसे पूरे देश ने देखा।1963 में 26 जनवरी पर प्रधानमंत्री नेहरू ने स्वयंसेवक के कार्यकताओं को परेड में शामिल होने का निमंत्रण दिया।ये देश के प्रति समर्पित है।1965 के भारत पाकिस्तान के युद्ध के समय लालबहादुर शास्त्री ने संघ को याद किया।स्वयंसेवको ने कानून व्यवस्था संभाली थीं।आरएसएस ने देशहित में अनेक ऐसे कार्य किये है।जिसका इतिहास बन चुका है।उपनिवेशवादी मानसिकता से मुक्त कराने के लिए शिक्षा से ही संभव है।और इस पर सरसंघचालक कही बार अपने मंच से बोलकर देश को अवगत कराते आ रहे है।शिक्षा के उद्देश्य, विषय वस्तु और व्यवस्था में भारतीयता होनी चाहिए।मोहन भागवत का सारा समय देश के लिए समर्पित है।देश मे आए दिन अनेक सभा और पथ संचलन के कार्यक्रम आयोजित कर युवाओ को प्रशिक्षित कर देशसेवा के प्रति समर्पण भाव के गुर सिखाए जा रहे है।संघ यह भी मानता है कि सत्ता से नही,बल्कि समाज के द्वारा ज्यादा प्रभावी होता है।वर्तमान में जो नवीन ज्ञान हमे मिल रहा है,उसे सीखे।जो सीखने योग्य है ,उसे अवश्य सीखे, किन्तु सीखने का उद्देश्य यही है कि हम अपने धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन मूल्यो को नष्ट करके की जरा भी भूल नहीं करे।यही शिक्षा उपादेय,सार्थक एवं गाह्य है,जिसके द्वारा सत्य,अहिंसा,अस्तेय,अपरिग्रह, इंद्रिय,निग्रह,त्याग,परोपकार, दया,करुणा आदि गुणों का विकास हमारे भीतर हो।यही धारणा और समर्पित जीवन का लक्ष्य लिए देश सेवा करते हुये आरएसएस के सौ वर्ष पूर्ण हो चुके है।स्वयंसेवक संघ में संवेदनशीलता,दया,करुणा,परदुःखकातरता सुषुप्त नही हुई है इनका मुख्य लक्ष्य व्यक्तिवाद और स्वार्थ साधना नही होकर केवल देश सेवा की रही है।रास्ट्रीय,सामाजिक,नैतिक अस्मिता की रक्षा के लिए शाश्वत जीवन मूल्यों के अभिरक्षक के प्रयास सतत कर रहे है।क्योंकि ये जानते है कि अनुसाशनहीनता और सद्गुणों की उपेक्षा से जीवन अपवित्र होता है।स्वयंसेवक सेदेश ,परिवार,समाज को कई अपेक्षाएं है ।मोहन भागवत मनोयोग से अध्ययन करने की सिख देते है।विद्यार्थियों में शिक्षा का स्तर बढ़ना चाहिए।संघ का दर्द उस समय झलका था।जब रोहित वेमुला प्रकरण,जेएनयू में कन्हैया प्रकरण,पश्चिमी बंगाल में जाधवपुर विवि की घटना और बिहार चुनाव से ठीक पहले असहिष्णुता के खिलाफ बुद्धिजीवियों की अवार्ड वापसी के झटकों ने भगवा ब्रिगेड को हिला दिया था।इनका यह भी मानना है कि मोदी के आने के बाद वामपंथियों को कमजोर कड़ी के तौर पर चुना,जहा उनका वर्चस्व है और एनजीओ वाले इनके साथ खड़े दिखते है।उसके बाद ही चुनिंदा रणनीतिकारों ने बौद्धिक आंदोलन का खाका तैयार किया।इसलिए मोहन भागवत शिक्षा परिवर्तन पर हर समय मंच से बात करते है।क्योंकि इस दौर में तेजी से जो क्षरण हो रहा है उसकी रोकथाम के लिए आपको आगे आने की जरूरत है।हम जिस देश मे जन्मे है,यही धरती महान है।यहां की संस्कृति अत्यंत गरिमा से परिपूर्ण है। हमे यहां की गौरवगरिमा की सुरक्षा के लिए हर समय स्वयंसेवक की तरह सचेष्ट रहना है।जहां भी पापो की ज्वाला उठे, द्रढता के साथ हमे उनका प्रतिकार करना चाहिए।

संघ मानता है कि भारतीय शिक्षा पद्धति में अंग्रेजी और वामपंथ का वर्चस्व है इसलिए भाजपा के सत्ता में आने से बने अनुकूल माहौल में परिवर्तन सुनिश्चित करना होगा।संस्कारित शिक्षा की पहल 1950 के दशक में ही कर दी थी।भारत की शिक्षा पूरी तरह आध्यात्म आधारित रही है।आर्थिक उपार्जन आवश्यक है,लेकिन वह केवल जीवन जीने के लिए है आध्यात्म के आधार पर ही राष्ट्र का उत्थान हो सकता है।

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप ने मध्य पूर्व जाने से पहले कराया मेडिकल टेस्ट

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मध्य पूर्व की यात्रा से पहले शुक्रवार को मैरीलैंड के बेथेस्डा स्थित वाल्टर रीड नेशनल मिलिट्री मेडिकल सेंटर में स्वास्थ्य जांच कराई। 79 वर्षीय ट्रंप जनवरी में व्हाइट हाउस में दोबारा कार्यभार संभालने वाले सबसे उम्रदराज व्यक्ति हैं। व्हाइट हाउस ने इसे ट्रंप की नियमित जांच बताई। यह जांच उनके व्यापक शारीरिक परीक्षण के छह महीने बाद हो रहा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने यहां सैनिकों के साथ बैठक भी की। ट्रंप ने कहा, शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत अच्छा महसूस कर रहा हूं। यह डॉक्टर के पास छह महीने में एक बार होने वाली मुलाकात थी। मुझे जांच कराना पसंद है। बता दें, जुलाई में व्हाइट हाउस ने खुलासा किया था कि ट्रंप के पैरों के निचले हिस्से में सूजन और दाहिने हाथ पर चोट के निशान हैं, जबकि तस्वीरों में राष्ट्रपति के टखने सूजे दिखाई दे रहे थे। उनके हाथ का प्रभावित हिस्सा मेकअप से ढका हुआ था।

खैबर पख्तूनख्वा में पुलिस ट्रेनिंग सेंटर पर आतंकी हमला, तीन आतंकवादी ढेर

क्वेटा, एजेंसी। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में शुक्रवार को एक पुलिस प्रशिक्षण केंद्र पर आतंकियों के हमले में तीन आतंकवादी मारे गए और एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। घटना डेरा इस्माइल खान जिले के पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में हुई, जो दक्षिण वजीरिस्तान सीमा के पास स्थित है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 7 से 8 भारी हथियारों से लैस आतंकियों ने केंद्र पर हमला किया। एक आत्मघाती हमलावर ने केंद्र के पास खुद को उड़ा लिया, जिससे सुरक्षा बलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ शुरू हो गई। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में तीन आतंकवादी मारे गए, जबकि चार से पांच आतंकी अभी भी परिसर के भीतर छिपे होने की आशंका है। सुरक्षा बलों का ऑपरेशन जारी है। हमले में एक पुलिसकर्मी मारा गया है। छह अन्य घायल हुए हैं। इस बीच, पाकिस्तान आर्मी की स्पेशल सर्विसेज ग्रुप (एसएसजी) की टुकड़ी भी स्थल पर पहुंच चुकी है।

तुर्किए और इराक के बीच जल बंटवारे पर प्रारंभिक समझौता

अंकारा, एजेंसी। तुर्किए और इराक ने शुक्रवार को टिगरिस और यूफ्रेट्स नदियों के घटते जल प्रवाह को साझा करने और बेहतर प्रबंधन के लिए एक प्रारंभिक समझौते पर सहमति जताई। यह कदम ऐसे समय उठाया गया है जब पश्चिम एशिया के कई हिस्सों में सूखे की स्थिति लगातार गंभीर होती जा रही है। इराक के विदेश मंत्री फुआद हुसैन ने संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा कि इस समझौते पर जल्द ही इराक में हस्ताक्षर किए जाएंगे। गौरतलब है कि इराक लंबे समय से यह आरोप लगाता रहा है कि तुर्किए द्वारा बनाए गए बांध उसके हिस्से का पानी रोक रहे हैं। इराक की अधिकांश ताजा जल आपूर्ति टिगरिस और यूफ्रेट्स नदियों से होती है, जिनका उद्गम तुर्किए में है।

रूस के ड्रोन और मिसाइल हमलों से कीव में 20 घायल, दक्षिण-पूर्व में बच्चे की मौत

कीव, एजेंसी। रूस के ड्रोन और मिसाइल हमलों ने शुक्रवार तड़के यूक्रेन की राजधानी कीव को हिला दिया, जिसमें कम से कम 20 लोग घायल हो गए और एक 7 वर्षीय बच्चे की मौत हो गई। कई आवासीय इमारतें क्षतिग्रस्त हुईं और देश के कई हिस्सों में बिजली आपूर्ति बाधित हो गई। यूक्रेनी अधिकारियों के अनुसार, राजधानी के केंद्र में 17 मंजिला इमारत की छठी और सातवीं मंजिल पर आग लगने के बाद रेस्क्यू टीमों ने 20 से अधिक लोगों को बचाया। पांच लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने कहा कि रूस पूर्वी मोर्चे पर असफलताओं की भरपाई के लिए नागरिक क्षेत्रों को निशाना बना रहा है। वे युद्ध के मैदान में कुछ नहीं कर पा रहे, इसलिए हमारे शहरों और बिजली संयंत्रों पर हमला कर रहे हैं।

पूर्व पीएम ऋषि सुनक को माइक्रोसॉफ्ट और एंथ्रोपिक में काम करने की मंजूरी मिली

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ऋषि सुनक को अमेरिकी टेक कंपनी माइक्रोसॉफ्ट और एआई फर्म एंथ्रोपिक के लिए अंशकालिक वेतनभोगी सलाहकार के रूप में काम करने की मंजूरी मिल गई है। सरकारी निगरानी संस्था एडवाइजरी कमेटी ऑन बिजनेस अपॉइंटमेंट्स ने बृहस्पतिवार को इसकी घोषणा की। समिति ने कहा कि सुनक को दो साल तक दोनों कंपनियों की ओर से सरकार को लॉबी करने की इजाजत नहीं होगी।

सुरक्षा परिषद में भिड़े अमेरिका और वेनेज़ुएला, जमकर हुई बहस: ट्रंप सरकार ने कहा- पीछे नहीं हटने वाले

न्यूयॉर्क, एजेंसी। शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में आपात बैठक हुई। यह बैठक वेनेजुएला ने अमेरिकी हमलों के खिलाफ बुलाई थी, जिसमें अमेरिका और वेनेजुएला के बीच तीखी बहस हुई। वेनेजुएला की मादुरो सरकार ने ट्रंप प्रशासन पर सशस्त्र हमला करने की आशंका जताई, वहीं अमेरिका ने कहा कि वे ड्रग कार्टेल के सफाए के लिए पूरी ताकत लगाएंगे और मादुरो सरकार के आरोपों को खारिज कर दिया। अमेरिका ने हाल के दिनों में वेनेजुएला की चार नौकाओं को निशाना बनाया है। वेनेजुएला का आरोप है कि इन हमलों में 21 लोगों की मौत हुई है।

अमेरिका का दावा- ड्रग कार्टेल के खिलाफ कार्रवाई की : अमेरिका का दावा है कि जिन नौकाओं को निशाना बनाया गया, उनसे वेनेजुएला से ड्रग्स की अमेरिका में तस्करी की जा रही थी। वहीं वेनेजुएला सरकार का आरोप है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, निकोसल मादुरो सरकार को अपदस्थ करने और क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति, सुरक्षा और स्थिरता को खतरा पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। वेनेजुएला ने कैरेबियाई समुद्र में अमेरिकी सेना की बड़े पैमाने पर तैनाती पर भी चिंता जाहिर की। वेनेजुएला ने ट्रंप प्रशासन पर लगाए गंभीर आरोप सुरक्षा परिषद की बैठक में वेनेजुएला के संयुक्त राष्ट्र राजदूत सैमुअल मोनकाडा ने कहा, अमेरिकी सरकार की आक्रामक कार्रवाई और बयानबाजी इस तथ्य की ओर साफ इशारा करती है कि हम एक ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं जिसमें यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जल्द ही अमेरिका, वेनेजुएला पर सशस्त्र हमला कर सकता है। बैठक के दौरान वेनेजुएला को अपने सहयोगी देशों रूस और चीन से समर्थन मिला, लेकिन 15 सदस्यीय परिषद के बाकी सदस्यों ने संभलकर बयान जारी किया और दोनों देशों से तनाव कम करने और संयुक्त राष्ट्र चार्टर का पालन करने की अपील की। संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुसार सभी 193 सदस्य देशों को दूसरे देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना और विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाना जरूरी है।

मोनकाडा ने परिषद से अमेरिकी सैन्य कार्रवाई रोकने और एक ऐसे प्रस्ताव को मंजूरी देने की अपील की, जिसमें अमेरिका सहित सभी सदस्य वेनेजुएला की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करने के लिए प्रतिबद्ध हों। हालांकि अमेरिका और उसकी वीटो शक्ति के कारण परिषद द्वारा इनमें से कोई भी कार्रवाई करने की संभावना नहीं है। अमेरिका ने कहा- ड्रग कार्टेल के खात्मे तक पीछे नहीं हटने वाले संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की इस बैठक में न तो अमेरिकी राजदूत माइक वाल्ट्ज और न ही उनके उप राजदूत शामिल हुए। ट्रंप प्रशासन के राजनीतिक सलाहकार जॉन केली ने इस बैठक में ट्रंप सरकार का पक्ष रखा और कहा कि राष्ट्रपति ट्रंप ने साफ कहा है कि वह इन ड्रग कार्टेल से निपटने और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए पूरी ताकत का इस्तेमाल करेंगे। उन्होंने कहा कि कार्टेल सशस्त्र, सुसंगठित और हिंसक हैं और अमेरिका ऐसी स्थिति में पहुंच गया है जहां हमें आत्मरक्षा और दूसरों की रक्षा के लिए बल प्रयोग करना होगा। केली ने जोर देकर कहा कि अमेरिका, मादुरो या उनकी सरकार को मान्यता नहीं देता है, और ट्रंप के इस दावे को दोहराया कि मादुरो एक नार्कोटेररिस्ट हैं। मादुरो और उनकी सरकार ने इस आरोपों का खंडन किया है।

जिनपिंग के साथ बैठक रद्द करने की बात से पलटे ट्रंप, चीन के नए निर्यात प्रतिबंधों को बताया चौंकाने वाला

वाशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीनी राष्ट्रपति शी जिंगपिंग के साथ मुलाकात रद्द करने वाले बयान पर स्पष्टीकरण जारी किया है। डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी हालिया टिप्पणी, जिसमें उन्होंने शी जिनपिंग से मिलने का कोई कारण नहीं होने की बात कही थी, अब उस बयान पर सफाई दी है। ट्रंप ने कहा कि चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ प्रस्तावित बैठक आधिकारिक तौर पर रद्द नहीं की है। चीन पर बोलते हुए ट्रंप ने व्हाइट हाउस में मीडिया से कहा, नहीं, मैंने रद्द नहीं किया है। हालांकि, मुझे यकीन नहीं है कि हम इसे हासिल कर पाएंगे या नहीं। मैं वहां जरूर जाऊंगा। मुझे लगता है कि हम इसे प्राप्त कर पाएंगे। हालांकि, उन्होंने दुनिया को एक झटका दिया। यह चौंकाने वाला था। अचानक, उन्होंने आयात-निर्यात की यह पूरी अवधारणा बना दी, और किसी को इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था। इससे पहले ट्रंप ने कहा था कि बीजिंग ने दुर्लभ मृदा तत्वों पर व्यापक नए निर्यात नियंत्रण लगाकर बेहद शत्रुतापूर्ण कदम उठाए जाने के बाद, चीनी राष्ट्रपति से मुलाकात करने का कोई कारण नहीं है। ट्रंप ने आरोप लगाया कि चीन ने दुर्लभ पृथ्वी तत्वों पर निर्यात नियंत्रण बढ़ाया है, जो एक अत्यंत आक्रामक रुख है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी थी कि अमेरिका कड़े जवाबी उपायों के साथ जवाब देने की तैयारी कर रहा है।

अल-फाशर में तीन दिनों से हमला, 53 नागरिकों की मौत, 60 से अधिक घायल; यूएन ने मानवता को खतरे में बताया

काहिरा, एजेंसी। सूडान के पश्चिमी हिस्से में अल-फाशर कैम्प और आसपास के इलाकों में इस सप्ताह तीन दिनों में हुए संघर्षों में कम से कम 53 नागरिक मारे गए और 60 से अधिक घायल हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख वोल्कर टर्क ने यह जानकारी दी और चेतावनी दी कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

ड्रोन और तोपखाने के हमलों में दर्जनों मरे : टर्क ने बताया कि पैरामिलिट्री रैपिड सपोर्ट फोर्स द्वारा अबु शौक और दाराजा औला इलाकों में किए गए ड्रोन और तोपखाने के हमलों में 46 लोग मारे गए। इनमें से दर्जनों लोग एल-फाशर के एकमात्र कामकाजी अस्पताल पर हुए शेलिंग में मारे गए। शेलिंग के दौरान पास की मस्जिद भी निशाना बनी, जहां लोग शरण लिए हुए थे।

भड़काऊ हमले और सामूहिक हत्याएं : रैपिड सपोर्ट फोर्स की जमीनी कार्रवाई के दौरान कम से कम सात लोगों की जातिगत हत्या की गई। आरएसएफ और सूडानी सेना पर कथित युद्ध अपराध और मानवता के खिलाफ अपराध का आरोप लगा है और अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय द्वारा जांच चल रही है। टर्क ने कहा कि नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बार-बार अपील करने के बावजूद, उनके खिलाफ हमले जारी हैं। यह युद्ध कानून का उल्लंघन है और इसे तुरंत रोका जाना चाहिए। उन्होंने यूएन सदस्य देशों से तत्काल कदम उठाने का आग्रह किया।

सूडान में अप्रैल 2023 से जारी है गृहयुद्ध सूडान में 2023 से आरएसएफ और सेना के बीच संघर्ष जारी है। डारफुर क्षेत्र इस लड़ाई का मुख्य केंद्र रहा है। युद्ध में अब तक 40,000 से अधिक लोगों की मौत हुई है, 14 मिलियन लोग विस्थापित हुए हैं और कई हिस्सों में, विशेषकर डारफुर में, अकाल की घोषणा की गई है। एल-फाशर, उत्तर डारफुर की राजधानी, पिछले एक साल से घेराबंदी में है। यूएन और अन्य सहायता समूहों का कहना है कि शहर में 2.6 लाख नागरिक फंसे हुए हैं।

रूस ने लौटाए आठ यूक्रेनी बच्चे, रंग लाई मेलानिया की कोशिश; पुतिन से तीन माह की वार्ता का नतीजा

वॉशिंगटन, एजेंसी। रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच अमेरिका की फर्स्ट लेडी मेलानिया ट्रंप ने एक बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने कहा कि पिछले साल अगस्त में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को लिखे गए उनके पत्र के बाद से दोनों के बीच यूक्रेनी बच्चों की सुरक्षा और पुनर्मिलन को लेकर लगातार संवाद चल रहा है। मेलानिया के मुताबिक, दोनों देशों की सरकारें बच्चों की सुरक्षित वापसी के लिए सद्भावना के साथ काम कर रही हैं। मेलानिया ट्रंप ने अपने बयान में कहा एक बच्चे की आत्मा किसी सीमा या झंडे को नहीं जानती। पिछले साल जब मैंने राष्ट्रपति पुतिन को पत्र लिखा, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से जवाब दिया और रूस में रह रहे यूक्रेनी बच्चों के बारे में जानकारी साझा की। तब से हमारे बीच इन बच्चों की भलाई को लेकर लगातार बातचीत हो रही है। 24 घंटे में 8 यूक्रेनी बच्चों को उनके परिवारों से मिलाया उन्होंने बताया कि पिछले तीन महीनों में दोनों पक्षों के बीच कई बैक-चैनल मीटिंग्स और फोन कॉल्स हुई हैं, जिनमें बच्चों को उनके परिवारों से मिलाने पर सहमति बनी। मेलानिया ने कहा पिछले 24 घंटे में 8 यूक्रेनी बच्चों को सफलतापूर्वक उनके परिवारों से मिलाया गया है। फर्स्ट लेडी के इस बयान ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है। यह पहली बार है जब उन्होंने खुलकर स्वीकार किया कि वे पुतिन के साथ मानवीय मुद्दे पर सीधे संवाद कर रही हैं। उन्होंने कहा कि यह प्रयास राजनीति से परे है और केवल मानवता एवं बच्चों के भविष्य से जुड़ा है। मेलानिया ट्रंप ने आगे कहा कि आने वाले हफ्तों में और बच्चों की वापसी सुनिश्चित करने के लिए रूस और यूक्रेन के अधिकारियों के साथ सहयोग जारी रहेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस पहल से युद्ध के बीच फंसे अन्य परिवारों को भी राहत मिलेगी।

पेरू में बोलुआर्ते की जगह जोस जेरी बने अंतरिम राष्ट्रपति; 10 साल में सातवें राष्ट्रपति ने संभाला पदभार

लीमा, एजेंसी। पेरू में शुक्रवार को 38 वर्षीय जोस जेरी ने सातवें राष्ट्रपति के तौर पर पदभार संभाला। यह तब हुआ जब कांग्रेस ने राष्ट्रपति डिना बोलुआर्ते को हटा दिया। जुलाई में कांग्रेस अध्यक्ष बने जेरी ने शपथ लेने के बाद कहा कि वे देश में मेल-जोल बढ़ाएंगे, अपराध कम करेंगे और अगले अप्रैल में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में निष्पक्षता सुनिश्चित करेंगे।

कांग्रेस ने गुरुवार देर रात डिना बोलुआर्ते के खिलाफ महाभियोग प्रक्रिया शुरू की। उन्होंने बोलुआर्ते को अपने सामने उपस्थित होने के लिए बुलाया, लेकिन जब वे नहीं आईं, तो कांग्रेस ने तुरंत उन्हें पद से हटा दिया। कुल 124 सांसदों ने उनके खिलाफ मतदान किया। यह उनके खिलाफ नौवीं महाभियोग कोशिश

थी। बोलुआर्ते की हटाई गई राष्ट्रपति पद डिना बोलुआर्ते पेरू की पहली महिला राष्ट्रपति थीं। उन्होंने दिसंबर 2022 में पद संभाला था। उनके कार्यकाल में बढ़ते अपराध और लगातार प्रदर्शन उनके लिए चुनौती बने रहे। उन्होंने कुछ हिस्सों में देश में अवैध प्रवासियों को अपराध का कारण बताया। जनवरी से अगस्त 2025 तक 6,041 लोग मारे गए और उगाही की शिकायतों में 28% वृद्धि हुई। राष्ट्रपति पद से हटाए जाने के बाद कोई उप-राष्ट्रपति नहीं था, इसलिए कांग्रेस के अध्यक्ष जोस जेरी को अंतरिम राष्ट्रपति बनाया गया। जेरी की राष्ट्रपति बनने की कहानी जोस जेरी 2021 में कांग्रेस में आए और पूर्व राष्ट्रपति मार्टिन विजकार्रा की सीट पर बैठे। जुलाई में वे कांग्रेस अध्यक्ष बने और उनके समर्थन से ही बोलुआर्ते सत्ता में आई थीं। हालांकि, उनके खिलाफ इस साल बलात्कार के आरोपों की जांच हुई, जो बाद में बिना निष्कर्ष के बंद कर दी गई। अपराध और विरोध प्रदर्शनों की चुनौती बोलुआर्ते के पहले तीन महीनों में 500 से अधिक प्रदर्शन हुए। उनकी प्रशासनिक अक्षमता और अपराध नियंत्रण में असफलता उनके हटाए जाने का मुख्य कारण बनी। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि जनवरी से अगस्त 2025 तक 6,041 लोग मारे गए, जबकि आपराधिक शिकायतों में 28% की वृद्धि दर्ज हुई। बोलुआर्ते ने हाल ही में यह स्थिति अवैध प्रवासियों और पिछले प्रशासन की विफलताओं से जोड़कर बयान दिया था। जोस जेरी अब बोलुआर्ते का कार्यकाल पूरा करेंगे और अगले अप्रैल 2026 में चुनाव होंगे। उनका उद्देश्य देश में कानून-व्यवस्था बनाए रखना और अंतरिम अवधि में राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करना है।

अमेरिकी सैन्य विस्फोटक फैक्ट्री में भीषण धमाका, 19 लोग लापता; सभी के मारे जाने की आशंका

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के टेनेसी राज्य में एक सैन्य म्यूनिशन (विस्फोटक) फैक्ट्री में हुए भीषण धमाके ने पूरे इलाके में हड़कंप मचा दिया। इस हादसे में 19 लोग लापता हैं और उनके मृत होने की आशंका जताई जा रही है। हंफ्री काउंटी के शेरिफ क्रिस डेविस ने बताया कि यह अब तक का सबसे भयावह दृश्य था जो उन्होंने अपने करियर में देखा है। उन्होंने कहा हमारी टीम लगातार बचाव कार्य में जुटी है और लापता लोगों के परिवारों से बात कर रही है। यह एक बेहद दुखद और विनाशकारी घटना है।

विस्फोट के कारणों का अभी तक खुलासा नहीं : शेरिफ ने बताया कि फिलहाल मलबे के नीचे से किसी भी शव की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन धमाके की तीव्रता को देखते हुए अधिकारियों को कई लोगों की मौत की आशंका है। विस्फोट के कारणों का अभी तक खुलासा नहीं हो सका है। शुरुआती जांच के अनुसार, हादसा फैक्ट्री में विस्फोटक सामग्री के अनुचित भंडारण या तकनीकी गड़बड़ी की वजह से हुआ हो सकता है। मीलों दूर तक महसूस हुआ धमाका स्थानीय प्रशासन ने बताया कि धमाके की आवाज और झटका कई मील दूर तक महसूस किया गया। घटनास्थल पर दमकलकर्मी और बचाव टीमें लगातार काम कर रही हैं। आसपास के इलाकों को सुरक्षा कारणों से खाली करा लिया गया है। एक अधिकारी ने कहा यह सिर्फ एक हादसा नहीं, बल्कि एक त्रासदी है जिसने पूरे समुदाय को झकझोर दिया है। हमारी प्राथमिकता सभी लापता लोगों को ढूंढने और उनके परिवारों तक सुरक्षित पहुंचाने की है। शेरिफ क्रिस डेविस ने बताया कि विस्फोट का कारण फिलहाल स्पष्ट नहीं है। जांच एजेंसियां मौके पर हैं और पूरी जांच में कई दिन लग सकते हैं। हंफ्री काउंटी इमरजेंसी मैनेजमेंट एजेंसी की प्रवक्ता ग्रे कॉलियर ने बताया कि अब आगे किसी अन्य विस्फोट का खतरा नहीं है।

लेकॉर्नू दोबारा बने फ्रांस के प्रधानमंत्री, मैक्रों ने दिया एक और मौका; राजनीतिक गतिरोध तोड़ने की है चुनौती

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने सेबस्टियन लेकोर्नू को फिर से प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया। लेकोर्नू ने हाल ही में इस्तीफा दिया था, लेकिन राष्ट्रपति ने उन्हें फिर से सरकार बनाने और बजट तैयार करने की चुनौती दी है। यह कदम देश में बढ़ते राजनीतिक और आर्थिक संकट को संभालने की कोशिश माना जा रहा है।

लेकोर्नू की पुनः नियुक्ति कई दिनों की कड़ी बातचीत के बाद हुई है। उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा कि उन्होंने कर्तव्य की भावना से यह जिम्मेदारी स्वीकार की है। उनका मिशन है कि वर्ष के अंत तक फ्रांस को बजट उपलब्ध कराना और आम नागरिकों की रोजमर्रा की समस्याओं का समाधान करना।

बता दें कि सेबेस्टियन लेकोर्नु ने सोमवार को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था, जिसके बाद मैक्रों के राष्ट्रपति पद छोड़ने और संसद भंग करने की मांग उठने लगी थी, लेकिन मैक्रों ने पद छोड़ने से इनकार कर दिया और नया प्रधानमंत्री नियुक्त करने का एलान कर दिया था।

सरकार में बदलाव और शर्तें : लेकोर्नू ने यह भी कहा कि उनकी नई कैबिनेट में शामिल सभी सदस्यों को 2027 में राष्ट्रपति पद के लिए अपनी महत्वाकांक्षा छोड़नी होगी। उन्होंने आश्वासन दिया कि नई सरकार नवीनीकरण और कौशल की विविधता को दर्शाएगी।

मैक्रों का दूसरा कार्यकाल चुनौतीपूर्ण : मैक्रों का दूसरा कार्यकाल 2027 तक है, लेकिन

उन्हें राष्ट्रीय विधानसभा में बहुमत न होने के कारण कई फैसलों को लागू करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। इस पुनर्नियुक्ति को राष्ट्रपति के लिए अपने कार्यकाल को मजबूती देने का आखिरी मौका माना जा रहा है।

फ्रांस का कर्ज कुल जीडीपी का 114 प्रतिशत : बीते एक साल से फ्रांस में राजनीतिक गतिरोध जारी है और यह ऐसे समय हो रहा है, जब यूरोपीय संघ की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बुरे दौर से गुजर रही है। फ्रांस में ऋण संकट बढ़ रहा है। साल 2025 की पहली तिमाही में फ्रांस का कुल कर्ज 3.9 खरब अमेरिकी डॉलर रहा, जो सकल घरेलू उत्पाद का 114 प्रतिशत रहा। राष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान के आंकड़ों के अनुसार, फ्रांस की गरीबी दर भी 2023 में 15.4 प्रतिशत तक पहुंच गई, जो 1996 के बाद सबसे ज्यादा है।

माना जा रहा है कि इमैनुएल मैक्रों को अब पेंशन सुधार के अपने कदम से पीछे हटना पड़ सकता है। मैक्रों के इस कदम की भारी आलोचना और विरोध भी हो रहा है। मैक्रों ने इस बेहद अलोकप्रिय उपाय के लिए कड़ा संघर्ष किया, जिसे व्यापक विरोध के बावजूद 2023 में कानून बना दिया गया।

विशाल सैन्य परेड और सबसे शक्तिशाली हथियारों का जखीरा, किम जोंग-उन ने फिर दुनिया को चौंकाया

सियोल, एजेंसी। उत्तर कोरिया के शासक किम जोंग-उन के नेतृत्व में सत्तारूढ़ दल ने अपनी स्थापना का 80वां वर्षगांठ का जश्न मनाया। किम जोंग और विदेशी नेताओं की मौजूदगी में आयोजित विशाल सैन्य परेड में उत्तर कोरिया ने एक बार फिर दुनिया को चौंका दिया। इस दौरान किम जोंग ने अपनी परमाणु-सशस्त्र सेना के सबसे शक्तिशाली हथियारों का प्रदर्शन किया, जिसमें एक नई अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल भी शामिल है। जिसका परीक्षण वह आने वाले हफ्तों में करने की तैयारी कर रहे हैं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक शुक्रवार रात बारिश में शुरू हुई और सत्तारूढ़ वर्कर्स पार्टी की स्थापना की 80वीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित परेड ने किम की बढ़ती कूटनीतिक पकड़ और एक ऐसा शस्त्रागार बनाने के प्रयास को उजागर किया, जो अमेरिका और एशिया में उनके प्रतिद्वंद्वियों को प्रभावी ढंग से निशाना बना सके।

सैन्य परेड में हथियारों का जखीरा : उत्तर कोरिया की आधिकारिक कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने बताया कि परेड में ह्वासोंग-20 नामक एक नई, अभी तक परीक्षण ना की गई अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल का प्रदर्शन किया गया, जिसे सबसे शक्तिशाली परमाणु रणनीतिक हथियार प्रणाली बताया गया। प्रदर्शन में शामिल अन्य हथियारों में कम दूरी की बैलिस्टिक, क्रूज और सुपरसोनिक मिसाइलें शामिल थीं, जिन्हें उत्तर कोरिया ने पहले प्रतिद्वंद्वी दक्षिण कोरिया में लक्ष्यों पर परमाणु हमला करने में सक्षम बताया था।

अमेरिका का नहीं किया सीधा जिक्र : उत्तर कोरिया की आधिकारिक केसीएनए समाचार एजेंसी के अनुसार, परेड में दिए गए भाषण में किम ने कहा कि उनकी सेना को एक अजेय शक्ति के रूप में विकसित होते रहना चाहिए जो सभी खतरों

को खत्म कर दे, लेकिन उन्होंने वाशिंगटन या सियोल का कोई सीधा जिक्र नहीं किया।

रूस भेजी गई सैन्य टुकड़ी का प्रदर्शन : रूस की ञस्स्समाचार एजेंसी की तस्वीरों और वीडियो में हजारों दर्शकों को किम जोंग उन के राष्ट्र-संस्थापक दादा के नाम पर जगमगाते किम इल सुंग स्क्वायर पर मिसाइल लगे वाहनों के गुजरते हुए दिखाया गया है। केसीएनए के मुताबिक परेड के दौरान मार्च करने वाले सैनिकों की टुकड़ियों में अजेय विदेशी संचालन इकाई शामिल थी, जिसने कोरियाई लोगों के जज्बे का पूरी तरह से प्रदर्शन किया, जिससे पता चलता है कि वे सैनिक थे, जिन्हें किम ने यूक्रेन के खिलाफ युद्ध प्रयास में शामिल होने के लिए रूस भेजा था।

बता दें कि यूक्रेन पर आक्रमण के बाद से किम ने रूस को अपनी विदेश नीति की प्राथमिकता बना लिया है, पुतिन की युद्धक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए हजारों सैनिक और तोपखाने सहित बैलिस्टिक मिसाइलों व हथियारों की बड़ी खेप भेज रहे हैं। किम ने पिछले महीने चीन का भी दौरा किया था और एक विशाल सैन्य परेड में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और पुतिन के साथ मुख्य मंच साझा किया था, जो उनकी कूटनीतिक पकड़ को मजबूत करने के उद्देश्य से एक और कदम था।

जानकारी

कार्डियो एक्सरसाइज के दौरान लें ये 5 चीजें

कार्डियो के एक सेशन के लिए बड़ी मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। कार्डियो वर्कआउट हृदय गति को बढ़ाकर रक्त और ऑक्सीजन के प्रवाह को बेहतर बनाता है। आपको बता दें कि कार्डियो एक्सरसाइज में दौड़ना, तैरना, साइकिल चलाना और बहुत सारे व्यायाम आते हैं। इसके अंतर्गत आने वाले व्यायामों को कम तीव्रता के साथ शुरू करना पड़ता है जिसकी गति धीरे-धीरे बढ़ती है। कार्डियो एक्सरसाइज से वजन तो तेजी से कम होता ही है साथ ही इससे नियंत्रित तनाव, रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल भी नियंत्रित होता है। अपने कार्डियो सत्र को पूरा करने के लिए आपको अच्छे ऊर्जा स्त्रोतों की आवश्यकता होती है। आप पूरी तरह से कार्डियो सत्र के लिए अपनी ऊर्जा को फिर से भरने के लिए कार्ब्स पर निर्भर नहीं हो सकते। अन्य कार्डियो फ्रेंडली आहार विकल्प हैं जिनसे आप पर्याप्त ऊर्जा प्राप्त करने के लिए अपने आहार में शामिल कर सकते हैं।

मिलेगी एनर्जी

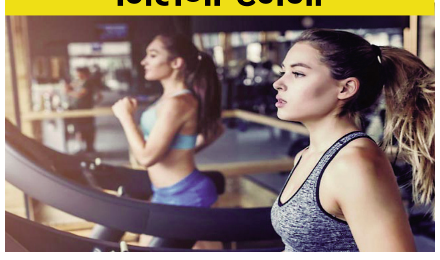

प्रोटीन

प्रोटीन को जिम का सबसे घनिष्ट साथी माना जाता है। प्रोटीन शेक या प्रोटीन युक्त अन्य पदार्थ जिम जाने वालों के लिए वरदान माने जाते हैं। यह आपको तुरंत ऊर्जा प्रदान कर सकता है। आप अपने वर्कआउट के बीच भी इसका सेवन कर सकते हैं। आप भोजन के लिए कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन का संयोजन भी बना सकते हैं। यह एक संपूर्ण भोजन होगा जो आपको तुरंत ऊर्जा प्रदान कर सकता है।

एनर्जी शेक और स्मूदी

कार्डियो करने वालों के लिए एनर्जी शेक और स्मूदी जबरदस्त स्रोत होते हैं। आप कार्डियो फ्रेंडली स्मूदी तैयार करने के लिए दही के साथ अपनी पसंद के फल को मिला सकते हैं। आप अपने कार्डियो सत्र से पहले या सत्र के बीच में शेक या स्मूदी पी सकते हैं। आपको फल के पोषक तत्व प्रदान करेगा। उन्हें तैयार करने के लिए मौसमी फलों का उपयोग करना सबसे अच्छा तरीका है।

फाइबर युक्त आहार

फाइबर एक स्मार्ट विकल्प है, जब कार्डियो फ्रेंडली खाद्य पदार्थों की बात आती है। फाइबर वजन घटाने के अनुकूल होने के साथ-साथ यह आपको लंबे समय तक भरा हुआ रखता है और आपको बार-बार भूख नहीं लगती है। यदि आप अपने आहार में अधिक फाइबर शामिल करते हैं तो आप अनावश्यक कैलोरी का उपभोग करने की संभावना कम करते हैं।

नट्स और सीड्स

नट्स और सीड्स का मिश्रण आपको तुरंत ऊर्जा दे सकता है। मुट्ठी भर नट आपके लिए आवश्यक ऊर्जा देने के लिए पर्याप्त हैं। नट्स और सीड्स आपको अधिक समय तक भरे रखते हैं और आपको बेकार की चीजों को खाने से रोकते हैं। नट्स और सीड्स में से कुछ जिन्हें आप अपने आहार में शामिल कर सकते हैं, उनमें हैं- बादाम, फ्लैक्स सीड्स, भांग के बीज, चिया सीड्स और अखरोट।

साबुत अनाज

साबुत अनाज अपने आप में ही कई पोषक तत्वों का स्त्रोत होता है। साबुत अनाज का सेवन आपको वजन कम करने में मदद करने के लिए आपको पर्याप्त फाइबर प्रदान करेगा। साबुत अनाज में कार्ब्स की मात्रा अधिक होती है जो कार्डियो फूड के अनुकूल बनाती है। आप विभिन्न तरीकों से अपने आहार में साबुत अनाज शामिल कर सकते हैं। साबुत अनाज आपको कार्डियो के लिए अधिक ताकत प्रदान करेगा और आपकी मांसपेशियों के लिए ईंधन का काम करेगा।

गर्भावस्था के बारे में ये बातें कोई नहीं बताता आपको

जो गर्भावस्था एक महिला के जीवन के सबसे रोमांचक और चुनौतीपूर्ण समय में से एक है, लेकिन कई महिलाएं मातृत्व के इस नौ महीने की इस यात्रा को बहुत कम जानते हुए शुरू करती हैं। ऐसी कई बातें है जिनका उल्लेख महिलाओं को तब होता है जब वह उनके साथ होती है।

गर्भावस्था में इन बातों को नहीं जानती आप

गर्भावस्था एक महिला के जीवन के सबसे रोमांचक और चुनौतीपूर्ण समय में से एक है, लेकिन कई महिलाएं मातृत्व के इस नौ महीने की इस यात्रा को बहुत कम जानते हुए शुरू करती हैं। इम्पीरियल कॉलेज ऑफ लंदन के प्रोफेसर विवेत्ते ग्लोवर फ्रॉम के अनुसार गर्भधारण करने के बाद महिला का शरीर कई बदलावों से गुजरता है। महिला के शरीर में बदलाव हार्मोन में परिवर्तन के कारण होते हैं। लेकिन ऐसी कई बातें है जिनका उल्लेख महिलाओं को तब होता है जब वह उनके साथ होती है। आइए ऐसी ही कुछ बातों की जानकारी हम आपको देते हैं।

श्रोणि में दर्द

गर्भावस्था के दौरान एक महिला का शरीर जन्म देने के लिए तैयार होने के कारण कई सामान्य परिवर्तनों से गुजरना पड़ता है। इस दौरान रिलैक्सिन नामक हार्मोन के स्राव, स्नायुबंध, मसल्स और नसों को अधिक से अधिक लचीलापन देता है। इसके अलावा, रिलैक्सिन बच्चे के सिर को नीचा लाने के लिए एक महिला के श्रोणि पर्याप्त लचीला बनाता है। इस अतिरिक्त लचीलेपन के साथ मसल्स को खींचाव आसान होता है। कभी-कभी गर्भावस्था के अंतिम दिनों में, जोड़ महिला के श्रोणि के दो हिस्सों को एक साथ कसकर रखते हैं, बिल्कुल अलग होकर एसपीडी का कारण बनता है। इससे महिला के खड़े होने, घूमने और बैठे रहने पर श्रोणि और पीठ में दर्द होने लगता है।

भावनात्मक बदलाव

प्रोफेसर ग्लोवर के अनुसार गर्भवती में अन्य महिलाओं की तुलना में चिंता और अवसाद के लक्षण अधिक देखने को मिलते हैं। इस दौरान किसी भी महिला में असामान्य भावनात्मक परिवर्तन होना सामान्य ही माना जाता है। हॉर्मोन्स में हो रहे बदलावों के चलते महिलाओं के स्वभाव में तो परिवर्तन आता ही है और वे अधिक गुस्सा करने लगती हैं। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा और अजीब सा हो जाता है। इसके अलावा हार्मोनल बदलाव, विशेष रूप से गर्भावस्था के पहले तीन महीनों में होने वाले बदलाव महिला के मन को प्रभावित कर उसे बीमार, थक हुआ और रुआंसा महसूस कराते हैं। लेकिन यह बदलाव बच्चे के स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता है।

मसूड़ों से खून बहना

कई बार गर्भवती महिलाओं को मसूड़े से खून आने की दिक्कत अधिक होती है। इसे प्रेग्नेंसी जिन्जवाइटिस भी कहते हैं। इसमें हार्मोनल बदलाव की वजह से मसूड़ों तक सही तरीके से ब्लड नहीं पहुंच पाने के कारण मसूड़े कमजोर होने लगते हैं और उनसे खून निकलता है। इसलिए महिलाओं को ब्रश करते समय या फ्लॉस करते समय आपके दांतों में से खून आता है तो आपको डेंटिस्ट के पास तुरन्त जाना चाहिए। साथ ही अपने दांतों की अच्छी तरह से देखभाल के लिए नियमित रूप से चेकअप के लिए अपने दंत चिकित्सक के पास जाये।

कब्ज

अधिकांश महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान कब्ज की शिकायत रहती है। हार्मोन्स में आए बदलाव के कारण शरीर की पाचन प्रक्रिया धीमी होने पर आंतों की शिथिल मांसपेशियां कब्ज पैदा करने लगती हैं। गर्भावस्था के आखिरी दो तिमाही में आंतों पर गर्भाशय का दबाव कब्ज पैदा कर देता है। इससे निजात पाने गर्भवती को अपने नियमित आहार में फाइबर (रेशेदार) युक्त खाद्य पदार्थ जैसे फल एवं सब्जियों व दालों का ज्यादा से ज्यादा मात्रा में सेवन करना चाहिए। खूब पानी पिएं। कैफीन युक्त पेय पदार्थों के सेवन करने से बचें, क्योंकि कैफीन से आपका शरीर नियमित रूप से मल त्यागने के लिए आवश्यक द्रवों को नष्ट कर देता है। इसके अलावा हल्के व्यायाम को शामिल करें।

बवासीर

लगभग 50 प्रतिशत गर्भवती में बवासीर की समस्या देखने को मिलती है- जिसमें मलाशय में सूजन और उभड़ी हुई नसों की समस्या, आमतौर पर प्रसव के बाद बेहतर हो जाती है। गर्भावस्था के दौरान गर्भाशय के विस्तार से मलाशय नसों पर अधिक दबाव पड़ने से बवासीर की समस्या होने लगती है। इस समस्या के चलते खुजली और खून बहने के साथ लंबे समय तक बैठने पर असहज महसूस होता है।

बालों के टेक्सचर में बदलाव

गर्भावस्था के दौरान महिलाओं के बालों की ग्रोथ के साथ-साथ उनके टेक्सचर में भी काफी बदलाव दिखता हैं। यह सब गर्भावस्था के दौरान महिलाओं मे आए हॉर्मोनल बदलाव के कारण होता है, इसको एस्ट्रोजन नामक हॉर्मोन प्रभावित करता है। जिसके बढ़ने से बाल अधिक घने और चमकदार होने लगते हैं। बच्चे को जन्म देने के बाद ये साइकल सामान्य हो जाते हैं। लेकिन डिलीवरी के बाद कई महिलाओं को हेयर फॉल की शिकायत रहती है। क्योंकि ऐसे मे पहले ही बढ़े हुए बालों का बढ़ना रुक जाता है और वह सब एक साथ गिरने लगते हैं।

सुनाई कम देना

गर्भावस्था हार्मोन कभी-कभी अस्थायी सुनवाई हानि या टिनिटस (कान में घंटी जैसा बजना) का कारण भी बनता है। कुछ गर्भवती महिलाओं, विशेष रूप से एलर्जी से ग्रस्त महिलाओं में साइनस की समस्या अधिक देखने को मिलती है। भीतरी कान में तरल पदार्थ के साथ नम और संचार प्रणाली के साथ जुड़े होने के कारण, गर्भावस्था में रक्त की मात्रा के बढ़ने पर महिलाओं के कंबुकर्णी नली को प्रभावित कर, कान के अवरुद्ध होने की भावना पैदा करता है। चाहे आप गर्भवती है या नहीं, लेकिन ठंड जैसे वायरस के पकड़ने पर समस्या दूर होने तक अस्थायी रूप से आपको कम सुनाई देता है।

सुझाव

स्वस्थ फेफड़ों के लिए लें खास आहार

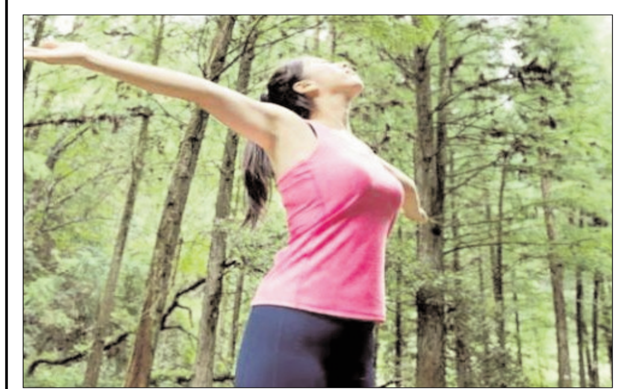

हमारा खान-पान कैसा हो जो फेफड़ों के लिए फायदेमंद रहे। अगर फेफड़ों में कोई परेशानी हो, तो अपने खाने में क्या शामिल करें प्रदूषण, धूम्रपान आदि के दुष्प्रभावों के कारण छाती व फेफड़ों से संबंधित परेशानियां बढ़ती जा रही हैं। हम आहार पर थोड़ा-सा गौर करके अपने फेफड़ों को ज्यादा सेहतमंद बना सकते हैं।

क्या खाएं

विटामिन सी युक्त भोजन और फल लें। इनमें खट्टे फल, नीबू, संतरा, मौसमी आदि प्रमुख है। संतुलित आहार लें, जो दाल और अन्न से परिपूर्ण होना चाहिए। यदि फेफड़ों से संबंधी कोई परेशानी है या फेफड़ों में किसी तरह के संक्रमण की शिकायत है तो प्रोटीन से भरपूर डाइट लें, ताकि शरीर में हुई क्षति को जल्दी ठीक किया जा सके। प्रोटीन के लिए सोयाबीन, सभी तरह की दालें, पनीर, अंडा आदि खा सकते हैं। दिन में कम-से-कम डेढ़ से दो लीटर पानी अवश्य पिएं। इससे बलगम को बाहर निकलने में सहायता मिलती है। फलों से मिलने वाले विटामिन्स और मिनरल्स फेफड़ों को दुरुस्त रखने में सहायक होते हैं। मौसमी फल खाना अधिक हितकर होता है। खाने-पीने का समय निर्धारित करें और नियमित अंतराल पर खाएं।

मौसम के अनुरूप यह रखें ध्यान

आजकल के उमस भरे मौसम में फेफड़ों को स्वस्थ रखने या उनसे संबंधित परेशानी से राहत के लिए पानी खूब पिएं। फेफड़ों से संबंधित किसी तरह की परेशानी है तो बहुत खट्टा या ठंडा न खाएं। इससे फेफड़ों में सूजन की आशंका रहती है। शरीर को एकदम सर्दी से गर्मी या गर्मी से सर्दी में ले जाने से बचें।

क्या नहीं खाएं

बासी भोजन न करें। इससे फेफड़ों को नुकसान पहुंचता है और पाचन तंत्र भी बिगड़ता है। यदि फेफड़ों का किसी तरह का रोग है, तो तेज मसाले और तला-भुना खाने से भी बचें, क्योंकि इससे एसिडिटी की शिकायत हो सकती है, जो फेफड़ों के लिए बहुत हानिकारक होती है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। शुभांक-3-8-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-5-6-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-6-7-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। सच्चाई का सहारा लें कार्यसिद्धि होगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। समय आपके पक्ष का बना रहेगा। शुभांक-3-7-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-2-6-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शुभांक-3-7-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-4-8-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। माता पक्ष से विशेष लाभ होगा। शुभांक-4-6-7

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार मिलेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। शुभांक-3-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): किसी से कहा सुनी न हो यही ध्यान रहे। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती हैं। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। शुभांक-4-6-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। सब्र का फल मीठा होता है अतः धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। मनोबल ऊंचा रखें काम में लगे रहें लाभ होगा। विपरीत परीस्थितीयों में भी हानि नहीं होगी। शुभांक-5-7-8

काकुरो पहेली - 2615

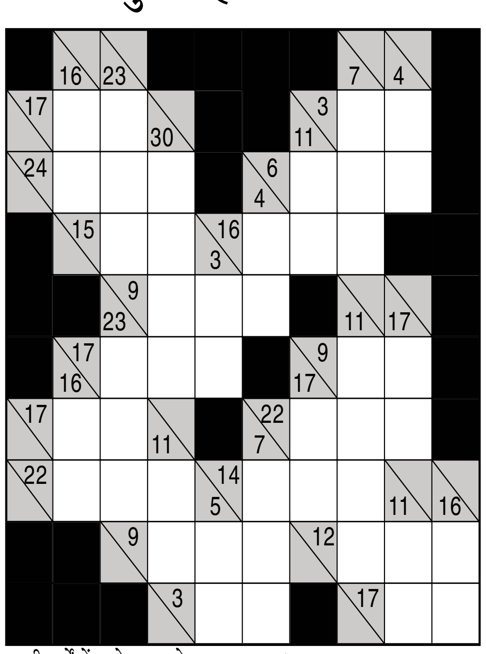

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

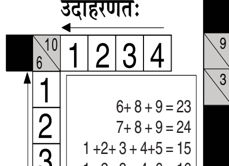

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 2614 का हल

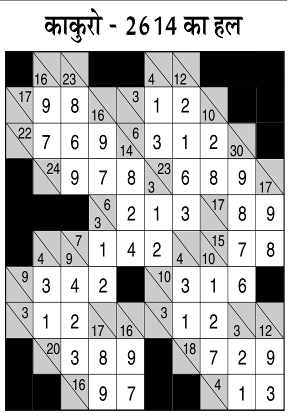

लॉफिंग ज़ोन

रमन और चमन दवा बेचने का काम करने लगे।

चमन- यह दवा ले लीजिए, इसे खाने वाला सदा जवान रहता है, कभी बूढ़ा नहीं होता। मुझे देखिए अभी मेरी उम्र अभी सिर्फतीन सौ साल है।

दुकानदार (पास खड़े व्यक्ति से बोला)- क्या तुम्हें ये तीन सौ साल के लगते हैं।

रमन- यह मैं कैसे बताऊँ! मैं तो इनके साथ डेढ सौ साल से हूँ।

रमन (नरेश से)- तुम्हारी पत्नी रोजाना घर में इतनी खिटपिट करती रहती है। तुम इतना तनावपूर्ण वातावरण को कैसे सह लेते हो?

नरेश (बड़े इत्मीनान से बोला)- दोस्त! ऑफिस एक ऐसा स्थान है, जहाँ आप घर के तनावों से मुक्ति पाकर विश्राम कर सकते हैं। और रोजाना मैं भी वही करता हूँ।

रमन-चमन आपस मे बातें कर रहे थे।

रमन (चमन से)- मेरी पत्नी दूसरी मंजिल से गिर गई।

चमन- क्या वह मर गई?

रमन- नहीं यार, यह तो अच्छा हुआ कि वह बाल-बाल बच गई।

चमन- अरे यार, तुम केवल बालों का क्या करोगे।

फिल्म वर्ग पहेली-2615

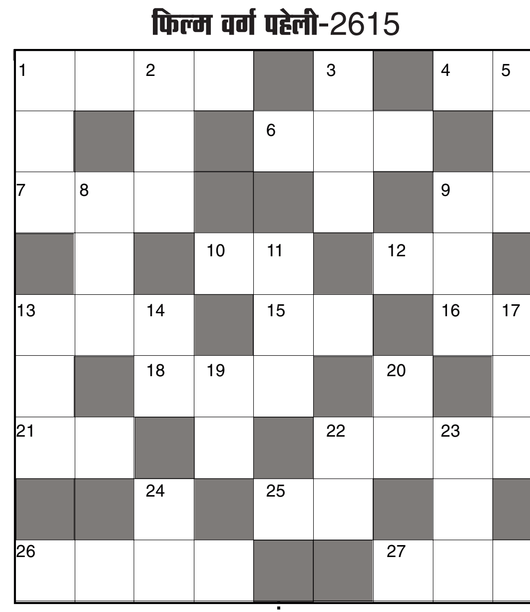

बायें से दायें:-

१. अमिताभ, सलमान, हेमा, महिमा की 'होरी खेले' गीत वाली फिल्म-४
४. 'नचना तेरे नाल' गीत वाली अमिताभ, जैकी श्रॉफ, मधु सप्रे, कैटरीना कैफ, जीनत, सीमा की फिल्म-२
६. सुनील शेट्टी, सोनाली बेंद्रे की 'तुम से मिलने को' गीत वाली फिल्म-३
७. 'चढ़ गया ऊपर रे' गीत वाली मिथुन, आयशा जुल्का की फिल्म-३
९. अमजद, विनोद मेहरा, बिंदिया की 'पर्दे में कोई बैठा है' गीत वाली फिल्म-२
१०. 'मिलती है झुकती है' गीत वाली आफताब, युक्ता मुखी की फिल्म-२
१२. बलराज साहनी, नूतन की 'तु प्यार का सागर है' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'मेरी पैंट भी सैक्सी' गीत वाली गोविंदा, करिश्मा की फिल्म-३
१५. अजय देवगन, पुजा, सोनाली की 'तुम आये तो' गीत वालीफिल्म-२
१६. 'दिल ही दिल में' गीत वाली विवेक ओबेराय, दीया की फिल्म-२
१८. अजय, अभिषेक, बिपाशा की 'दिल्ली की सर्दी' गीत वाली फिल्म-३
२१. अमिताभ वाली फिल्म 'याराना' की नायिका कौन थी-२
२२. 'टपका रे टपका' गीत वाली संजयदत्त, माधुरी की फिल्म-४
२५. धर्मेन्द्र, हेमा की 'दुनिया जब जलती है' गीत वाली फिल्म-२
२६. 'अल्हड़ मस्त जवानी' गीत वाली अजय देवगन, ग्रेसी सिंह की फिल्म-४
२७. डिनो मोरिया, बिपाशा की 'जब दिल चुराये' गीत वाली फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. अक्षय, रवीना की 'एक लड़की एक लड़का' गीत वाली फिल्म-३
२. 'आँखों के रस्ते' गीत वाली बॉबी देओल रानी मुखर्जी की फिल्म-३
३. गोविंदा, करिश्मा की 'तुमसा कोई प्यारा' गीत वाली फिल्म-३
५. 'चुपके से दिल' गीत वाली राजकुमार, राजेश खन्ना, मालासिन्हा की फिल्म-३
८. अनिल कपूर, श्रीदेवी, रवीना की 'लड़की है क्या' गीत वाली फिल्म-३
९. 'जागे जागे नैनों में' गीत वाली अमोल पालेकर, रंजीता की फिल्म-३
११. संजय, सलमान, माधुरी की 'जियें तो जियें' गीत वाली फिल्म-३
१३. 'बन्नो तेरी आँखियाँ' गीत वाली सनी, जैकी, मनीषा की फिल्म-३
१४. डिनो, बिपाशा की 'कितना प्यारा है' गीत वाली फिल्म-२
१७. 'रहें ना रहें हम' गीत वाली धर्मेन्द्र, सुचित्रा सेन की फिल्म-३
१९. 'मैं चुप रहूँगी' में सुनीलदत्त के साथ नायिका कौन थी?-२
२०. फिल्म 'करीब' में बॉबी देओल के साथ नायिका कौन थी?-२
२२. आफताब, उर्मिला की 'सुना था देखा ना था' गीत वाली फिल्म-२
२३. 'मैं तेरी दुश्मन' गीत वाली ऋषि कपूर, श्रीदेवी की फिल्म-३
२४. जाकिर, शबाना, अरूणा की 'बादल चाँदी बरसाये' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2614

ऐ	त	बा	र		जु	र्म		जी	
त		द		क	र्मा		घा	त	क
रा	हु	ल		री	ना	रा	य		र्म
ज			हि	ना		जा	ल		यो
	फ	की	रा		शी	बा		बा	गी
क	र्ज		स	नी		बू	म		
र		शी	त	ल			हा	सि	ल
म	हा	न		क	न्या	दा	न		व
	द		ना	म		दा	ता		स्टो
सं	सा	र		ल	की			नू	री

सूडोकु -2615

		5			8			3
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6			7			1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
6			2			7		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2616 का हल

9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8

शब्द पहेली -2615

बाएँ से दाएँ

1. जानकारी-4
4. मांसाहार का उलट-4
8. 'जुम्मा चुम्मा दे दे' गीत वाली फिल्म-2
9. कायाकल्प-5
10. पिता के छोटे भाई-2
13. कहानी लिखने वाला-5
15. नाम रखना-5
17. बेवक्त, अकाल-5
20. प्रयास, कोशिश-5
23. टोंटी, नलका-2
24. कामदेव, पुष्कर-2,3
25. डर, भय-4
28. शोर-शराबा-4
29. बेवफा, व्यभिचारी-4

ऊपर से नीचे

2. बिंदु, बिंदी, शून्य-2
3. गोलाकार-3
4. सम्मिलित होना-3,2
5. घाटा, नुकसान-2
6. मूर्ख, बेवकूफ-4
7. बिना कारण, बेवजह-4
11. राजा की पत्नी-2
12. वहम, संदेह-2
14. दुर्घटना-3
16. खाना बनाने की जगह, किचन-3
17. एकाएक, सहसा-4
18. अलमस्त-2
19. कमल ककड़ी, कमल डंडी-3,2
20. आरामदायी-5
21. सम्मान-2
22. भलमानसता-4
26. सद्, अच्छा-2
27. मृत्यु, प्रारब्ध, न्याय निर्णय-2

शब्द पहेली -2614 का हल

अजमेर : बाल खींचकर जमीन पर घसीटा, JCB से टीन शेड तोड़ डाला... दलित महिला के साथ भाई-बहन ने की मारपीट- VIDEOआईपीएस अधिकारी की मौत के मामले पर आयोग ने लिया संज्ञान, मुख्य सचिव से मांगी रिपोर्ट

एजेंसी

अजमेर। राजस्थान के अजमेर के अलवर गेट थाना क्षेत्र में दलित महिला के साथ मारपीट करने और धमकाने का मामला सामने आया है, जहां मदार स्थित इंदिरा नगर में जमीन विवाद को लेकर दबंगों ने पहले महिला को बेरहमी से पीटा और उसके प्लॉट पर बने टीन शेड को जेसीबी मशीन से तोड़ दिया. इस घटना का वीडियो भी सामने आया है, जिसके बाद इलाके में आक्रोश का माहौल है.

अलवर गेट थाने के एएसआई बाबूलाल ने बताया कि 10 अक्टूबर को इंदिरा नगर मदार की रहने वाली किशनलाल सोगरा (जाति कोली) की पत्नी परिवादिया ललिता कुमारी ने थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई. शिकायत में महिला ने बताया कि उसका एक प्लॉट इंदिरा नगर मदार क्षेत्र में मौजूद है. उसी प्लॉट पर रवि गहलोत और रेणु कब्जा करने का कोशिश कर रहे हैं.

जेसीबी से टीन शेड तोड़ डाला

महिला ने रिपोर्ट में बताया कि आरोपी भाई-बहन अपने साथ जेसीबी मशीन

लेकर आए और जबरन उसके प्लॉट पर बने टीन शेड और बाउंड्री दीवार को तोड़ दिया. जब उसने इसका विरोध किया तो दोनों ने उसके साथ मारपीट की. बाल पकड़कर जमीन पर घसीटा और जान से मारने की धमकी दी. पीड़िता ने रिपोर्ट में बताया कि आरोपियों ने न सिर्फ उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया. बल्कि, जातिसूचक शब्दों का भी इस्तेमाल किया. घटना का वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने मामले को गंभीरता से लिया और एससी/एसटी अधिनियम सहित अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है.

पुलिस मामले की जांच में जुटी

एएसआई बाबूलाल ने बताया कि आरोपियों रवि गहलोत और रेणु के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है और मामले की जांच की जा रही है. उन्होंने कहा कि आरोपियों की तलाश की जा रही है और जल्द ही उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा. वहीं, पीड़िता ललिता कुमारी ने कहा कि उसे और उसके परिवार को लगातार धमकियां मिल रही हैं और उसने पुलिस से सुरक्षा की गुहार लगाई है. पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर कार्रवाई की जाएगी.

जब तक बकरा-मुर्गा नहीं खिलाओगे, तब तक... लव मैरिज करने पर दामाद के घर पहंच गए 45 गांव के लोग, रखी अनोखी शर्त

छत्तीसगढ़. लव मैरिज करने पर हंगामे की कई खबरें आपने सुनी होंगी, लेकिन क्या कभी सुना है कि लव मैरिज करने पर सजा के रूप में एक-दो नहीं बल्कि 500 लोगों को खाना खिलाना पड़े. ऐसा मामला छत्तीसगढ़ के कांकेर से सामने आया है, जहां महाराष्ट्र की एक युवती से छत्तीसगढ़ के एक युवक ने लव मैरिज की तो महाराष्ट्र के कांकेर के भूमकाम और आसपास 45 गांव के 500 लोग छत्तीसगढ़ पहुंच गए और डेरा डाल दिया. गांव वालों को कहना है कि जब तक दामाद शादी का बकरा-मुर्गा भात नहीं खिलाएगा, तब तक वह इस शादी को नहीं मानेंगे.

युवक छत्तीसगढ़ के ग्राम पंचायत विष्णुपुर का रहने वाला है, जिसकी पहचान 26 साल के प्रभास विश्वास के रूप में हुई है. उसने महाराष्ट्र के भूमकाम गांव की रहने वाली 25 साल की अलीसा पोटामी से साल 2022 में कोर्ट में शपथपत्र देकर लव मैरिज की थी, लेकिन अलीसा पोटामी नर्सिंग की पढ़ाई कर रही थी. इसलिए वह ससुराल न जाकर अपनी पढ़ाई पूरी करने लगी थी.

10 दिन पहले युवक के घर पहुंची युवती

अब जब अलीसा की पढ़ाई पूरी हुई तो वह 10 दिन पहले युवक के घर छत्तीसगढ़ के पीवी 101 विष्णुपुर पहुंच गई. जब बेटी घर नहीं गई तो उसके परिजन ने थाने में उसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई. पुलिस ने मामले की जांच की और युवती से पूछताछ कर उसका बयान दर्ज किया. युवती ने बताया कि वह बालिग है और अपनी मर्जी से शादी की है. इसके बाद पुलिस युवती के बालिग होने के चलते मामले को खत्म कर वापस लौट गई.

45 गांव के 500 लोगों ने डाला डेरा

इसके बाद जब गांव वालों को युवती की शादी की बात पता चली तो वह युवती के परिजन के साथ विष्णुपुर पहुंच गए. करीब 500 लोग युवक के गांव पहुंचे. लड़की आदिवासी समाज से ताल्लुक रखती है. ऐसे में आदिवासी समाज के 45 गांव के 500 लोगों ने विष्णुपुर में डेरा डाला. उनका कहना है कि उन्हें शादी से कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन युवक को आदिवासी समाज की परंपरा को निभाना होगा.

पहले डिमोशन, अब कानपुर के करोड़पति लेखपाल आलोक दूबे की और बढ़ी मुश्किलें, हुआ ये एक्शन

एजेंसी

कानपुर। कानपुर में करोड़पति कानूनगो मामले में पुलिस ने बड़ी कार्यवाही करते हुए कानूनगो समेत 7 आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी है. इसमें एक महिला लेखपाल भी शामिल है. आरोपी कानूनगो आलोक दुबे को डीएम ने पहले ही डिमोशन करके लेखपाल बना दिया है. अब सभी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल होने के बाद राजस्व विभाग में हड़कंप मचा हुआ है. जिले में जमीन विवाद से जुड़ा एक बड़ा फर्जीवाड़ा उजागर हुआ था, जिसमें कानूनगो से डिमोट करके लेखपाल बने आलोक दुबे समेत सात लोगों के खिलाफ गंभीर धाराओं में चार्जशीट दाखिल की गई है.

मामला करोड़ों रुपये की भूमि की फर्जी रजिस्ट्री और दानपत्र से जुड़े षड्यंत्र

का है, जिसमें बिल्डर और राजस्व कर्मियों की सांठगांठ सामने आई है. पुलिस जांच के बाद आरोप पत्र संख्या 158/2025 न्यायालय में दाखिल किया गया. आरोपितों में राजपति देवी, राजकुमारी देवी, रघुवीर सिंह, अरुण सेंगर उर्फ अमन सेंगर, ऋहत इंफ्रा के भागीदार अमित गर्ग, तत्कालीन लेखपाल अरुणा द्विवेदी और तत्कालीन कानूनगो आलोक दुबे शामिल हैं.

मामला कैसे शुरू हुआ

यह विवाद सचेंडी थाना क्षेत्र के कला का पुरवा से जुड़ा है. निवासी संदीप सिंह ने तहरीर देकर आरोप लगाया कि स्व. गंगा सिंह के हिस्से की भूमि पर फर्जी रजिस्ट्री कराई गई. वादी की मां मोहनलाल उर्फ लाल साहिबा ने पहले ही अपने पति के हिस्से की जमीन का कुछ भाग वसीयत और कुछ भाग दानपत्र के माध्यम से हस्तांतरित कर दिया था. इसके बावजूद राजपति देवी और राजकुमारी देवी ने संपूर्ण भूमि पर दावा करते हुए रजिस्ट्री करा ली.

नहीं हुआ चैक से भुगतान

शेष भूमि ऋहत इंफ्रा के भागीदार अमित गर्ग के नाम रजिस्टर्ड अनुबंध से हस्तांतरित की गई. जांच के दौरान यह भी सामने आया कि रजिस्ट्री में जिन चेक नंबरों का उल्लेख किया गया, उनका भुगतान कभी हुआ ही नहीं. विवेचना से स्पष्ट हुआ कि तत्कालीन कानूनगो आलोक दुबे और तत्कालीन लेखपाल अरुणा द्विवेदी ने यह जानते हुए भी कि विवादित भूमि खतौनी में राजपति और राजकुमारी के नाम दर्ज नहीं है, फर्जी दस्तावेज तैयार कराए.

उन्होंने न्यायालय को धोखे में रखकर नाम चढ़ाने का आदेश कराया और उसी दिन रजिस्ट्री भी कराई. अपर जिलाधिकारी (वि/रा) की त्रिस्तरीय जांच रिपोर्ट में दोनों पर अनुचित लाभ पहुंचाने का आरोप सिद्ध हुआ. विवेचक ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि यह अपराध लोक सेवकों द्वारा पदीय कर्तव्यों के निर्वहन में नहीं बल्कि निजी स्वार्थ के लिए किया गया, इसलिए अभियोजन स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है.

कानपुर पुलिस ने करोड़ों रुपये की फर्जी भूमि रजिस्ट्री घोटाले में कानूनगो से डिमोट होकर लेखपाल बने आलोक दुबे सहित सात आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है. चार्जशीट दाखिल होने के बाद से ही राजस्व विभाग में हड़कंप मचा हुआ है.

बहू के कमरे में पांच दिन से रह रहा था बॉयफ्रेंड, अचानक आ गए सास-ससुर... रोमांस करते पकड़ा तो करवा दी शादी

एजेंसी

भागलपुर । बिहार के भागलपुर में शादीशुदा महिला का एक युवक से अफेयर था. दोनों चोरी-छिपे मिला करते थे. मगर वो कहते हैं ना कि इश्क और मुश्क छिपाए नहीं छिपते. यहां भी कुछ ऐसा ही हुआ. एक रोज जब प्रेमी अपनी शादीशुदा प्रेमिका से मिलने पहुंचा, सास-ससुर ने दोनों को रोमांस करते देख लिया. बस फिर क्या था. बात पूरे गांव में फैल गई. फिर दोनों की शादी करवा दी गई. हैरानी की बात यह रही कि महिला के पति ने खुद कहा अगर मेरी पत्नी को उसी से प्यार है तो मैं उसकी शादी उसी से करवा देता हूं.

जानकारी के मुताबिक, मुंगेर जिले के तारापुर की रहने वाली साक्षी (20) (बदला हुआ नाम) की शादी करीब एक साल पहले अंगारी गांव के बिट्टू उर्फ सिकंदर कुमार सिंह से हुई थी. शादी के कुछ दिन बाद ही बिट्टू रोजगार के सिलसिले में बेंगलुरु चला गया.

राहुल को घर बुलाती थी प्रेमिका

इसी बीच साक्षी का अपने पुराने प्रेमी राहुल सिंह से दोबारा संपर्क हो गया और दोनों फिर करीब आने लगे. बिट्टू ने गांव में परिवार से अलग एक नया मकान बनवाया था जिसमें साक्षी अकेली रहती थी. पति के बाहर रहने का फायदा उठाते हुए साक्षी ने करीब पांच दिन पहले अपने प्रेमी राहुल को

घर बुला लिया. परिवार को शक न हो इसके लिए उसने बहाना बनाया कि तबीयत ठीक नहीं है और वह खाना नहीं बना पा रही है. राहुल घर के छज्जे पर बने एक छोटे कमरे में रह रहा था.

भागलपुर के जगदीशपुर थाना क्षेत्र के अंगारी गांव में एक अजीबो-गरीब प्रेम प्रसंग ने सबको हैरान कर दिया. यहां एक शादीशुदा महिला से मिलने पहुंचे उसके प्रेमी को गांव वालों ने पकड़ लिया और फिर दोनों की शादी करवा दी.

विदा करके ले गए बहू को

बीती रात जब साक्षी के सास-ससुर खाना देने पहुंचे, तो उन्होंने दोनों को आपत्तिजनक हालत में देख लिया. इसके बाद पूरे मोहल्ले में हड़कंप मच गया. ग्रामीणों की भीड़ जुटी और पंचायत बुलाई गई. पंचायत के फैसले के बाद प्रेमी-प्रेमिका की गांव में ही शादी करा दी गई.

गांव वालों की मौजूदगी में शादी के बाद दोनों से स्टांप पेपर पर यह लिखवाया गया कि अब वे पति-पत्नी के रूप में साथ रहेंगे. इसके बाद राहुल के परिवार वाले भी मौके पर पहुंचे और हिंदू रीति-रिवाज से लड़की को विदा कराकर अपने घर ले गए.

बम बनाते हुए जोरधार ब्लास्ट, 80 प्रतिशत झुलसा युवकज एक किलोमीटर दूर तक सुनाई दिया धमाका

एजेंसी

कानपुर । उत्तर प्रदेश के कानपुर में बीते दिनों विषातखाना में हुए बम धमाके के बाद कानपुर कमिश्नरेट पुलिस ने सख्ती दिखाई थी, जिसके बाद अगले ही दिन थाना फजलगंज, नौबस्ता क्षेत्र में भारी मात्रा में अवैध रूप से इकट्ठे किए गए पटाखे बरामद किए गए थे, लेकिन शहर के बाहरी इलाकों में अवैध पटाखों का निर्माण अब भी जारी है. सचेंदी क्षेत्र में पटाखा बनाते समय धमाका हो गया, जिसमें एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया. युवक का हाथ का पंजा पूरा उड़ गया.

इस घटना में युवक 80 प्रतिशत जल गया है. युवक का इलाज कानपुर के उर्सला अस्पताल में चल रहा है. घायल के बारे में जानकारी देते हुए हौसला के चीफ फिजिशियन सपन गुप्ता ने बताया कि जले हुए युवक की हालत बेहद गंभीर है. उसका इलाज जारी है. घटना की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने धमाके के बाद घायल युवक को सुतली बमों के ढेर में पड़ा देखा था, जिसमें बाद उसे अस्पताल लाया गया.

हाथों के पंजे बुरी तरह से जल गए

थाना सचेंडी पुलिस ने बताया

कि बम बनाते समय विस्फोट होने से युवक के हाथों के पंजे बुरी तरह से जल गए हैं और 80 फीसदी झुलस गया है. घटना थाना सचेंडी से करीब दो किलोमीटर दूर कब्रिस्तान में घटी, जिसमें बिरारा गांव का रहने वाला 50 वर्षीय शकील गंभीर रूप से झुलस गया. उनके हाथों के पंजे भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए. घटना के बाद शकील को कानपुर के कल्याणपुर के प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन बहुत ज्यादा जल जाने के चलते उसकी स्थिति गंभीर हो गई, जिसके बाद उसे सरकारी अस्पताल हौसला में इलाज के लिए भर्ती कराया है.

देसी बम बनाने की सामग्री मिली

पुलिस घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची और जांच की. इसके बाद बताया कि घटनास्थल पर चार अन्य लोगों के मौजूद होने की बात सामने आ रही है. इसके साथ ही देसी बम बनाने की सामग्री, सुतली बम के टुकड़े, जला हुआ प्लास्टिक, मौरंग, गिट्टी और बारूद का मिश्रण मौके से पाया गया है. पुलिस ने जांच शुरू कर दी है. धमाके की आवाज आसपास के क्षेत्र में भी गूंजी, जिसके बाद ग्रामीणों ने बताया कि धमाका इतना तेज था की घटनास्थल से 1 किलोमीटर दूर तक लोग दहशत में आ गए थे.

बरेली हिंसा में पुलिस को मिली बड़ा सफलता, पेट्रोल बम फेंकने वाला आरिफ अरेस्ट, उगले कई राज

बरेली हिंसा पर पुलिस को एक और बड़ी कामयाबी मिली है. पुलिस ने आई लव मोहम्मद के पोस्टर लगाने को लेकर हुए विवाद के दौरान पुलिस पर पेट्रोल बम फेंकने वाले आरिफ को अरेस्ट किया है.

एजेंसी

बरेली। यूपी के बरेली में 26 सितंबर को बरेली के श्यामगंज इलाके में हुए उपद्रव के मामले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है. पुलिस पर पेट्रोल बम फेंकने वाले आरोपी आरिफ को गिरफ्तार कर लिया गया है. यह वही घटना है, जो आईएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां के बुलावे के बाद हुई थी.

बरेली में आई लव मोहम्मद के पोस्टर लगाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया था. इस विवाद को भड़काकर शहर में बवाल कराने की साजिश रची गई थी. पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार, 26 सितंबर को श्यामगंज इलाके में उपद्रवियों ने जमकर पथराव, फायरिंग और तोड़फोड़ की थी. दुकानों के शीशे तोड़े गए और पुलिस पर पेट्रोल से भरी बोतलें फेंकी गईं. इस घटना के बाद शहर के अलग-अलग थानों में कुल दस मुकदमे दर्ज किए गए थे. कई वीडियो और फोटो के आधार पर उपद्रवियों की पहचान की गई थी. इन्हीं में एक नाम आरिफ पुत्र मुन्ने निवासी हजियापुर का भी सामने आया था.

पार्षद अनीस सकलैनी के इशारे पर हुआ हमला

बारादरी थाना प्रभारी धनंजय पांडेय के मुताबिक, आरोपी आरिफ को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया. पूछताछ में आरिफ ने अपना जुर्म कबूल कर लिया. उसने बताया कि वह आईएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर रजा खां के करीबी पार्षद अनीस सकलैनी का सहयोगी है. आरिफ के मुताबिक, 26 सितंबर को अनीस सकलैनी के कहने पर वह अपने मोहल्ले के कुछ लड़कों के साथ श्यामगंज पहुंचा था. वहां उन्होंने

नारेबाजी की और इस्लामिया ग्राउंड की तरफ जाने की कोशिश की. पुलिस ने जब उन्हें रोका, तो उन्होंने बैरिकेड तोड़ दिए और पुलिस से बदसलूकी की.

इंस्पेक्टर पांडेय ने बताया कि जांच में यह साफ हुआ है कि आरिफ ने खुद पेट्रोल भरी बोतलें पुलिस टीम पर फेंकीं, जिससे हालात और बिगड़ गए. पुलिस ने मौके से कई सबूत भी जुटाए थे, जिनसे आरिफ की पहचान पक्की हुई.

जेल भेजा गया आरोपी, कई और की तलाश

पुलिस ने आरोपी आरिफ को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया. अधिकारियों ने बताया कि बरेली के 26 सितंबर बवाल में अब तक कई मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है. पुलिस के मुताबिक, इस मामले में अब तक 105 से ज्यादा आरोपी, जिनमें मौलाना तौकीर रजा भी शामिल हैं, जेल भेजे जा चुके हैं. इनमें कई नेता, कार्यकर्ता और उपद्रव में शामिल स्थानीय युवक शामिल हैं.

जांच एजेंसियों का मानना है कि यह पूरा बवाल पहले से रची गई साजिश का हिस्सा था, ताकि शहर का माहौल खराब किया जा सके. सोशल मीडिया के जरिए भी अफवाहें फैलाने की कोशिश की गई थी.

पुलिस की सख्त कार्रवाई जारी

बरेली पुलिस अब उन लोगों की तलाश में है जिन्होंने उपद्रव के दौरान भीड़ को भड़काया या हथियार लेकर सड़कों पर उतरे थे. सीसीटीवी फुटेज और मोबाइल वीडियो के आधार पर उनकी पहचान की जा रही है. बारादरी थानाध्यक्ष ने कहा कि कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा. उन्होंने बताया कि शहर में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस की गश्त बढ़ा दी गई है.

हॉस्टल के अंदर पेट्रोल बम फोड़े, फिर नाचने लगेज मेरठ की चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी से Video वायरल

एजेंसी

मेरठ। खबर उत्तर प्रदेश के मेरठ से है. यहां चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी के हॉस्टल से कुछ वीडियो वायरल हुए, जिसने सनसनी मच गई. वीडियो में कुछ छात्र हॉस्टल में पेट्रोल बम बनाकर फोड़ते नजर आए. छात्रों की पहचान भी सीसीटीवी और छात्रों की ओर से इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित वीडियो से की जा रही है. बताया जा रहा है कि पहचान कर छात्रों पर कार्रवाई की जाएगी. विश्वविद्यालय प्रशासन ने भी छात्रावास में रह रहे छात्रों को नोटिस जारी किया है. दरअसल, मामला मेरठ के चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के पंडित दीनदयाल उपाध्याय छात्रावास का है. यहां पर पेट्रोल बम बनकर फोड़े गए, जिनके वीडियो भी सोशल मीडिया पर अपलोड किए गए. वीडियो में दिखा कि सीसीएसयू के छात्रावास के छात्रों ने पालीथिन में पेट्रोल भरा और आग लगाकर धमाके किए. इसके बाद छात्र उसके आसपास नाचते झूमते भी नजर आए. वहीं, वीडियो सामने आने के बाद अब यूनिवर्सिटी प्रशासन छात्रों के खिलाफ कार्रवाई की बात कह रहा है. विश्वविद्यालय प्रशासन ने छात्रावास के छात्रों के खिलाफ नोटिस जारी किया है. आरोपी सभी छात्रों की पहचान सीसीटीवी और वीडियो से की जा रही है. पहचान कर कार्रवाई की जाएगी.

नोटिस किया गया जारी

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की ओर से नोटिस जारी किया गया है जिसमें लिखा है- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के छात्रावास में समस्त छात्रों को सूचित किया जाता है कि दिनांक 10/10/2025 की रात्रि में कुछ छात्रों द्वारा छात्रावास की संपत्ति को क्षति पहुंचाई गई. हंगामा कर छात्रावास का वातावरण बिगड़ने का प्रयास किया गया. छात्रों का यह कृत्य अत्यंत गंभीर और अनुशासनहीनता की श्रेणी में आता है. छात्रावास/विश्वविद्यालय परिसर में किसी भी संपत्ति को नुकसान पहुंचाना एवं वातावरण बिगड़ने का प्रयास करना न केवल नियमों के उल्लंघन है बल्कि यह एक दंडनीय अपराध है. इसलिए चेतावनी दी जाती है कि ऐसे कार्य में संलिप्त पाए जाने सभी छात्रों की पहचान की जा रही है.

नोटिस में आगे लिखा- दोषी पाए जाने पर छात्रों के छात्रावास नियमावली के अनुसार, छात्रों पर कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी. जिसमें उनके माता-पिता को अवगत कराना, सिक्योरिटी जब्त करना, छात्रावास निष्कासन, छात्रावास निलंबन एवं प्रवेश निलंबन की संतुष्टि तक की संभावनाएं रहती हैं. सभी छात्र अपनी जिम्मेदारियों का परिचय दें एवं छात्रावास परिसर की शांति अनुशासन तथा संपत्ति की सुरक्षा बनाए रखने में अपना योगदान दें.

150 मीटर दूर था थाना, फिर भी दिल्ली के जैन मंदिर से चोरी हो गया 40 लाख का कलश, 17 साल पहले किया गया था स्थापित

उत्तरी-पूर्वी दिल्ली के ज्योति नगर क्षेत्र में करवा चौथ की रात जैन मंदिर के शिखर से करीब 40 लाख रुपए की कीमत का कलश चोरी हो गया. पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है. चोरी की घटना को लेकर जैन समाज में भारी आक्रोश है.

एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तरी-पूर्वी दिल्ली के ज्योति नगर थाना क्षेत्र से एक हैरान करने वाली घटना सामने आई है. यहां करवा चौथ की रात जैन मंदिर के शिखर पर लगा लाखों रुपए का कलश चोरी हो गया. इस बाद की जानकारी होते ही पूरे इलाके में हड़कंप मच गया.

इस घटना को लेकर जैन समाज के लोगों में भारी आक्रोश है. उन्होंने तुरंत घटना की जानकारी पुलिस को दी. पुलिस ने मामले में स्नद्धक्रदर्ज कर मंदिर के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की तलाश शुरू तेज कर दी है.

ज्योति नगर थाना क्षेत्र में स्थित जैन मंदिर के शिखर से कलश चोरी होने की घटना शुक्रवार रात करीब 10:30 बजे की बताई जा रही है. मंदिर से थाने की दूरी महज 150 से 200 मीटर है. इसके बावजूद चोरों में पुलिस और कानून को लेकर कोई डर नहीं हैं. कलश चोरी होने की सूचना मिलते ही मंदिर के बाहर स्थानीय लोगों की भारी भीड़ जुटी गई. इसके बाद तुरंत घटना

की जानकारी पुलिस को दी गई.

जैन मंदिर के शिखर से 40 लाख का कलश चोरी

मौके पर पहुंची पुलिस ने शिकायत दर्ज कर चोरों की तलाश शुरू कर दी है. पुलिस मंदिर के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की पहचान कर उनकी खोजबीन में लग गई है. चोरी हुई कलश की कीमत करीब 40 लाख रुपए बताई जा रही है. कलश का वजन 30 किलो है, जिस पर सोने की परत चढ़ाई गई थी. मंदिर समिति के पदाधिकारी ने बताया कि ये मंदिर लगभग 25 साल पुराना है. जिसके शिखर पर 17 सालों से कलश स्थापित था.

जैन समाज में भारी आक्रोश

स्थानीय लोगों ने मिलकर मंदिर को सजाया था. कलश को धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का प्रतीक माना जाता है. इस घटना से जैन समाज के लोगों में भारी आक्रोश है.

उन्होंने पुलिस पर जांच सही ढंग से नहीं करने के आरोप लगाए हैं. चोरी की बढ़ती घटनाओं ने इलाके में कानून व्यवस्था की पोल खोलकर रख दी है. लोगों का कहना है कि यहां चोरी की घटनाएं बेहद आम हो गई हैं. चोर, चोरी करके फरार हो जाते हैं, पुलिस उन्हें ढूंढ ही नहीं पाती है.

दुमका में तेज रफ्तार ने ली तीन युवकों की जान, आपस में टकराईं दो मोटरसाइल, उड़े परखच्चे

एजेंसी

झारखंड। झारखंड के दुमका जिले से एक भीषण हादसे की खबर सामने आई है, जिसमें तीन युवकों की दर्दनाक मौत हो गई. हादसे के बाद इलाके में हाहाकार मच गया. हादसे इतना भीषण था कि दो बाइकों के परखच्चे उड़ गए. सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है. साथ ही मामले की जांच शुरू कर दी है.

दुमका जिला के हंसडीहा थाना के महादेव गढ़ गांव के पास शनिवार देर रात भीषण हादसा हो गया. इस हादसे में तीन युवकों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया. घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची हंसडीहा थाने की पुलिस ने तीनों युवकों को अस्पताल पहुंचाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. मृतकों की पहचान दुमका जिला के हंसडीहा थाना क्षेत्र के रहने वाले शिव शंकर महतो और विभीषण महतो के तौर पर

हुई हैं.

सड़क हादसे में तीन युवकों की मौत

वहीं, तीसरे मृतक की पहचान दुमका जिला के नगर थाना क्षेत्र के रहने वाले मंनजय दास के रूप में की गई है. जानकारी के मुताबिक, बिहार के बांका जिला में कंप्यूटर ऑपरेटर के पद पर कार्यरत मंनजय कुमार दास अपनी ड्यूटी समाप्त कर देर रात घर लौट रहे थे, तभी महादेवगढ़ गांव के पास सामने से तेज रफ्तार में एक बाइक पर सवार होकर आ रहे शिव शंकर महतो और विभीषण महतो की बाइक मंनजय की बाइक से टकरा गई.

बाइकों के उड़े परखच्चे

जोरदार टक्कर होने से दोनों बाइकों के परखच्चे उड़ गए. साथ ही बाइक पर सवार लोग टक्कर के बाद उड़कर दूर जा गिरे. हादसा इतना भीषण था कि तीनों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई. घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया.

फॉलोऑन खेलते हुए वेस्टइंडीज ने दूसरी पारी में दो विकेट पर 173 रन बनाये

–कैम्पबेल और होप ने अर्धशतक लगाकर पारी संभाली

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम ने मेहमान टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट में भी अपना शिकंजा कस दिया है। दूसरे टेस्ट मैच में वेस्टइंडीज की टीम ने फॉलोआन खेलते हुए अपनी दूसरी पारी में 173 रनों के अंदर ही दो विकेट गंवा दिये। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय जॉन कैम्पबेल 87 रन पर जबकि शे होप 66 रन बनाकर खेल रहे थे। इस मैच में मेहमान टीम अब भी 97 रन से पीछे है। भारतीय टीम ने पहली पारी पांच विकेट पर 518 रन पर घोषित की थी। वहीं वेस्टइंडीज टीम अपनी पहली पारी में सिर्फ 248 रनों पर ही सिमट गयी थी। इससे भारतीय टीम को पहली पारी के आधार पर 270 रन की बढ़त मिल गयी थी।

दूसरी पारी में वेस्टइंडीज टीम शुरुआती झटकों के बाद संभली। शाई होप और जॉन कैंपबेल ने भारतीय गेंदबाजों का अच्छी तरह से सामना किया।

वहीं इससे पहले स्पिनर कुलदीप यादव के पांच विकेट से भारतीय टीम ने वेस्टइंडीज की पहली पारी को 248 के स्कोर पर समेट दिया। कुलदीप यादव के अलावा रवींद्र जडेजा को 3 और बुमराह-सिराज को 1-1 विकेट मिला। वेस्टइंडीज ने टी ब्रेक तक 2 विकेट खो दिए। वेस्टइंडीज ने तीसरे सत्र में अच्छा खेल दिखाया। कैम्पबेल ने अर्धशतक लगाया। यह इस सीरीज में किसी भी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज का पहला अर्धशतक था। वहीं इससे पहले भारत ने पहली पारी में यशस्वी जायसवाल 175 और शुभमन गिल के नाबाद शतक 129 रनों की सहायता से अपनी पहली पारी में 518 रन बनाए थे।

स्मृति मंधाना ने रचा इतिहास, बेलिंडा क्लार्क का 26 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा

मेलबर्न (एजेंसी)। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उप-कप्तान स्मृति मंधाना ने रविवार को महिला क्रिकेट इतिहास में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ महिला विश्व कप मैच के दौरान एक कैलेंडर वर्ष में 1000 वनडे रन पूरे करने वाली पहली महिला खिलाड़ी बनकर नया रिकॉर्ड बनाया।

छक्के से पूरा किया ऐतिहासिक मील का पत्थर

मंधाना को इस उपलब्धि तक पहुंचने के लिए 18 रनों की आवश्यकता थी, जिसे उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज सोफी मोलिनक्स की गेंद पर शानदार छक्का लगाकर हासिल किया। उनका यह उपलब्धि हासिल करना न सिर्फ भारतीय क्रिकेट के लिए गर्व का क्षण था, बल्कि महिला क्रिकेट के इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

एक कैलेंडर वर्ष में सर्वाधिक रन

स्मृति मंधाना ने इससे पहले दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पिछले मैच में 1997 में बेलिंडा क्लार्क के बनाए 970 रनों का रिकॉर्ड तोड़ा था। मंधाना ने पारी के आठवें ओवर में अयाबोंगा खाका की गेंद पर छक्का जड़कर क्लार्क का रिकॉर्ड ध्वस्त किया। अब वह 1000 रन के आंकड़े को पार कर चुकी हैं।

लगातार तीसरा वनडे विश्व कप

29 वर्षीय स्मृति मंधाना अपना तीसरा वनडे विश्व कप खेल रही हैं। वह 2017 विश्व कप में उपविजेता रही भारतीय टीम का भी हिस्सा थीं। अब मंधाना वनडे में 5000 रन पूरे करने के करीब हैं। यह मुकाम हासिल करने पर वह यह उपलब्धि प्राप्त करने वाली दूसरी भारतीय और कुल पाँचवीं महिला बल्लेबाज़ बन जाएंगी।

विश्व कप में मिला-जुला प्रदर्शन

हालाँकि रिकॉर्ड्स के बावजूद, मंधाना का मौजूदा विश्व कप में प्रदर्शन थोड़ा अस्थिर रहा है। उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ 8, पाकिस्तान के खिलाफ 23, और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 23 रन बनाए। भारत ने शुरुआती दो मैच जीते, लेकिन दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शीर्ष क्रम के फ्लॉप होने से टीम को 3 विकेट से हार झेलनी पड़ी।

अरशद नदीम के कोच सलमान इकबाल पर लगा आजीवन प्रतिबंध

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान के शीर्ष भाला फेंक खिलाड़ी अरशद नदीम के लंबे समय से कोच रहे सलमान इकबाल पर पाकिस्तान एमेच्योर एथलेटिक्स महासंघ (PAAF) ने रविवार को आजीवन प्रतिबंध लगा दिया है। उन पर पंजाब एथलेटिक्स संघ के संविधान का उल्लंघन करने का आरोप है। प्रतिबंध के तहत, सलमान इकबाल अब किसी भी एथलेटिक्स गतिविधि, कोचिंग या संगठनात्मक भूमिका में भाग नहीं ले सकेंगे।

पंजाब एथलेटिक्स संघ के चुनाव विवाद से जुड़ा मामला

महासंघ ने आरोप लगाया कि इकबाल ने अगस्त में पंजाब एथलेटिक्स संघ के चुनाव कराकर नियमों का उल्लंघन किया। सितंबर के मध्य में गठित एक जांच समिति ने रिपोर्ट सौंपी और 10 अक्टूबर को इकबाल पर आजीवन प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की थी।

अरशद नदीम के प्रदर्शन पर उठे सवालों के बाद बढ़ा विवाद

यह फैसला उस विवाद के तुरंत बाद आया जब पाकिस्तान खेल बोर्ड (क्क्क) ने इकबाल से टोक्यो विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में अरशद नदीम के खराब

प्रदर्शन पर स्पष्टीकरण मांगा था। क्क्क ने यह भी पूछा था कि एथलीट के प्रशिक्षण और यात्रा पर खर्च कैसे किया गया। इकबाल ने अपने जवाब में खुलासा किया कि पिछले एक वर्ष से PAAF ने अरशद नदीम से जुड़े किसी भी मामले में भाग नहीं लिया, और उन्हें दक्षिण अफ्रीका में प्रशिक्षण और पिंडली की चोट से उबरने के लिए निजी आर्थिक मदद का सहारा लेना पड़ा।

कोच और संघ के बीच गहराता टकराव

सलमान इकबाल कई वर्षों से अरशद नदीम के मुख्य कोच और मेंटर रहे हैं और उन्होंने पाकिस्तान के लिए कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में एथलीट को तैयार किया। हालांकि अब इस निर्णय के बाद पाकिस्तान के सबसे सफल एथलीटों में से एक नदीम का कोचिंग भविष्य असमंजस में पड़ गया है।

ऑल फॉर्मेट के बादशाह : धोनी, कोहली, रोहित और बुमराह का धमाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम में कुछ खिलाड़ी ऐसे हैं जिन्होंने चाहे टेस्ट हो, वनडे हो या टी20 तीनों फॉर्मेट में अपनी छाप छोड़ी है और सभी फॉर्मेट में कम से कम 50 मैच खेलने का गौरव हासिल किया है। एमएस धोनी, विराट कोहली और रोहित शर्मा ऐसे नाम हैं जो इस सूची में सबसे ऊपर रहते हैं, और अब जसप्रीत बुमराह भी इस खास क्लब में शामिल हो गए हैं। बुमराह वेस्टइंडीज के खिलाफ अपने 50वें टेस्ट मैच में खेल रहे हैं, जिससे वह सभी फॉर्मेट में कम से कम 50 मैच खेलने वाले सातवें भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। जसप्रीत बुमराह वनडे में 89 और टी20 में 75 मैच खेल चुके हैं। वे अपना 50वां टेस्ट दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेल रहे है। इससे पहले, एमएस धोनी इस लिस्ट में पहले शामिल हुए थे। धोनी ने अपने इंटरनेशनल करियर में 90 टेस्ट,

350 वनडे और 98 टी20 मैच खेले थे। उन्होंने 15 अगस्त 2020 को इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास ले लिया था, लेकिन उनके योगदान को भारतीय क्रिकेट में हमेशा याद किया जाएगा।

विराट कोहली और रोहित शर्मा भी इस सूची में दिग्गजों के रूप में शामिल हैं। विराट कोहली ने 123 टेस्ट, 302 वनडे और 125 टी20 मैच खेले हैं, जबकि रोहित शर्मा ने 67 टेस्ट, 273 वनडे और 159 टी20 मैचों में देश का प्रतिनिधित्व किया। दोनों खिलाड़ियों ने टेस्ट और टी20 क्रिकेट से रिटायरमेंट ले लिया है, लेकिन वनडे फॉर्मेट में वे अब भी सक्रिय हैं। रवींद्र जडेजा और आर अश्विन की जोड़ी भी सभी फॉर्मेट में कम से कम 50 मैच खेलने वाले भारतीय खिलाड़ियों में शामिल है। अश्विन ने इंटरनेशनल क्रिकेट से रिटायरमेंट ले लिया है और उन्होंने 106 टेस्ट, 116 वनडे और 65 टी20 मैच खेले। वहीं जडेजा अब भी वनडे और टेस्ट में सक्रिय हैं और उन्होंने 86 टेस्ट, 204 वनडे और 74 टी20 मैच खेलकर टीम इंडिया को सेवा दी है।

केएल राहुल इस क्लब में छठे भारतीय खिलाड़ी हैं। उन्होंने अब तक 64 टेस्ट, 85 वनडे और 72 टी20 मैच खेले हैं और लगातार भारत के लिए योगदान दे रहे हैं। इस सूची से स्पष्ट है कि एमएस धोनी, विराट कोहली, रोहित शर्मा, जसप्रीत बुमराह, रवींद्र जडेजा, आर अश्विन और केएल राहुल जैसे खिलाड़ी भारतीय क्रिकेट के हर फॉर्मेट में अपनी शानदार छवि बनाए हुए हैं। इनके अनुभव और प्रदर्शन ने टीम इंडिया को विश्व क्रिकेट में एक अलग पहचान दिलाई है और ये खिलाड़ी आने वाले वर्षों में भी युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बने रहेंगे।

वाशेरोट ने अपने चचेरे भाई रिंडरनेच को हराकर शंघाई मास्टर्स खिताब जीता

शांघाई । वैलेंटिन वाशेरोट ने क्वालीफाइंग दौर से मुख्य दौर में जगह बनाने के बाद रविवार को अपने चचेरे भाई आर्थर रिंडरनेच को 4–6, 6–3, 6–3 से हराकर शंघाई मास्टर्स का खिताब अपने नाम किया। विश्व रैंकिंग में 204वें स्थान पर काबिज 26 साल के वाशेरोट एटीपी मास्टर्स 1000 के इतिहास में सबसे कम रैंकिंग वाले विजेता है। वह एटीपी मास्टर्स 1000 स्तर का खिताब जीतने वाले मोनाको के पहले खिलाड़ी भी है। वाशेरोट ने सेमीफाइनल में 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन दिग्गज नोवाक जोकोविच को हराया था जबकि रिंडरनेच ने चार ग्रैंडस्लैम का फाइनल खेलने वाले दानिल मेदवेदेव को शिकस्त दी थी।

न्यूजीलैंड से मिली हार को नहीं भूलना चाहते हैं गंभीर

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर अपने आक्रामक अंदाज के लिए जाने जाते हैं। गंभीर के कोच बनने के बाद से ही टीम को शुरुआत में न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ करारी हार मिली थीं। जिसके बाद वह आलोचना का शिकार हुए थे। इसके बाद गंभीर टीम को चैंपियंस ट्रॉफी और एशिया कप जिताने में सफल हुए हैं पर वह न्यूजीलैंड के खिलाफ अपनी ही धरती पर मिली हुई हार को नहीं भूल पा रहे। तब भारतीय टीम को टेस्ट सीरीज में अपनी ही धरती पर 0–3 से हार का सामना करना पड़ा था। ये पहला अवसर था जब न्यूजीलैंड की टीम भारत की धरती पर टेस्ट सीरीज जीती थी। इस हार के कारण ही भारतीय टीम विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्लयूटीसी) फाइनल की दौड़ से भी बाहर हो गयी थी। आकाश चोपड़ा से बातचीत के दौरान गंभीर ने कहा है कि कोचिंग करियर में मिले इस झटक से वह कभी नहीं उबर पायेंगे। साथ ही कहा कि वह इस प्रकार की हार को भूलना भी नहीं चाहते। यही बात उन्होंने टीम से भी कही है। गंभीर ने कहा कि कभी–कभी अतीत को याद रखना भी जरूरी होता है। अगर ऐसा नहीं होता है तो आप चीजों को हल्के में लेने लगते हैं. आपको कभी भी किसी चीज को हल्के में नहीं लगते हैं। सभी सोचते थे कि हम न्यूजीलैंड को आसान से हरा सकते हैं।'

रोहित शर्मा के ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर रहेंगी सबकी निगाहें

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट के हिटमैन रोहित शर्मा पर एक बार फिर पूरी क्रिकेट दुनिया की नजरें टिकी हुई हैं। टीम इंडिया की कप्तानी छिनने के बावजूद उन्होंने अपने खेल और फिटनेस पर पूरा ध्यान केंद्रित किया है। सूत्रों के मुताबिक, रोहित ने पिछले कुछ महीनों में करीब 15 किलो वजन घटाया है और अब पहले से कहीं अधिक फिट और फुर्तीले नजर आ रहे हैं। उनकी यह नई ऊर्जा और समर्पण बताती है कि वह अब भी मैदान पर कुछ साबित करने के इरादे से उतरने वाले हैं। आगामी ऑस्ट्रेलिया दौरा रोहित शर्मा के अंतरराष्ट्रीय करियर के लिए बेहद अहम माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह श्रृंखला उनके लिए 'करो या मरो' जैसी साबित हो सकती है। यदि रोहित वहां शानदार प्रदर्शन करते हैं, तो चयनकर्ताओं के लिए उन्हें नजरअंदाज करना मुश्किल होगा। वहीं, कुछ रिपोर्ट्स में यह भी दावा किया गया है कि इस दौरे के बाद रोहित अपने अंतरराष्ट्रीय करियर से संन्यास ले सकते हैं।

हालांकि, उनके अनुभव, बल्लेबाजी की समझ और नेतृत्व क्षमता को देखते हुए क्रिकेट विशेषज्ञ अब भी मानते हैं कि रोहित के पास टीम इंडिया को देने के लिए बहुत कुछ बाकी है। टी20 प्रारूप में भी रोहित शर्मा को एक भरोसेमंद खिलाड़ी के रूप में देखा जाता है। उनका शांत स्वभाव, मैच सिचुएशन को समझने की क्षमता और टीम को संतुलित रखने की कला उन्हें बाकी खिलाड़ियों से अलग बनाती है। कप्तानी भले ही उनसे चली गई हो, लेकिन उनकी उपस्थिति टीम के लिए अब भी प्रेरणादायक मानी जाती है। फिटनेस पर ध्यान देकर उन्होंने यह संदेश दिया है कि उम्र या पद नहीं, बल्कि मेहनत और अनुशासन ही किसी खिलाड़ी को महान बनाते हैं। दिलचस्प बात यह है कि जिम्बाब्वे के स्टार ऑलराउंडर सिकंदर रजा द्वारा चुनी गई एक विशेष टीम में भी रोहित शर्मा को शामिल किया गया है। इस चयन ने यह दिखा दिया है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खिलाड़ी और विश्लेषक अब भी रोहित के अनुभव, नेतृत्व और मैच जिताने की क्षमता को ऊंचा दर्जा देते हैं। यही वजह है कि भारतीय फैंस के बीच भी यह चर्चा जोरों पर है कि क्या रोहित शर्मा ऑस्ट्रेलिया में अपने बल्ले से एक बार फिर इतिहास रचेंगे। रोहित का यह नया रूप फिट, केंद्रित और दृढ़ यह साबित करता है कि वह अब भी क्रिकेट के सबसे ऊर्जावान खिलाड़ियों में से एक हैं। ऑस्ट्रेलियाई पिचों पर उनका प्रदर्शन यह तय करेगा कि आने वाले वर्षों में भारतीय क्रिकेट में उनकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण बनी रहती है।

आईपीएल 2026 की नीलामी दिसंबर में, भारत में आयोजन की बढ़ी संभावना

–रिटेंशन की समय सीमा 15 नवंबर तय

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2026 की नीलामी दिसंबर के दूसरे या तीसरे सप्ताह में होने की संभावना जताई जा रही है। रिपोर्ट्स के अनुसार, 13 से 15 दिसंबर के बीच यह आयोजन हो सकता है। एक खबर के अनुसार फ्रेंचाइजी अधिकारियों ने बताया कि उन्होंने बीसीसीआई से बातचीत की है और चर्चा इन्हीं तारीखों पर केंद्रित है। हालांकि, अभी तक लीग की गवर्निंग काउंसिल ने अंतिम कार्यक्रम तय नहीं किया है। इस बार नीलामी भारत में ही आयोजित होने की संभावना अधिक है, जबकि पिछले दो वर्षों में यह विदेश में हुई थी। पहले दुबई में (2023) और फिर सऊदी अरब के जेद्दा में (2024)। फ्रेंचाइजियों का मानना है कि अगर इस बार मिनी नीलामी भारत में होती है, तो यह कोई चौंकाने वाली बात नहीं होगी।

हालांकि, इस संबंध में अंतिम फैसला अभी नहीं लिया गया है। रिटेंशन की समय सीमा 15 नवंबर तय की गई है, यानी तब तक सभी टीमों को यह बताना होगा कि वे किन खिलाड़ियों को बनाए रख रही हैं और किन्हें रिलीज करने की योजना है। पिछले सीजन में सबसे निचले पायदान पर रही चेन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स में कुछ बड़े बदलाव संभव हैं।

रिपोर्ट्स के अनुसार, रिलीज लिस्ट में दीपक हुड्डा, विजय शंकर, राहुल त्रिपाठी, सैम करन और सीएसके के डेवोन कॉनवे जैसे खिलाड़ियों के नाम शामिल हो सकते हैं। आर. अश्विन के आईपीएल से संन्यास लेने के बाद पांच बार की चैंपियन टीम चेन्नई सुपर किंग्स के पास पहले ही 9.75 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि जुड़ चुकी है। वहीं, राजस्थान रॉयल्स में संजू सैमसन की स्थिति पर भी नजर है, हालांकि उनके कप्तान पद को लेकर फिलहाल कोई निर्णय नहीं हुआ है।

सूत्रों के मुताबिक, रॉयल्स द्वारा श्रीलंकाई स्पिनरों वानिंदु हसरंगा और महेश तीक्षाना को रिलीज करने की योजना पर विचार चल रहा था, लेकिन मुख्य कोच कुमार संगकारा की वापसी के बाद इसमें बदलाव की संभावना है। इसके अलावा, टी नटराजन, मिशेल स्टार्क, आकाशदीप, मयंक यादव और डेविड मिलर जैसे खिलाड़ियों को भी नई टीमों की तलाश करनी पड़ सकती है। इस बीच, ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन नीलामी में सबसे चर्चित नामों में से एक माने जा रहे हैं। चोट के कारण पिछली नीलामी से बाहर रहे ग्रीन इस बार कई फ्रेंचाइजियों के रडार पर हैं। माना जा रहा है कि इस मिनी नीलामी में उन पर भारी बोली लग सकती है।

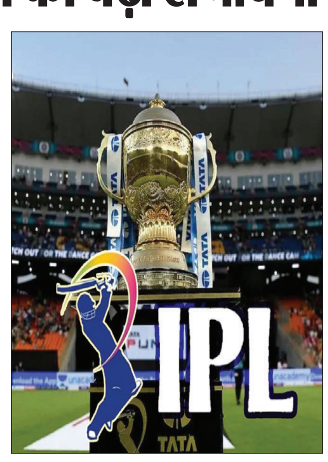

रोनाल्डो गोल करने से चूके लेकिन पुर्तगाल ने आयरलैंड को 1–0 से हराया

लंदन । दिग्गज फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो पेनल्टी किक पर गोल करने से चूक गए लेकिन आखिरी क्षणों में रुबेन नेवेस के गोल की बदौलत पुर्तगाल ने विश्व कप क्वालीफाइंग के यूरोपीय चरण में शनिवार को यहां आयरलैंड को 1–0 से हराकर ग्रुप एफ की तालिका में अपनी बढ़त मजबूत कर ली। रोनाल्डो मैच के 75वें मिनट में पेनल्टी पर चूक गए लेकिन नेवेस ने (90+1 मिनट) में गोल कर टीम को लगातार तीसरी जीत दिलाई। इस जीत के साथ ही टीम ने ग्रुप तालिका में नौ अंक के साथ दूसरे स्थान पर काबिज हंगरी पर पांच अंक की बढ़त कायम कर ली है। ग्रुप के दूसरे मैच में हंगरी ने डेनियल लुकाक्स और ज़ोम्बोर ग्रुबर के गोल की मदद से आर्मेनिया को 2–0 से हराया। स्पेन ने ग्रुप ई के मैच में जॉर्जिया को 2–0 से हराने के बाद तालिका में शीर्ष पर अपनी स्थिति मजबूत कर ली। बार्सिलोना के चोटिल प्रतिभाशाली खिलाड़ी लामिन यामल की गैरमौजूदगी में येरेमी पिनो और मिकेल ओयारजाबल के गोल से यूरोपीय चैंपियन स्पेन ने जीत दर्ज की। ग्रुप के अन्य मैच में तुर्की ने बुल्गारिया को 6–1 से हराया। नॉर्वे ने ग्रुप आई में एर्लिंग हालैंड की हैट्रिक से इस एकतरफा मैच को 5–0 से अपने नाम किया। हालैंड के नाम अब नॉर्वे के लिए 46 मैचों में 51 गोल हो गए है। टीम की यह छह मैचों में छठी जीत है और वह ग्रुप तालिका में इटली से छह अंक आगे 18 अंकों के साथ शीर्ष स्थान पर है। इटली ने एस्टोनिया को 3–1 से हराया।

जोहर कप 2025: भारत ने न्यूजीलैंड को 4-2 से हराकर जारी रखा अजेय अभियान

जोहर बहारू (मलेशिया) (एजेंसी)। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम ने सुल्तान जोहोर कप के दूसरे मैच में न्यूजीलैंड को 4-2 से हराकर लगातार दूसरी जीत दर्ज की। इससे पहले भारत ने टूर्नामेंट के पहले मैच में ब्रिटेन को 3-2 से मात दी थी।

भारत ने मैच की शुरुआत जबरदस्त दबाव के साथ की। पहले क्वार्टर के दूसरे मिनट में अर्शदीप सिंह ने तेज़ी से दाईं ओर दौड़ लगाकर गोल कर भारत को 1-0 की बढ़त दिलाई। क्वार्टर के अंत में कप्तान रोहित की पासिंग पर पीबी सुनील ने पेनल्टी कॉर्नर का शानदार वैरिएशन गोल में बदलकर स्कोर 2-0 किया।

दूसरे क्वार्टर में अरिजीत सिंह हुंडल ने सर्कल के अंदर तेजी से घूमकर तीसरा गोल दागा और भारत की बढ़त 3-0 हो गई। तीसरे क्वार्टर में न्यूजीलैंड ने गस नेल्सन के गोल से 3-1 किया और वापसी की कोशिश की।

चौथे क्वार्टर में आर कुमुर ने पेनल्टी कॉर्नर का उपयोग करते हुए 4-1 का स्कोर बनाया। मैच के अंतिम मिनट में ऐडन मैक्स ने न्यूजीलैंड के लिए दूसरा गोल दागा, लेकिन भारतीय रक्षापंक्ति ने मजबूत खेल दिखाकर मैच को काबू में रखा।

अर्शदीप सिंह की तेज़ और चुस्त शुरुआत भारत के लिए महत्वपूर्ण रही। पीबी सुनील और आर कुमुर की पेनल्टी कॉर्नर क्षमता ने स्कोरिंग में मदद की। अरिजीत सिंह हुंडल की सर्कल में तेज़ी और समन्वय ने मैच पर भारतीय टीम का दबदबा बनाए रखा।

न्यूजीलैंड की टीम ने अंतिम कुछ मिनटों में वापसी की कोशिश की, लेकिन भारतीय रक्षापंक्ति और गोलकीपर की शानदार परफ़ॉर्मेंस ने जीत सुनिश्चित की।

भारत ने लगातार दो मैच जीतकर अजेय अभियान जारी रखा है और अब उसकी नजरें मंगलवार को पाकिस्तान के खिलाफ होने वाले मुकाबले पर हैं। टीम का मनोबल उच्च और रणनीति स्पष्ट दिख रही है, जिससे इसे टूर्नामेंट में लंबा रास्ता तय करने की उम्मीद है।

जडेजा का लक्ष्य 2027 एकदिवसीय विश्वकप खेलना

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने कहा है कि वह अभी संन्यास नहीं ले रहे और उनका लक्ष्य 2027 एकदिवसीय विश्वकप खेलना है।

वेस्टइंडीज़ के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दूसरे मैच में 3 विकेट लेने वाले जडेजा ने कहा, 'मैं 2027 विश्व कप खेलने के लिए तैयार हूं।' वहीं उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज के लिए टीम में शामिल नहीं किया गया है। जिसके बाद से ही कहा जा रहा था कि अब वह इस प्रारुप के लिए चयन समिति के पसंदीदा नहीं रहे। वहीं ये भी कहा गय कि अब उन्हें केवल लंबे प्रारुप में ही जगह मिलेगी। वहीं जडेजा ने इन सभी संभावनाओं को सिरे से नकार दिया है। उन्होंने कहा, 'यह मेरे हाथ में नहीं है कि चयनकर्ता क्या सोचते हैं। उन्होंने मुझे ऑस्ट्रेलिया दौरे से बाहर रहने का कारण बताया था पर मेरा ध्यान इस प्रारुप पर बना हुआ है। । जब भी अवसर मिलेगा मैं अपनी ओर से अच्छा प्रदर्शन करुंगा।' जडेजा ने यह भी कहा कि एकदिवसीय विश्वकप जीतना उनका लक्ष्य है। इससे पहले साल 2023 में टीम फाइनल में पहुंचकर भी ये खिताब नहीं जीत पायी थी। इसलिए उन्हें लगता है कि अभी 'कुछ अधूरा काम बाकी है।' उन्होंने कहा, 'अगली बार जब मौका मिलेगा, मैं पूरी तैयारी के साथ उतरूंगा। पिछली बार हम थोड़ा पीछे रह गए थे, इस बार जो अधूरा रह गया, उसे पूरा करना चाहूंगा।'

कुलदीप यादव ने पांचवीं बार फाइफर किया अपने नाम, बने दुनिया के नंबर 1 गेंदबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में भारत और वेस्टइंडीज के बीच खेले जा रहे दूसरे टेस्ट के तीसरे दिन रविवार को टीम इंडिया ने मेहमान टीम को 248 रन पर आउट कर दिया। इस दौरान भारत के लिए बाएं हाथ के स्पिनर कुलदीप यादव सबसे सफल गेंदबाज रहे। कुलदीप ने पांचवीं बार टेस्ट मैच की एक पारी में 5 विकेट लिए। इसके साथ ही उन्होंने स्पिनर के तौर पर टेस्ट में सबसे ज्यादा बार 5 विकेट लेने के रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। उनके अलावा इंग्लैंड के जॉनी वार्डले ने 5 बार ऐसा किया है।

बता दें कि, कुलदीप यादव का रिकॉर्ड जॉनी वार्डले से काफी बेहतर है। उन्होंने इंग्लैंड के स्पिनर के मुकाबले आधे टेस्ट में ये कारनामा कर दिया। वार्डले ने 28 टेस्ट में 5 बार पंजा खोला। वहीं कुलदीप ने केवल 15 टेस्ट में ऐसा कर दिया। साउथ अफ्रीका के पॉल एडम्स तीसरे नंबर पर हैं। उन्होंने 45 टेस्ट में 4 बार पारी में 5 विकेट झटके।

वेस्टइंडीज के खिलाफ दिल्ली में कुलदीप ने 26.5 ओवर में 82 रन देकर 5 विकेट झटके। कुलदीप ने पहला विकेट दूसरे दिन शनिवार को लिया था। उन्होंने अलिक अथानाज को रविंद्र जडेजा के हाथों कैच कराया। उन्होंने 41 रन बनाए। कुलदीप ने तीसरे दिन पहले सत्र में साई होप 36 और टेविन इमलाच 21 को पवेलियन भेजा।

इसके बाद कुलदीप ने जस्टिन ग्रीव्स को पवेलियन भेजा। उन्होंने 17 रन बनाए। उन्होंने पांचवां विकेट जायडन सील्स के तौर पर लिया। उन्होंने 13 रन बनाए। कुलदीप यादव ने टेस्ट में 15 मैच की 27 पारियों में 21.09 के औसत और 3.52 की इकॉनमी से 65 विकेट लिए हैं। 40 रन देकर 5 विकेट उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

फेस्टिव सीज़न में क्या पहनना है?

राशि खन्ना हैं आपकी परफेक्ट स्टाइल गाइड!

त्योहारों का मौसम शुरू होते ही सबकी नज़रें पैन-इंडिया स्टार राशि खन्ना पर टिकी हैं, जिनका बेमिसाल एथनिक वॉर्डरोब स्टाइल इंस्पिरेशन से कम नहीं। हवादार कुर्ता सेट से लेकर शाही साड़ियों और खूबसूरत लहंगों तक, राशि हमें दिखाती हैं कि कैसे पारंपरिक फैशन को ग्रेस, ग्लैमर और मॉडर्न ट्विस्ट के साथ अपनाया जा सकता है। यहाँ हैं उनके कुछ सबसे खूबसूरत फेस्टिव लुक्स, जो आपके अपने फेस्टिव स्टाइल गेम को एक नया आयाम देंगे। गुलाबी रंग में सुंदर~ वाइब्रेंट कुर्ता चिक राशि ने इस लुक में सादगी और शान का परफेक्ट मेल पेश करती हैं – फ्यूशिया पिंक कुर्ता सेट, जिस पर नाजुक कढ़ाई की गई है। ट्रेडिशनल जुत्तियों और स्टेटमेंट इयररिंग्स के साथ यह लुक उतना ही सहज है जितना कि एलीगेंट। परिवारिक समारोहों, पूजा या छोटे फेस्टिव गेट-टुगेदर्स के लिए यह एकदम परफेक्ट चॉइस है। राशि का यह मस्टर्ड कुर्ता लुक सादगी और एलिगेंस का एक बेहतरीन उदाहरण है। सफेद धागों की कढ़ाई और पारंपरिक चूड़ियाँ इसमें एक नर्म आकर्षण जोड़ती हैं, जो दिन के उत्सवों या कैजुअल फेस्टिव इवेंट्स के लिए एक आदर्श विकल्प बनाता है।

➢ साड़ी ग्लैमरः आइवरी एलिगेंस

जो लोग सदाबहार पारंपरिक लुक को पसंद करते हैं, उनके लिए राशि की आइवरी सिल्क साड़ी और कंट्रास्टिंग पिंक ब्लाउज़ एकदम परफेक्ट हैं। गजरे से सजा जूड़ा, स्टेटमेंट ज्वेलरी और मिनिमल मेकअप पुराने ज़माने की खूबसूरती का एहसास देते हैं – फेस्टिव डिनर या सांस्कृतिक समारोहों के लिए यह एक क्लासिक चॉइस है।

➢ रीगल रेडियंसः ऑलिव-गोल्ड साड़ी स्टेटमेंट

राशि की तरह बोल्ड और सोफिस्टिकेटेड स्टेटमेंट दें इस डैज़लिंग ऑलिव-गोल्ड साड़ी में, जिसे उन्होंने डीप-कट एम्बेलिश्ड ब्लाउज़ के साथ पेयर किया है। यह लुक पारंपरिक कारीगरी और मॉडर्न स्टाइल का शानदार संगम है – भव्य पारिवारिक आयोजनों या फेस्टिव पार्टियों के लिए एकदम उपयुक्त है।

➢ फेस्टिव ड्रीमः ग्रीन और पिंक लहंगा लव

जब फेस्टिव मूड अपने चरम पर हो और आप कुछ नया ट्राय करने का मन हो, तो राशि का यह ग्रीन और पिंक लहंगा तोरानी डिज़ाइनर का सबसे ख़ास त्यौहारी आकर्षण है जो किसी शोस्टॉपर से कम नहीं। बारीक डिटेलिंग, रिच कलर्स और पारंपरिक ज्वेलरी के साथ यह लुक शादियों, रिसेप्शन या दीवाली पार्टीज़ के लिए परफेक्ट है।

सोनू सूद फिर जरूरतमंद परिवार की मदद के लिए आगे आए

अपनी अटूट करुणा और संवेदनशीलता की एक और दिल छू लेने वाली मिसाल पेश करते हुए अभिनेता और समाजसेवी सोनू सूद एक बार फिर एक ज़रूरतमंद परिवार की मदद के लिए आगे आए। एक सोशल मीडिया यूजर ने उन्हें एक मैसेज भेजा, जिसमें याद दिलाया गया कि सोनू सूद पंजाब की बाढ़ के समय इसी परिवार से मिले थे। संदेश में लिखा था –सोनू सूद भाई, आप इस परिवार से पंजाब बाढ़ के समय मिले थे। कृपा करके इन्हें मदद करें। करोड़ों लोगों की मदद की है आपने। ?? सूद फाउंडेशन अपने 'एक्शन मैन' वाली पहचान को साबित करते हुए सोनू सूद ने तुरंत इस अपील का जवाब दिया। बिना किसी देरी के उन्होंने भरोसा दिलाया कि मदद पहले से ही चल रही है, और जवाब दिया, इलाज शुरू करवा दिया है। सब दुआ करते रहें। उनकी प्रतिक्रिया की सरलता और तत्परता ने एक बार फिर संकटग्रस्त लोगों के प्रति उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण और सच्ची प्रतिबद्धता को उजागर किया। सोनू के लिए, परोपकार एक दिखावा नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। पिछले कुछ वर्षों में, सोनू सूद देश भर के अनगिनत लोगों के लिए आशा और मानवता के प्रतीक बन चुके हैं। चाहे चिकित्सा सहायता दिलवाना हो, आर्थिक मदद पहुँचानी हो या आपदाग्रस्त परिवारों को संभालना – उनकी संस्था सूद फाउंडेशन के माध्यम से किए गए निरंतर प्रयास आज भी लाखों लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। एक बार फिर, उनके काम ने यह साबित कर दिया कि असली हीरो वही होता है जो संवेदना और उद्देश्य के साथ आगे बढ़ता है।

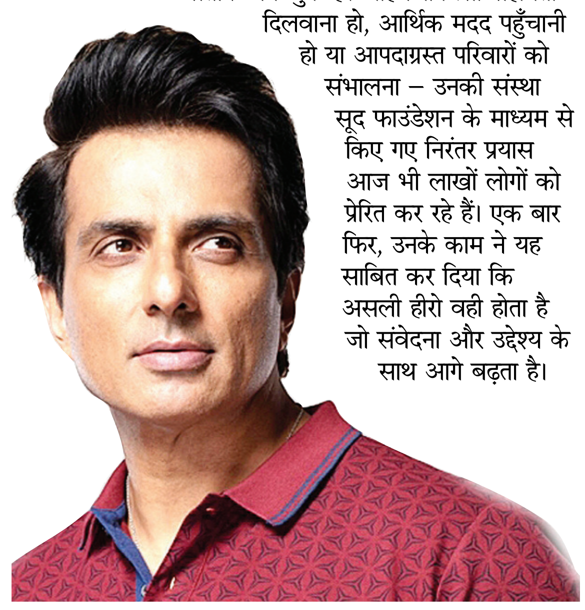

पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए

बॉम्बे हाईकोर्ट पहुंचे सुनील शेट्टी

पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा के लिए बॉलीवुड एक्टर सुनील शेट्टी ने बॉम्बे हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। एक्टर ने कोर्ट से मांग की है कि बिना अनुमति के उनके फोटो का इस्तेमाल जुए की साइट्स, बिजनेस साइट्स और कई गलत जगहों पर किया जा रहा है, ऐसे में उन्हें पर्सनैलिटी राइट्स की सुरक्षा दी जाए। सुनील शेट्टी के वकील, वरिष्ठ एडवोकेट बिरेन्द्र सराफ ने कहा कि सुनील शेट्टी फिल्म इंडस्ट्री का बड़ा नाम हैं और उनकी बिना इजाजत के उनकी तस्वीरें, वीडियो और डीपफेक कंटेंट का इस्तेमाल अलग-अलग बिजनेस साइट्स कर रही हैं। ज्यादा तस्वीरें और वीडियो का इस्तेमाल प्रोडक्ट के विज्ञापन और सेल को बढ़ाने में किया जा रहा है, जिससे ऐसा लगता है कि शेट्टी इन ब्रांड्स या सेवाओं से जुड़े हैं, जबकि हकीकत में उनका उन ब्रांड से कोई लेना-देना नहीं है। इससे दर्शकों के बीच एक्टर की छवि को लेकर गलत मैसेज जाता है। सुनील शेट्टी की तरफ से दायर की गई याचिका में डीपफेक फोटो का भी जिक्र है।

चंदू चैंपियन के लिए कार्तिक आर्यन को मिला सम्मान

- गौतम अडानी ने सम्मानित किया, सुभाष घई बोले- एक्टर का अब तक का सर्वश्रेष्ठ काम

मुंबई के व्हिसलिंग वुड्स इंटरनेशनल में शुक्रवार को आयोजित Celebrate Cinema 2025 के समापन समारोह में इंडस्ट्री के कई दिग्गज एक मंच पर नजर आए। इस मौके पर अडानी ग्रुप चेयरमैन गौतम अडानी ने अभिनेता कार्तिक आर्यन को फिल्म चंदू चैंपियन के लिए सम्मानित किया। मंच पर डॉ. प्रीति अडानी, सुभाष घई, राजकुमार हिरानी, जैकी श्रॉफ और महावीर जैन भी मौजूद रहे। इस मौके पर सुभाष घई ने बताया कि कार्तिक का फिल्म चंदू चैंपियन में अब तक का सर्वश्रेष्ठ काम है।

समापन समारोह के दौरान अडानी ने सॉफ्ट पावर ऑफ सिनेमा पर बात करते हुए कहा कि सिनेमा सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि देश की पहचान और भावना का प्रतीक है। उन्होंने कहा - अब वक्त है कि भारत की कहानी भारतीय नजरिए से दुनिया तक पहुंचे।ढ्ढ तकनीक पर बात करते हुए अडानी ने कहा कि ढ्ढ से डरने के बजाय उसे अपनाना चाहिए, क्योंकि यही फिल्ममेकिंग का भविष्य है।

गौतम अडानी से सम्मानित होने के बाद कार्तिक आर्यन ने कहा, सर, आपकी स्पीच मेरी जिंदगी की सबसे प्रेरणादायक स्पीच में से एक थी। मैं ढ्ढ से डरता था, लेकिन आपने मेरी सोच बदल दी।'' उन्होंने व्हिसलिंग वुड्स को देश का श्रेष्ठ फिल्म स्कूल बताया और सुभाष घई को अपने करियर का अहम मार्गदर्शक कहा। सुभाष घई ने भावुक होकर कहा- बहुत कम लोग जानते हैं कि कार्तिक मेरी फिल्म कांची के हीरो थे और छह महीने तक मेरे असिस्टेंट डायरेक्टर भी रहे। चंदू चैंपियन उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ काम है। राजकुमार हिरानी ने अडानी के भाषण को शोले की स्पीच जैसा ऐतिहासिक बताया और कहा कि सिनेमा की सॉफ्ट पावर उसकी सच्चाई में है।

इंटरनेशनल म्यूज़िक फेस्टिवल अनटोल्ड

दुबई 2025 में ग्लोबल स्टार नोरा फतेही मुख्य होंगी आकर्षण

ग्लोबल स्टार नोरा फतेही एक बार फिर इतिहास रचने के लिए तैयार हैं क्योंकि वह दुनिया के सबसे बड़े और बहुप्रतीक्षित म्यूज़िक फेस्टिवल्स में से एक UNTOLD दुबई 2025 के स्टार-स्टडेड लाइनअप में शामिल होंगी। यह फेस्टिवल 6 से 9 नवम्बर तक एक्सपो सिटी दुबई में आयोजित होगा, जहां नोरा, जे बाल्विन, मार्टिन गैरिक्स और एलन वॉकर सहित विश्व के कुछ सबसे बड़े संगीत हस्तियों के साथ मंच साझा करेंगी। यह फेस्टिवल, जो अपनी भव्य प्रस्तुति, विविध कलाकारों की मौजूदगी और अद्भुत अनुभव के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है, इस वर्ष अपने शानदार अंदाज़ में वापसी कर रहा है, और नोरा का मुख्य परफॉर्मेंस इस फेस्टिवल की सबसे बड़ी आकर्षणों में से एक होने वाली है। दर्शक उम्मीद कर सकते हैं एक हाई-एनर्जी प्रस्तुति की, जिसमें नोरा की सिग्नेचर डांस एनर्जी, पॉप स्टाइल और इंटरनेशनल साउंड का अनोखा संगम देखने को मिलेगा – जो एक ग्लोबल परफ़ॉर्मर के रूप में नोरा के विकास को दर्शाता है। ओह मामा! टेटेमा और स्नेक जैसे चार्ट-टॉपिंग हिट्स से लेकर जेसन डेरुलो और रेवनी के साथ ग्लोबल कोलैबोरेशन तक, और अब जल्द ही रिलीज होने वाली सॉन्ग शेनसीया के साथ उनके बहुप्रतीक्षित आगामी अंतर्राष्ट्रीय पॉप सिंगल जस्ट अ गर्ल तक, नोरा फतेही संगीत और प्रदर्शन के माध्यम से संस्कृतियों को जोड़ती रही हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर वायरल हो चुका है, जो उनके बढ़ते वैश्विक प्रभाव और सफलता में एक और उपलब्धि जोड़ता है, क्योंकि वह हर रिलीज़ के साथ ग्लोबल चार्ट और चर्चाओं पर हावी रहती हैं।

60 करोड़ की धोखाधड़ी मामले में शिल्पा शेट्टी की सफाई

मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा के खिलाफ दर्ज 60 करोड़ रुपए की कथित धोखाधड़ी के मामले में जांच तेज कर दी है। इसी कड़ी में पिछले सप्ताह शिल्पा शेट्टी का बयान दर्ज किया गया। जांच एजेंसी के अनुसार, शिल्पा शेट्टी ने अपने बयान में कहा कि उन्होंने बेस्ट डील टीवी से 4 करोड़ रुपए लिए, लेकिन यह रकम किसी निवेश या कारोबारी सौदे की नहीं थी, बल्कि उनकी सेलिब्रिटी फीस थी। शिल्पा शेट्टी ने जांचकर्ताओं से कहा कि मैं बेस्ट डील टीवी की डायरेक्टर जरूर थी, लेकिन जिन 4 करोड़ रुपए की बात हो रही है, वो मैंने कंपनी के प्रचार और विज्ञापन के लिए बतौर सेलिब्रिटी लिए थे। मैंने उस प्लेटफॉर्म पर एक विज्ञापन अभियान में हिस्सा लिया था, जिसके एवज में मुझे भुगतान किया गया। मुंबई पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि शिल्पा शेट्टी ने कंपनी से जनवरी 2016 में अपने डायरेक्टर पद से इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, जिस कंपनी में वे डायरेक्टर थीं, उसी से पैसे लेने का मामला अब जांच के दायरे में है। यह सही है या गलत, यह अभी सब्जेक्ट टू इंटरप्रिटेशन है। अधिकारी ने आगे कहा कि जांच के दौरान कंपनी से जुड़े दस्तावेजों की पड़ताल में एक और अहम जानकारी सामने आई है। शुरुआती चरण में इस कंपनी में बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार भी इक्विटी होल्डर रह चुके हैं। हालांकि, अधिकारी ने यह भी स्पष्ट किया कि इस मामले में अक्षय कुमार का कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं पाया गया है। अक्षय कुमार ने कभी भी कंपनी की किसी बोर्ड मीटिंग में हिस्सा नहीं लिया और न ही वे कंपनी के रोजमर्रा के कार्यों से जुड़े थे। बता दें कि शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा पर व्यवसायी दीपक कोठारी ने धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया था। कोठारी का दावा है कि दंपति ने मिलकर उनका पैसा व्यवसाय में विस्तार करने के लिए कर्ज के तौर पर लिया था, लेकिन टैक्स को लेकर दोनों ने इसे निवेश के तौर पर दिखाने के लिए कहा। कोठारी ने शिकायत में यह भी कहा कि शिल्पा ने उनसे वादा किया था कि वह ब्याज की रकम भी टाइम पर लौटाएंगी, लेकिन पैसे वापस करने के समय शिल्पा ने कंपनी के डायरेक्टर पद से इस्तीफा दे दिया। एक्ट्रेस ने व्यवसाय में विस्तार के नाम पर पैसे लिए, लेकिन अपने निजी चीजों में खर्च कर दिए।

अश्लीलता वाली फिल्मों की मंजूरी पर जावेद अख्तर ने उठाया सवाल

दोहरे अर्थ वाले गानों के बारे में भी की बात

गीतकार जावेद अख्तर ने फिल्मों की सेंसरशिप पर अपनी राय रखी है। उन्होंने दोहरे अर्थ वाले गानों के बारे में भी बात की है। आइए जानते हैं उनके विचार। मशहूर गीतकार और पटकथा लेखक जावेद अख्तर अक्सर अपने बयानों को लेकर सुर्खियों में रहते हैं। हाल ही में उन्होंने फिल्मों की सेंसरशिप पर बात रखी है। उन्होंने इस बात पर निराशा जताई है कि समाज की वास्तविकता को दर्शाने वाली फिल्मों को भारत में सेंसरशिप का सामना करना पड़ता है, जबकि अश्लीलता से भरपूर फिल्मों को मंजूरी मिल जाती है।

अश्लील फिल्मों को मिलती है मंजूरी

शुक्रवार को एक कार्यक्रम में बोलते हुए, अख्तर ने कहा कि खराब दर्शक ही एक खराब फिल्म को सफल बनाते हैं। अनंतरंग 2025 के प्रोग्राम में बोलते हुए उन्होंने कहा इस देश में, सच्चाई यह है कि अश्लीलता को (फिल्म नियामक संस्थाओं से) मंजूरी मिल जाती है। उन्हें पता ही नहीं है कि ये गलत मूल्य हैं, एक पुरुषवादी दृष्टिकोण है जो महिलाओं को अपमानित करता है। जो चीजें समाज को आईना दिखाती हैं, उन्हें मंजूरी नहीं मिलती।

फिल्में समाज की खिड़की हैं

जावेद अख्तर ने कहा फिल्म समाज की एक खिड़की होती है, जिससे आप झांकते हैं, फिर खिड़की बंद कर देते हैं, लेकिन खिड़की बंद करने से जो हो रहा है, वह ठीक नहीं हो जाएगा। उन्होंने कहा पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य की वजह से ही ऐसी फिल्में बन रही हैं। अगर पुरुषों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर हो जाए, तो ऐसी फिल्में नहीं बनेंगी। अगर बन भी जाएंगी तो (सिनेमाघरों में) नहीं चलेंगी।

साभार एजेंसी

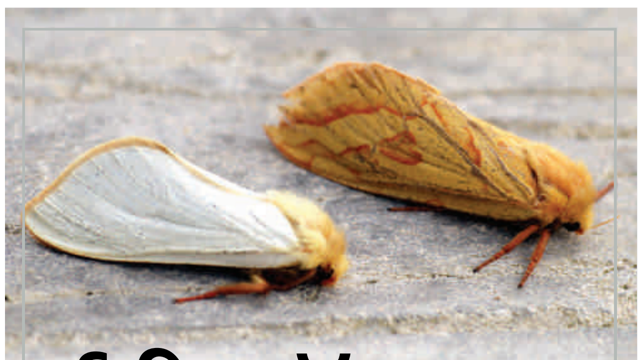

ईरी मॉथ : यह है दुनिया का सबसे बड़ा पतंगा

ब्राजील में पाए जाने वाले इस पतंगे को दुनिया में सबसे बड़े कीट का दर्जा प्राप्त है। इसे ईरी मॉथ, ग्रेट ऑवलेट माथ, घोस्ट मॉथ, वाइट व्हिच, ग्रेट ग्रे विच जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। पतंगों की दुनिया में इसके पंख सबसे लंबे होते हैं, जिनक आकार 30 सेंटीमीटर तक होता है। हालांकि हरक्यूलिस माथ और एटलस माथ के पंखों का क्षेत्रफल ज्यादा होता है।

जीवन सिर्फ दो हफ्तों का

इसके पंखों पर बने विशिष्ट आकार के पैटर्न इसे ट्रॉपिकल जंगलों में पेड़ों के बीच छिपने में मदद करते हैं। यह इतना बड़ा पतंगा भी शिकारियों की नजर से बचा रहता है। इसके इसी छद्मावरण के कारण इसे देखना बड़ा मुश्किल होता है। पंखों का रंग क्रीमी वाइट या हल्का भूरा होता है, जिन पर कई बादामी और काली धारियां जिगजैग पैटर्न बनाती हैं। नर में ये पैटर्न ज्यादा स्पष्ट होते हैं। उनका जीवन काल एक-दो सप्ताह तक ही होता है।

पेड़ों की पत्तियों पर देती है अंडे

इनकी मादाएं रबर के पेड़ और केसिया जैसे पेड़ों की पत्तियों पर अपने अंडे देती हैं, जिनसे निकलने वाले लार्वा इन्हीं की पत्तियों को खाकर बड़े होते हैं। ये युवा बन प्यूपा बनाते हैं। ये पतंगे ऊरग्वे से लेकर मेक्सिको और कभी-कभी टैक्सास तक पहुंच जाते हैं।

सांस्कृतिक मान्यताएं

दक्षिण अमेरिका की कई संस्कृतियों में यह मान्यता है कि यह पतंगे छिपी हुई अदृश्य दुनिया के संदेशवाहक हैं। वहां के लोगों का मानना है कि मृत लोगों की आत्माओं को ये अपने विशाल पंखों पर धारण करती है।

रोमांच का दूसरा नाम मसाई मारा

केन्या का मसाई मारा राष्ट्रीय उद्यान जैव विविधता तथा तरह-तरह के जीव-जंतुओं के लिए दुनिया भर में मशहूर है। रोमांचक अनुभवों का शौक रखने वाले पर्यटक यहां तम्बुओं में रात बिताते हैं। रात में करीब ही लक्कड़बग्घों के गुर्राने की आवाजें सुनाई पड़ती हैं तो दरियाई घोड़े तम्बुओं को सूंघ कर आगे बढ़ जाते हैं। कहीं न कहीं से रह-रह कर शेर की दहाड़ भी कानों में पड़ती रहती है। इस जंगल में हाथियों, जंगली भैंसों तथा चीतों की भी कोई कमी नहीं है।

रोमांच के शौकीनों के लिए मसाई मारा किसी स्वर्ग से कम नहीं है। सुबह सूरज की पहली किरणों के साथ अफ्रीका के कुछ सर्वाधिक खूबसूरत नजारे मसाई मारा में नजर आने लगते हैं। पर्यटन केन्या की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जिसके बाद फूलों, कॉफी तथा चाय के निर्यात से होने वाली आय है। द्दकेन्या में पर्यटन उद्योग हाल के दिनों में एक बार फिर अपने पैरों पर खड़ा होने लगा है, जब 2008 में केन्या में मची उथल-पुथल तथा खून-खराबे ने यहां सफारी पर्यटन को भारी नुक्सान पहुंचाया था।

पहली बार मसाई मारा आने वाले लोग इसके अनोखेपन से अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाते हैं। करीब स्थित तंजानिया के सैरेंगेटी से बेशक ग्नू (हिरण की प्रजाति के जानवर) के झुंड इन दिनों यहां नहीं पहुंच रहे हों, फिर भी यह राष्ट्रीय उद्यान अनेक जानवरों की तस्वीरों से भरी किसी सुंदर पुस्तक जैसा प्रतीत होता है। जो लोग यहां करीब 30 साल पहले आ चुके हैं, वे याद कर सकते हैं कि तब यहां पहुंचने के लिए राजधानी नैरोबी से कार में 250 किलोमीटर का सफर तय करके पहुंचना पड़ता था परंतु अब सीधे हवाई जहाज में यहां पहुंचा जा सकता है।

पहले की तुलना में वे यहां कई अंतर देख सकते हैं। मसाई मारा तक जाने वाले रास्ते के दोनों तरफ अब बाड़ों में घिरे गेहूं के खेत तथा पालतु पशुओं के झुंड दिखाई देते हैं। अब यहां पहले की तुलना में जानवर भी कहीं कम हैं। केन्या में बढ़ती जनसंख्या का दबाव अब जंगलों तक पहुंच चुका है। 1980 से अब तक केन्या की जनसंख्या 150 प्रतिशत बढ़ कर 4 करोड़ 10 लाख तक पहुंच चुकी है। लोगों को रहने के लिए स्थान भी चाहिए और भोजन भी, जिसका विपरीत असर जंगलों और उनमें रहने वाले जीवों पर साफ नजर आता है। केन्या के जंगलों में खूब सारे जानवर हैं तो कुछ शिकारी भी हैं परंतु अभी यहां जानवरों का शिकार नियंत्रण में है। वैसे भी मसाई लड़ाके (मूल निवासी या यहां रहने वाले आदिवासी) प्राचीन काल से भाले से शेर का शिकार करके अपनी मर्दानगी साबित करते आए हैं। केन्या की जैव विविधता पर नजर रखने वाले कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि मसाई मारा राष्ट्रीय उद्यान में गैर-कानूनी रूप से चरने वाले पशुओं की संख्या में लगातार इजाफा हुआ है। 1977 से अब तक यह संख्या 10 गुणा बढ़ चुकी है। दूसरी तरफ वन्य जीवों की संख्या में दो-तिहाई कमी आई है। इस संबंध में जारी पहले दीर्घकालीन अध्ययन के नतीजों पर कई लोगों ने आपत्ति भी जाहिर की है परंतु जानकारों का कहना है कि नतीजों में दिख रहे नकारात्मक रुझानों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और पिछले 35 सालों के दौरान सम्पूर्ण मसाई क्षेत्र में जंगली जानवरों की संख्या में 80 प्रतिशत तक कमी आई है। काफी सारा जंगली इलाका किसानों को पशु चराने तथा खेती के लिए सौंप दिया गया है। वे जंगल जिनमें मूल मसाई लोग खेती किया करते थे तथा जो उनके संरक्षण में रहते थे, अब तेजी से काटे जा रहे हैं।

केन्या के जंगलों के समक्ष इन चुनौतियों तथा चिंताओं के बावजूद भी मसाई मारा की यात्रा एक अविस्मरणीय अनुभव बन जाती है। जंगल में रात गुजारने के लिए अनेक बंदोबस्त हैं परंतु उनमें से अधिकतर काफी महंगे हैं। वहां लॉज तथा तम्बू भी मिल जाते हैं और वे भी विभिन्न तरह के। यहां पर्यटकों के लिए कई कैम्प लगे रहते हैं। ऐसे ही एक मारा बुश कैम्प में हर तम्बू में एक काऊबैल लगाई गई है ताकि किसी जानवर के करीब आने पर अलार्म बज जाए क्योंकि इस कैम्प के चारों ओर कोई बाड़ नहीं लगी है। इससे पहले कि आप यहां किसी रेस्तरां या कैम्प फायर तक जाने के लिए निकलें, अपने साथ भाले से लैस किसी स्थानीय मसाई लड़ाके को ले जाना न भूलें।

जमीन पर रेंग कर चलने वाली पर्च मछली

'मछली जल की रानी है, जीवन उसका पानी है,हाथ लगाओ डर जाएगी, बाहर निकालो मर जाएगी' मछलियों के बारे में भले ही आपने बचपन से ही ये बातें सुनी हों अर्थात यह कहा जाता रहा है कि बिना जल के मछली के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती लेकिन 'पर्च' नामक मछली की एक प्रजाति ऐसी भी है, जो न सिर्फ पानी से बाहर भी 12 घंटे तक जीवित रह सकती है बल्कि जमीन पर रेंग कर चल भी सकती है। अन्य प्रकार की मछलियों को पक्षी भले ही न छोड़ें पर पर्च मछली को पक्षी नहीं खाते।

कारण है पर्च में पाए जाने वाले कांटे। आपको यह जानकर भी बड़ी हैरानी होगी कि इस मछली को सबसे पहले किसी जलस्रोत में नहीं बल्कि खजूर के एक पेड़ पर देखा गया था, यही वजह है कि इसे 'आरोही' मछली भी कहा जाता है। पूरे भारतीय प्रायद्वीप में पाई जाने वाली पर्च मछली ताजे पानी की मछली है जो हमेशा एक बेहतर घर की तलाश में रहती है। इसके शरीर में एक विशेष अंग होता है जिसके जरिए यह पानी के बाहर भी सांस ले पाती है। इसके गलफड़े अच्छी तरह विकसित नहीं होते। यही वजह है कि इसे सांस लेने के लिए बार-बार पानी की सतह पर आना पड़ता है। यदि पानी स्थिर हो जाए या फिर ज्यादा दूषित हो जाए तो यह पानी से बाहर आकर नए घर की तलाश शुरू कर देती है। पानी से बाहर यह करीब 12 घंटे तक जीवित रह सकती है, बशर्ते कि इसके गलफड़े तब तक गीले रहें। पानी से बाहर सांस लेने की अपनी अद्भुत क्षमता के कारण ही यह मछली वापस अपना रास्ता खोज लेती है।

हवाओं का सबसे खतरनाक स्वरूप हरीकेन या टायफून

किसी न्यूज चैनल पर या मूवी में जब हवाओं का एक स्पिन करता हुआ गोला तेजी से पेड़, कार, जानवरों सबको खाते हुए दिखता है तो लगता है जैसे प्रकृति गुस्से से लाल-पीली नहीं बल्कि काली और भूरी हो रही है। हवा और पानी के रौद्र रूप का ये भी एक उदाहरण है। ये वो तूफान हैं जो अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को तोड़-मरोड़ कर खत्म कर देते हैं। इन तूफानों के समय हवा की रफ्तार 150 मील प्रति घंटा और इससे कहीं ज्यादा तक हो सकती है। जानो इन खास तूफानी रूपों के बारे में और समझो इनके पीछे का विज्ञान।

किसी चैनल पर या मूवी तुमने भी हवाओं का एक स्पिन करता हुआ गोला तेजी से पेड़, कार, जानवरों सबको खाते हुए देखा होगा। इन्हें तुमने कई बार डिस्कवरी चैनल पर या किसी हॉलीवुड मूवी में भी देखा होगा। जमीन के साथ-साथ ये तूफानी बादलों की सतह से भी जुड़े हुए मालूम होते हैं। टॉरनेडो के अलावा इसे सायक्लोन या ट्विस्टर भी कहा जाता है। ये सारी चीजों को ट्विस्ट करता हुआ जो उठता है। दूर से देखो तो ऐसा लगता है मानो बादल से किसी ने एक बड़े से कपड़े को जमीन पर खड़े किसी हाथ में में पकड़ा दिया हो और बादल और जमीन दोनों मिलकर उस कपड़े को निचोड़ रहे हों। वहीं सायक्लोन नाम का उपयोग मेटरोलॉजी यानी मौसम विज्ञान में ज्यादा बड़े तूफान के मामले में किया जाता है। हिंदी में ये चक्रवात या बवंडर कहलाते हैं। यूं टॉरनेडो नाम स्पेनिश शब्द 'ट्रोनाडा'' से बना है जिसका मतलब है 'थंडरस्ट्रॉम।'' टॉरनेडो अलग-अलग साइज के हो सकते हैं पर इनका आकार तुम्हारी कैमेस्ट्री लैब में मौजूद फनल के जैसा होता है। जमीन की तरफ से संकरा और आसमान की ओर खुला हुआ। ये धूल का बड़ा सा गुबार होते हैं। सायक्लोन उन जगहों पर ज्यादा पैदा होते हैं जो जगहें इक्वेटर से पास हैं और ध्रुवों की तरफ यानी इक्वेटर से दूर जगहों पर ये कम पाए जाते हैं।

हमारे देश में ये बंगाल की खाड़ी के पास वाले इलाकों में ज्यादा दिखाई देते हैं। वैसे अंटार्कटिका के अलावा ये लगभग हर कॉन्टिनेंट में मिलते हैं। इनकी सबसे ज्यादा संख्या पाई जाती है अमेरिका के 'टॉरनेडो ऐली'' रीजन में। वैसे उत्तरी अमेरिका में इनका होना बहुत आम है। इनके आने का पता लगाने के लिए 'पल्स डॉप्लर राडार'' की मदद ली जाती है और इन्हें नापने के लिए कई तरह की फ्यूजिटा या टॉरो जैसी स्केल्स का उपयोग किया जाता है।

सामान्यत: किसी एक तूफान से एक से ज्यादा टॉरनेडो भी पैदा हो सकते हैं। ऐसे में इन्हें टॉरनेडो फैमेली भी कहा जाता है। यही नहीं जिस जगह टॉरनेडो बन रहे हैं उस जगह के नेचर के हिसाब से इनका रंग भी अलग-अलग हो सकता है। जैसे पानी के ऊपर उठने वाले टॉरनेडो सफेद या नीले हो सकते हैं तो कभी मिट्टी पर उठने के कारण ये लाल रंग के भी हो सकते हैं।

है यह भी चक्रवात या सायक्लोन का ही एक रूप लेकिन इसका रिजल्ट भारी बारिश और बाढ़ वाले तूफान के रूप में दिखाई देता है। यानी ये पानी का खतरनाक रूप हैं। इन्हें भी तुमने कई हॉलीवुड मूवीज में देखा होगा। ये ट्रॉपिकल सायक्लोन कहलाते हैं जो कि मैक्सिको की खाड़ी, कैरेबियन सी, पूर्वी प्रशांत महासागर यानी ईस्टर्न पेसिफिक ओशियन तथा दक्षिणी अटलांटिक ओशियन जैसी जगहों पर जन्म लेते हैं। समुद्र की सतह पर मौजूद भाप से ये एनर्जी पाते हैं। इससे ही फिर भयानक बारिश वाले बादल आकार लेते हैं। इन्हें हरीकेन और टायफून के अलावा ट्रॉपिकल स्टॉर्म, ट्रॉपिकल डिप्रेशन आदि नामों से भी जाना जाता है। खास बात यह कि जमीन पर आने के बाद ये कमजोर पड़ जाते हैं क्योंकि उस समय ये अपने एनर्जी के सोर्स से यानी समुद्र की सतह से अलग होने लगते हैं। इनके बनते समय हवा पानी की सतह से ऊपर उठने की बजाय पानी के भीतर जाकर गोल, घुमावदार रूप ले लेती है।

इससे पानी पर एक खाली जगह बन जाती है जिसे 'आई'' यानी आंख कहा जाता है। दुनियाभर में ये तूफान आमतौर पर गरमी के मौसम के विदा लेते समय पैदा होते हैं जब समुद्र की सतह का तापमान सबसे ज्यादा होता है और भाप तेजी से बनती है। हालांकि, इसके अलावा भी अलग-अलग जगह इनका अलग सीजन हो सकता है। जमीन पर मौजूद डॉप्लर वेदर राडार के अलावा वेदर सैटेलाइट के जरिए भी इनके आने की सूचना मिल सकती है।

इनका टायफून नाम अरबी भाषा के 'तूफान'' शब्द से लिया गया है जिसे हिंदी और उर्दू में भी उपयोग में लाया जाता है। तूफान शब्द असल में ग्रीक मायथोलॉजी में तूफान के एक राक्षस 'टायफोन'' से भी जुड़ता है। वहीं हरीकेन शब्द स्पेनिश भाषा से आया है और तूफानों के देवता 'हुराकान'' को दर्शाता है। सबसे मजेदार बात यह है कि इन तूफानों की पहचान के लिए इनको बकायदा नाम दिए जाते हैं।